विज्ञापन.

श्रीमंतो धर्माचार्य धर्मशील सद्गुरुभ्योनमः अहो भव्यलोको नमस्कार करो उस आदि पुरुषोत्तम ऋषभ सर्वज्ञकूं की जिसने धर्म अर्थ कांम और मोक्षका रस्ता बतलाया और प्रजा सुखसे निर्वाह करसके इसवास्ते अनेक कलाकौशल पैदा करके प्रजाकूं सिखलाइ जगतमें कुंभार सुथार लुहारादिकोकी कारीगरी देखके निश्चे अनुमांन होताहे के यह विद्यासरूमें उसीने सिखलाईहे वह देहधारी और स्वयंबुद्ध ज्ञानीथा निराकार ईश्वर विद्या उपदेशक नही होसकता इय बात तो न्यायसे और प्रतक्ष प्रमांणासेंही सिद्धहे हां अलबत्तें बुद्धि तो मनुष्योकी उसमें सहाय देणेवाली जरूरहे जेसें विद्यांमान अंग्रेजोने एक २ वस्तूका होता हुवा कार्य देखके रेल तार बिजली छापखाणे आदि अनेक कल पेदा करली खिचडी पकती हुइ हंडीकी बाफसे ढकणी उछलतीकूं देख अग्नि और पाणी और वायूके योगसे एसी कुदरत होतीहे इतनी बातकूं विचारतें बाफकूं रोकणेका ज्यादा प्रयत्न बढाया तो अनेक किस्मके कार्य द्रव्यानुयोगसें करते चले जातेहे अगर इस व॥

ज्यादा सुक्ष्मबुद्धिसें विचारोगे तो इह कार्यभी उस आदि पुरषकी बनाइ शिल्पकलाउमेंहीहे जो कोइ कहेगा की तुमारे आर्यावर्त्तमें यह विद्या कब थी जूठी बातकूं हम केसें माने उत्तर हे महाशय हमारा देश सर्व विद्याका उर धनका भंमारथा देखो हमारा कोणिक असोक चंद्राजाका चरित्र उसने नव खंमका चक्रवर्त्ति बणणेकुं दिग्विजय करणेकूं सातरत्न लोहमइ बणायेथे सो चक्र तो आकासमें स्वत चलताथा इत्यादि इस कलसे काम लेणेकी कारीगरी उस वखत कायमथी जिसकों अढाइ हजार वर्षही भयाहे गजसिंह कुमार चरित्रमे एक सुथारने एसा मोर बणायाथा कलका उसपर बेठणेसे सइकमो योजन गजसिंह कुमार फिराथा देखो वसुदेव हिंम उससें वसुदेवजीकूं बुलाणे राजाने कलमइ हाथी बणाके भेजाथा देखणेमें हाथीकी तरे उसके पेटमें आदमी लोक बेठेथे इत्यादिक कलकी कारीगरी आर्यावर्त्तमेथी विमानभी आकाशमे चलतेथे पद्मचरित्रसे सावितहे जबसे विद्याका पठन पाठन कमपमा तबसें बुद्धिभी मंद होते गई लमाइ दंगोमे वहोत कामिल ।ल ी नष्ट भ्रष्ट होगये उर विलायतोवालेभी

लेगये इसवास्ते यह ग्रंथको जो मेने संग्रह क-
राहे सो च्यारोही वर्णके मनुष्योके लिये हित-
कारीहे कारण हरकिसमका काम जो ज्ञानयुक्त
बुद्धिसें विचारके करणेमें आताहे तो अंतमे उ-
सका परमार्थभी ठीक हासिल होताहे इसमे
नोकरी राज्य सेवा युद्ध मातापिता आदिकोसें
वर्त्तावा रुजगार सात प्रकारकी आजिविका
व्याज वगेरे सब करके पूरा नफा करके शंसा-
रमे धनवान इज्जतदार उंर बडा चतुर बजकर
अंतमें जीव परमपद साध सकताहे एसा ग्रंथ
किसीने नहीं छापाहे ज्यादा क्या तारीफ लिखूं
इस ग्रंथकूं पढके जो अमल करेगा तो निश्चे
वह मनुष्य बतोर बालस्टरोके माना जायगा
यह ग्रंथ साक्षात्कानून धर्मशास्त्रहे इस अर्थोके
प्रकाशक अर्हद् परमेश्वरहे जैनधर्मके कायदा
कानून कइएक नमुनेकी वानगी लोकहितार्थ
जाहिराकीहे अव्वलसें लेकर आखरीतक पढे
विगर तृप्तिभी न होगी गृहस्थके धर्म कायदेके
श्राद्धदिनकर आचारदिनकर विवेक विलाश
श्राद्धप्रज्ञप्ती श्राद्धकौमुदी आदि अनेक ग्रंथ बडे
विस्तारके संस्कृत प्राकृत भाषामें बणे हुयेहे
लेकिन् भाषाभिलाषी पुरषोके लियेही मेरा ए-

रिश्रमहे जैनधर्ममें सर्व तरेके ग्रंथ मोजूद
ज्योतिषवैद्यकादिक परंतु जैनलोक उसकी खोज
नही करतेहे उर जो कोइ खोज करे तो उसकं
मदत नही मिलतीहें मेने यह ग्रंथ मंबईमें उ
पाणे गया तब श्रीमान् सावणसुखा बीकानेर
वास्तव्य सेठ जुहारमलजी समेर मलजीके मु-
नीम पारख माणकचंदजीने मुझे कुछ एव
आश्रय दियाहे जिसके सहायसें यह मेरा
परिश्रम सफल भयाहे इस ग्रंथकी किमत ब-
होत खरचा लगणेपरभी बहोत थोमी रख्कीहें
१॥ रुपा देढ जिल्द बंधी समेत ॥ मिलणेका
ठिकाणा बीकानेर राजपूताणा बमा उपासरा उ-
पाध्याय युक्तिवारिधिः श्रीरामलालजी गणिः
के शिष्य पांक्षेमचंद पेमचंद अमरचंद प्रकाशक
विद्याशाला ॥

अथ

॥ श्री श्रावक व्यवहारालंकारः ॥

॥ श्रीऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योनमः ॥ श्रीवाण्यायैनमः ॥ अथश्रावकव्यवहारालंकार ग्रंथोयंलोकभाषयालिख्यते ॥ सर्वसंपत्करीयासा वाणीकलुषनासिनी ऋद्धिसिद्धिप्रदानित्यं वंदेजि नसुखोद्भवं ॥ १ ॥ धर्मशीलात्सयालब्धा भवाब्ध्यो च्छेदकारणीं लोकलोकोत्तरोशुद्धिं नौमिनित्यं स- सद्गुरुं ॥२॥ व्यवहारअलंकारं श्रावकस्यसुखायवै क्रीयते ऋद्धिसारेण श्राद्धग्रंथानुसारतः ॥ ३ ॥

अब-पहले गृहस्थ श्रावक च्यार घडी पि- छली रात रहनेसें उठके मनमें नवकार मंत्रका जाप करता हुवा जिधरका स्वर नाकका चलता होय वोही पाव अपणे बिछोनेसें नीचे जमीनपर रखके फेर जतनके साथ निर्जीव शुद्ध जमीनपर काय चिंतासे निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहनकर सारे बदनपर हाथ फेरकर आठ पांखडीका कमल अपने नाभिचक्रमें मनसे विचारकर एक- सो आठ वेर अथवा ज्यादा मनमेही नवकार मंत्रका जाप करे जिसमें संसार संबंधी कार्य-

सिद्धिके वास्ते ॐ ऱ्हीं एसा वीज लगाकर पांचोही परमेष्टीका जाप जपे मुक्तिके वास्ते एसाही जापजपे फेर सामायकादिक ६ आवस्यक करे जिन मंदिरमें जाके विधीके साथ चैत्यवंदनादि करे इसका विस्तार चैत्यवंदनभाष्य श्राद्धदिनकरादिक ग्रंथसें जाणना फेर जतनके साथ जिनमूर्त्तिकी पूजा स्नान तिलकादिक करके द्रव्यभाव संयुक्त करे पूजाका विस्तार श्राद्धविधी पूजापंचाशकादि ग्रंथोसें जाणना फेर उपाश्रय जाके गुरुवंदन करके व्याख्यान सुणे पच्चखाण करे गुरुवंदनकीविधि गुरुवंदनभाष्यसें जाणना पच्चखाणका निर्णय आगारोका अर्थ पच्चखाण भाष्यसे जाणना गृहस्थकूं चाहीये पंम्ति जतीसें हमेसां धर्म सुणे ओरसीखे क्यूं के विद्या एसी अमोलख कामधेनुहे सो सबतरेके मनवंछित पूरणे समर्थ हे ऊपर कहे मुजब धर्मक्रिया किया पीछे राजा अपणे राज्यसभामें जावे मंत्री अपणे सुप्रत न्यायसभाका काम देखे व्यापारीवणिक अपणे २ उद्यमका प्रयास करे धर्मकूं विरोध नही आवे इस मुजब धन पैदा करे जैसें राजा धनवानका ओर गरीवका अपने स्वातंत्र्यवाले मान्य पुरुषका ओर सामान्य प्रजा-

का उत्तमका उंर नीचका पूर्वापर जुवानकूं विचारकर कसूरदारका कसूर जाणकर मध्यस्थ भावसें इनसाफ करें ज्यादे खातरी न्यायपक्षमें नही करे इसपर एसा दृष्टांतहे कल्याण कटकपुर नगरमें बमा न्यायवान एसा यशोवर्मानामे राजा राज्य करताथा उस राजानें राज मेहेलके नीचे गरीब लोकोंकी फरियाद सुननेको न्याय घंटा बंधवाई एक समय राजाकी कुलदेवी राजाके न्यायकी परिक्षा करणेकूं तुरत जणी हुई गायका रूप धारण कर बच्चे समेत राज रास्तेमें बेठ गई इतनेमें राजाका लमका पूरे जोरसें घोमा दोमाता हुवा आतेके फेटमें आणेसें बछमा मारा गया तब वो गाय बमे शब्दसें पुकार करती हुई रोती २ आंसू वरसाणे लगी तब किसी आदमीने गायसें कहा इहांतो जो होणहारथा सो होगया अगर इनसाफ कराये चाहतीहे तो राजाकी न्यायघंटा बजाकर फरीयाद कर तब वह गाय उसी मुजब जायकर सींगोंसें घंटा बजाणे लगी राजा उस वखत भोजन करताथा घंटाकी अवाज सुणकर पूछा ये फरीयादी कोण हे नोकरोने देखकर कहा

बाहिर आया तब गइयासें पूछणे लगा तुझें किसीने सतायाहे क्या वो सताणेवाला कहांहे मुझे बतला तब गऊ आगे चली राजा उनके पिछाडी चला गऊनें माराहुवा बछडा दिखलाया राजा तब लोकोंसें पूछणे लगा ये बछडेकूं जिसनें माराहे वो हमारे सामने आवे जब कोइभी आदमी हाजर नहीं भया तब राजाने नियम कीया जब कसूरवार जाहिर होगा तभी अन्न जल लूंगा राजाकूं लंघन भया तब राजाका लडका हाथ जोड हाजर हुवा कहणे लगा हे स्वामी गुनहगार में हुं इसवास्तेही चाणक्य नीतिमें लिखाहे यतः विनयं राजपुत्रेभ्यः पंडितेभ्यः सुभाषितं ॥ अनृतं द्यूतकारेभ्यः स्त्रीभ्यःशिक्षेतकैतवं ॥ १ ॥ अर्थ—विनय याने अदबका कुरब कायदा सीखणा होय तो राजोंके कुमरोंसें सीखणा वो लक्ष्मीपूत्र छोटे उंर वडे सबोंके संग वरतावेकी नीतीसें चलतेहे कुलहीन; आदमी हुकमत उंर पेसेके नसेमें किसीकूं कुछ नही नमझतेहे काग जो सिंहासणपरभी वैठ जाय तो क्या हंसके गुण जो क्षीरनीर जुदे करणेके हे वो कव आसकताहे उंर सभामें वोलणेके सुभापित सीखणा होय तो

पंन्निनोंसें सीखणा अनृत याने झूठ चोरी हरी-
फाइ सीखणा होय तो जुवारीसें सीखणा उस-
में ये सब अपलक्षण होते हे उर कैतव याने
कपटाइ सीखणा होय तो उरतोसें सीखणा
स्त्रीका जन्महीं मायावन्तहे उस कुमरनें राजासें
सब हकीगत कह सुणाई हे पिताजी जेसा
मेरा कसूरहे वेसीही मुझे सजा होणी चाहिये
तब राजा कानूनके जांणकार स्मृतियोंके पढे
ब्राह्मणोसें राजाने पूछा तब उन ब्राह्मणोनें कहा
हे राजन् राजके योग्य तेरे ये एकही लडकाहे
इसके वास्ते क्या सजा बतलावें तब राजा
बोला हे ब्राह्मणो किसका राज किसका लडका
मेंतो सबसें ज्यादा न्यायनीतिकूं समझताहुं
उर राजाउंका यही श्रेष्ठधर्महे सोही लिखाहे
दुर्जन जो बद आदमी प्रजाकूं कष्ट देणेवाला
उसकूं दंड करणा १ सत्जन याने गुणवंत उर
अछी चालचलणेवाले पुरषोंकी पूजा सत्कार
करणा २ न्यायसें खजानेका धन जमाकरणा ३
पक्षपात याने तरफदारी न करणा ४ शत्रु जो
राज्यके दुस्मन हे उनकूं जीतके प्रजाकी
हमेसां रक्षा करणी ५ ये राजा लोकोंकूं नित्य
करणे योग्य पंचमहायज्ञ जांणना सोमनीतिमेंभी

कहाहे राजाउंको चाहिये अपणे लमकेने कोइ कसूर कीया होय तो अपराध माफक दंम करणा इसवास्ते राजपुत्रकी कोइ खातरी नही राखकर शास्त्रोक्त दंम होय सो कहो तबजी पंमतोनें कुबजी नही बतलाया तब राजा विचारणे लगा जो जीव डुसरे जीवकूं हकनाहक डुख देवे तो जिस मुजब उस जीवने डुसरे जीवकूं कष्ट पोहचाया होवे वेसाही कष्ट उस गरीब फरीयादीके बदलेमें कसूरदारकूं देणा यही राजाउंका न्यायहे उंर किसीने उपगार कीया होय तो उसका गुण नही जूलकर उसका वदला उतारणा ये सब सत्पुरषोका धर्म हे उंर राजाउंकों चाहीये अनाथ दीन डुखी अबोलकी ज्यादा रक्षा करे क्षत्रीलोकोकी एसी नीतिहे की जो डुस्मन शस्त्र मालके नम्र होजावे उसकूं मारे नही जो शत्रु संग्राममें जाग जावे उस जागतेकूं मारे नही जो शत्रु मूंमे घास तिणखा माल लेवे एसे पशुसंज्ञक शत्रुकूं मारे नही जिसने किसीकाजी विगाम नहि कियाहे एसे निरपराधीकूंजी मारे नही जेसें राजाकी प्रजा मनुष्यहे उससें अधिक राजाकी प्रजा डुपग्गे उंर चोपग्गे वगेरह जिनावरहे इस

मारणे योग्य नही कारण भागते शत्रूकूं राजपूत मारे नही तो भागते हुये जांनवरकूं केसें मारे केइ एक मांसाहारी अपणे स्वारथके वास्ते एसा कहतेहे पशुउंमें अविनासी आत्मा नही एसें कहणेवाले महामुर्ख निर्दइ उर मांसके लालचीहे ज्यांनवरका मायना सोचेतो एसा अर्थ जाहिरा मालम देताहे ज्यांन कहते जीव वर मायने प्रधान याने अच्छा जीव तो फेर अविनासी आत्मा पशुउंकी नही इसबातमें क्या प्रमाणहे खून मनुष्योकेभी शस्त्र लगणेसें निकलताहे उर खून पशुउंकेभी निकलताहे शस्त्रकी चोट लगणेसे आदमी पुकार करताहे वेसा ही जांनवर करताहे मारके डरसें मनुष्य भागताहे वेसेंही मारके डरसें पशूभी भागताहे अपणे शंतानकी रक्षा मनुष्यभी करताहे वेसेही पशुभी करतेहे मरणेपर मनुष्यभी पुत्रादिकके वियोगसें रोतेहे एसेंही पशुभी रोतेहें इत्यादिक अनेक प्रत्यक्ष प्रमाणसें मनुष्य जेसीही आत्मा पशुउंमेंहे अपणे २ कर्मोके वश चोराशी लक्षयोनीमें जीव भटकताहे मरणा कोइभी नही चाहता सर्व मतोंमे वही धर्म श्रेष्टहे की जिसमें सब जीवोंकी दयाहे देखो गीता अहिंसा

परमोधर्मः फेर कृष्ण द्वैपायन व्यासने अठारोंही पुराणोंका एसा सार निकालकर कहाहे यत अष्टादशपुराणेषु व्यासस्यवचनद्वयं परोपकाराय पुण्याय पापायपरपीड्नं ॥ १ ॥ अर्थ—तो प्रगटहीहे तुलसीदास भक्तिमार्गवालेने कहाहे ॥

दुहा—दयाधर्मकोमूलहे नरकमूलअभिमांन॥
तुलसीदयानछोडिये जबलगघटमेंप्राण ॥१॥
तुलसीहायगरीबकी कभीननिरफलजाय ॥
मरे ढागकेचामसें लोहभस्महोजाय ॥ २ ॥

मनुस्मृतिमेंभी आठ कसाइ लिखेहे जीवोंकों मारणेवाला बताणेवाला मांस लाणेवाला मांस वेचणेवाला मांस खरीदणेवाला रांधणेवाला पुरसणेवाला अेर खाणेवाला मांसका अर्थभी मनुने एसाही कीयाहे मांस अर्थात् जिसको में खाताहुं सो कहता वो जीव मुझें खायगा मांस खाणेवाला कठोर अेर क्रूर मिजाजवाला होजाताहे प्रतक्ष्य प्रमांणसें साबितहे मांस खाणेवाले जितने जांनवरहे सो सबोकों देखा जावे तो सबके सब बडे निर्घृण अेर कठोरहें वेसे घास अेर नाज फल फूल खानेवाले जांनवर दुष्टस्वभाववाले नही अेर बडे सीधे भोले होतेहे

एसाही मनुष्योंका अहवाल जांणना एसेंइ शेख सइयदनेंभी फारसी भाषाकी करीमा किताबमें लिखाहे की ज्यांनके मारणेवालोकों खुदा गुनाह माफ नही करेगा इत्यादिक अनेक ग्रंथोसें साबितहे के मांस तो विगर ज्यांनवर मारे होता नही अंर मारणेवाला गुनहगारहे जो श्रुति स्मृती पुरान कुरानके वचन सच्चेहें तब तो जो हाल उन ग्रंथोमें लिखाहे सो जांनवर मारणेवालोकों मांस भक्षीयोकों गुनाहकी सजा मिलेहीगी अंर ये शास्त्र वगेरह नही मांनते अंर एसा कहतेहे इसभव मीठा परभव किण दीठा उन लोकोनें परभव मांननेका एक प्रत्यक्ष प्रमाण देखणा जो पापपुन्यका फल नहीहे तो अंधा लूला लंगडा कोढी निर्धन खाणेकूं न मिलणा इयतो किस कारणसेहे अंर राजा सेठ साहूकार ऐशआरामी वगेरह अनेक सुखी जीव किस कारणसें देखणेमें आते हे ये प्रतक्ष प्रमाणसें पापपुन्यका फल जांणकर अठारे पापस्थानक छोडनेका उद्यम करणा लाचारी अंर पराधीनतासें करणा पडे तोभी पापके कामकूं पापसमझणा येभी धर्मकी जडहे केइयक मूर्ख एसा कहतेहे जबसें राजालोकोने दया

धर्मधार लीया तवसें सत्रुऊंसें संग्राम करणेकी शक्ति नही रहणेसें राज्य खो बेठतेहे ये कहणा मूर्ख मांसाहारीयोका हे राजा भरत ऋषभ देवके पूत्रसें लेकर विक्रमसंवत् वारेसे तक कुमारपाल सिद्धपुरपाटण प्रमुख अठारे देशके राजातक अनेक दयाधर्मी राजा असंख्यकालसें सूर्यवंसी चंद्रवंसी इस आर्यावर्त्तादि क्षेत्रोमें राज्य कर्त्ते भये थे शत्रुऊंके दलके तोमणेवाले हुये परिशिष्टपर्व्वादिक ग्रंथोका इतिहास [illegible]से मालम होगा परम जैनदयाधर्मी चेटक राजा विशाला नगरीका शरणागत पिंजर बिरुद धारणेवाला जिसका नाती अशोकचंद्र इन दोनोके लमाइसे एक क्रोम अस्सीलाख मनुष्य मारे गये राज्यनीति जवही प्रमांणहे सो अपराधीका निग्रह निरपराधीकी रक्षा करे मांस नही खाणेसें राज्य जाता हे उर खाणेसें रहताहे ये वात जूट हे मुसलमीन दिल्लीके बादस्याह राज्य क्यों खो बेठे टीपू सूलतान आदि तो मांसाहारीही थे ये तो निश्चे जांणना पृथ्वी सदा कुमारीहे अनेक पति हुये अनेक होंयगें वीरभोज्या वसूंधरा इति वचनात फेर एसाभीहे के एकसमय एसीभी आजातीहे सो सूखी-

रोसें कुछवण नही आता एकसमे कायरभी राजा वनबैठतेहे जेसें अकबरके वालपणेमे हेमचंद अग्रवाला वणिया बादस्याह दिल्लीका बनगयाथा ओर एकसमेका वो हालथा अर्जुनने महाभारत कीया एकसमे वोही अर्जुनसें कुछ नही बणपमा ॥

दुहा—समेंबमीबलवानहे पुरपनहीबलवान ॥
कावांलूंटीगोपिका वहअर्जुनवहबाण ॥ १ ॥

हमारी समजसें तो राज्य जाणेका एसा वरतावा मालम देताहे राजा प्रमादी विषयलंपट होकर अन्यायसें धन जमा करे भिक्षा मांगणेवालोंसें कर लेवे दुष्ट ओर विद्यारहित मूर्खोकों राजकाजका अधिकार सोंपें विद्यावान अकलवंत बुजरक पुरपोकी सल्लाह लेकर कांम नही करणेसें हर किसीका विश्वास करणेसें साम दाम दंड भेदसें च्यार प्रकारकी राजनीति नही जांणनेसें खजानेमें धन नहीं रहणेसें अपणे नोकरोकी कदरदानी नहि करणेसें देव गुरु धर्मकी अपमांनता करणेसें गरीबोकों सताणेसें वहोत मदिरा आदि नसेके पीणेसें इत्यादि कारण राज्य जाणेकेहें इत्यादि कारणोकों विचारकर रोजानें अपने अपराधी लस्केकूं

एसा हुकम दीया तूं इस राजरस्तेमें सोजा आप वो घोमा मंगाकर अपणे चाकरोंकों हुकम दीया तुम इस घोमेपर सवार होकर दोमाता हुवा इस लमकेके ऊपरसें लेजाउं रा जाका लमका विनयवानथा रस्तेमें सोगया लेकिन् नोकरोने एसा करणा मंजूर नही करा तब राजा घोमेपर आप असवार हुवा सर्व लोकोने बहोत मना कीया तोज्नी राजा उस गायका इनसाफ करणे घोमेकों [illegible] घोमा उठा इतनेमें राज्यकी अधिष्टाइका देवी लगामपकम फूलोंकी वरसात राजापर करी उंर कहा हे राजन् में तुह्मारी न्यायबुद्धिकी परीक्षा करी प्राणसेंज्नी प्यारा एसे लमकेकी स्वातरी नही करते हुये तेनें गरीबकी फरीयादी सुणके सच्चा न्याय कीया तूं धर्मराजा हे तूं वहोत कालतक निर्विघ्नपणे राज्यकर एसें न्यायकी युक्तिपर दृष्टांत कह्या अब जो राज्यके अधिकारी कामदार वो केसा होणा चाहिये जेसें अन्न-यकुमार चाणाक्य प्रधानकी तरे महाबुद्धिशाली राजाका उंर प्रजाका दोनोंका हित चाहणे-बाला एसा राज काज करे रुसपतखाके सच्चेकूं झूठा न करे जिस काममें धर्मकूं विरोध नही

आवे कहाहे के फकत राजाके घरमें फायदा करणेवाला कामदार प्रजाका दुस्मन होताहे ओर फकत प्रजाके घरमें फायदा करणेवाले मुत्सद्दीकूं राजा निकाल देताहे इसवास्ते दोनोकों फायदे-वंद प्रधान मिलणा मुसकिलहे वणिकप्रधान अ-थवा अश्वपतिकूं मंत्री पदमें स्थापन करणा कारण अश्वपति जातीवालोकूं राजन्यवंशता होणेसें सूरवीरता प्रमुख-राज्यधर्म अभ्याससें तुरत आताहे कारण बीजकी तासीर ओर सोबतका असर प्रायें रहताही हे दुसरे असपति लोकोमें वर्त्तमांन समयमें प्रायें व्यापारी होणेसें व्यापा-रमें नफे नुकसानकूं पहलेहीसें विशेषकरके देश क्षेत्र काल भावका पूर्वापर विचारके कारण बडे विचक्षण होतेहे व्यवहारमें कोमीकाभी मुला-यजा नही करतेहे किसी कविने कहाहे वाण्यो विणजन ओम्सी जो स्वर्गापुर जाय लेखा करता रांमसें टक्का पेसा खाय १ इसवास्ते जिसकूं नफे नुकसानका ख-याल हो मृत्युभापी शत्रुओसें सूरवीर संग्राम-सें नहिं हटनेवाला सर्वकला कुशल अभिमान-रहित राजाका भक्त प्रजारक्षक दया धर्म सर्वज्ञ वचनकी आस्तावाला राजाके अश्वपती जाती

वालाही मंत्री करणा ये सूरता तथा व्यवहारी शंक्षाशास्त्रकी निपुणता ओर अन्य लोकोंमें प्रायें थोरे मिलेंगें वणिक जातिकी इतनी चपलता हम मरुधर गुर्जर कच्छ पंजाबादि देशवालोंकी देखीहे एक हिसाव अंग्रेजी पढे पुरुषकों करणा वतलावे वोही हिसाब एक पारसी पढेकूं करणा वतलावे ओर वोही हिसाब माहाराष्ट्र बंगालादि देशवालोंकों करणा वतलावे वही उक्त वणिक तथा अश्वपतिसें करैण [illegible] तही वतलावे तो सबसें पहिले अश्वपतादिक महेश्वरी अग्रवाल कहेगा कुछ देरसें अंग्रेजी-वाला कहेगा वाद महाराष्ट्र बंगाल कहेगा सबके पीछेनी केवल फारसी पढा कहेगा शंका होय तो पातवाण देखें वणिक तथा अश्वपतादिकके साथही असि १ मसी २ ऋषी ३ कर्म संसारसें चलताहे व्यापारी वगेर अन्य वर्णका निर्वाह ओर संसारधर्म चलणा इसवारहे व्यापारीतो ओर वर्णके सारे प्रायें नही रह सकतेहे वाकी तो अपणे २ कर्मकर्त्ता नही होवे तो प्रलयका-लकी मर्यादा हो जातीहे जैनशास्त्रसें मुख्यप-णेकर च्यार संज्ञा करके प्रजाकी स्थिती वांधी हे राज्यकाजके दंरुपासकोका उग्रकुल संज्ञाहे १

संसारी गृहस्थियोके षोमस संस्कार करी गृहस्थी गुरूकी जोग कुलसंज्ञाहे २ राज्यकर्त्ता-के परवारवालोकों राजन्य कुल संज्ञाहे ३ शेष सर्व प्रजा व्यवहार शिल्प कर्मादिकर्त्ताउंकों क्षत्रिय संज्ञाहे ४ इन च्यारोंही वर्ण व्यवस्थासें वर्जित सर्व मोह कंचनकामनीके त्यागी भिक्षा जोजी वो जती साधू इन च्यारोही वर्णवालो-का संसारसे उद्धार करणेवाला गुरूहे वणिक व्यापारी लोकोकों चाहीये अच्छा शुद्ध व्यापार करणा जिससें धर्मकूं विरोध नही आसके इस बातपर श्राद्धविधीमें एसी गाथा लिखीहे ॥ गाथा ॥ ववहारसुद्धिदेसाइ विरुद्धचाय उ-चियचरणेंहिं तोकुणइ अत्थचिंतं निवाहिंतो निअं धम्मं ॥ अर्थ–याने गृहस्थ श्रावक धन पैदा करणेसंबंधी विचार करे उसमें तीन बात-पर जरूर ध्यान रखना चाहीये एक तो धन वगेरह जमा करणेका साधन जो व्यवहार उसकी निर्दोपता रखणी रुजगार करते वखत मन वचन काया सीधा रखणा कपट नही क-रणा जिस देसमे रहता होय उस देसमें मांने हुये लोकविरुद्ध कृत्य नही करणा तीसरे उचित कृत्य जरूर करणा इन तीन बातोंका विस्तार

हम आगे कहेंगे इन तीन बातोंको दिलमें रखता हुवा धनकी चिंता करणी चौथी ये बात है अपने जो पहले अंगीकार कीयाहै व्रत नियम सो लोपके वस उनकी खंडना न करणी इसकेभी हरकत नही लगाणे देणा संसारमें एसी चीज थोडी होगी सो धनसें न मिल सकती होय इसवास्ते बुद्धिवान पुरुषोंनें सब तरेके यत्नके साथ धन जमा करणा धन चिंता करणेका हुकम आगम देगा नही क्योंकी मनुष्य मात्रोंके अनादि कालकी परिग्रह संज्ञामें अपने कर्मोंके प्रेरणासें जीव करताहै केवली कथित आगम एसे सावद्य व्यापारमें जीवोंकी प्रवृत्ति किसवास्ते करवावे पूर्वसंचित अनादि संज्ञासें करते हुयेकुं धर्ममें बाधा नही आवे एसी आज्ञा जिनागम देताहै लोक जितना शास्त्रों उद्यमों सें रातदिन संसारी काम साधताहै उसके लाखमें हिस्से जो उद्यम धर्ममें करे तो तोस्या निश्रया बाकी रहे मनुष्यकी आजीविका १ व्यापार २ विद्या ३ खेती ४ गाय बकरा वगैरे पशुवोंका पालणा ५ कलाकोशल्य ६ सेवा ७ और भिक्षा ये सात उपायसें होतीहै उसमें अधिक लोक व्यापारसें वैद्य ज्योतषी व्याक-

रणी वेदपाठी प्रमुख अपणी विद्यासें आजीविका करतेहैं जाट कुणवी प्रमुख खेतीसें गोवाल धनगर राइके राठलोक गाय वगेरेके रक्षणमें चितारे सुनार सुथारकूं आदि लेकर बहोत लोक अपनी कारीगरीसें नोकर चाकर वगेरह सेवासें ओर भिक्षारी लोक भिक्षासें अपणी २ आजीविका करतेहैं उसमें घी तेल धांन कपास सूत कपडा तांवा पीतल वगेरह धातु मोती जवाराहित रुपीया पेसा मोहर वगेरह किरियाणेके भेदसें अनेक तरेके व्यापारहे तीनसे साठ भेद किरियाणेकेहे ओर अंग्रेजी राज्यकी चीजोंसी व्यापारमें अनेक किस्महे इसीवास्ते श्राद्धविधीकी टीकामें लिखा हे पेटेके भेद गिणना चाहे तब तो व्यापारकी संख्याका पार नही आताहे व्याजवट्टासी व्यापारमेंही गिणा जाताहे ओषध रस रसायण चूर्ण अंजन वास्तु शकुन निमित्त सामुद्रिक धर्म अर्थ काम ज्योतिष तर्क प्रमुख भेदसें नानाप्रकारकी विद्यासेंहे इनोंमे एक तो वैद्यक विद्या ओर अनार पसारीपणा ये होय रुजगार बुरा ध्यांन होणेके कारण विशेष गुणकारी पणेके नही कोइ धनवान वेमार पडे अथवा गुमास्ती

दुसरे प्रसंगमें पसारीकूं वैद्यकूं वहोत लाभ ओर मान मिलताहे सोही वात वैद्यकसेंभी लिखताहे—रोगकाले पिता वैद्य—अर्थात् वेमारी होणेपर वैद्यवापसेंभी ज्यादा मालम देताहे रोगीका मित्र कोण वैद्य राजाका मित्र कोण हांजीहां हजूर सच्च फरमातेहे एसा कहणेवाले संसारके दुखसें भरे हुयेका मित्र कोण मुनिराज ओर धन खोबेठे हुये आदमीका मित्र कोण ज्योतषी व्यापारमे व्यापार गांधी याने पसारीकाही सरसहे कारण टकेमें खरीदी हुई चीज वखत पडनेपर सोटकेमें वेचताहे वैद्यकूं पसारीकूं लाभ ओर मांन वहोत मिलताहे इसवास्ते एसा कारण पाया जाताहे जिसकूं जिस रुजगारमें ज्यादे लाभ मिलताहे तो वो जीव वेसा कारण हमेसां चाहताहे सोही बात नीतीमें लिखीहे योद्धार सिपाही रणसंग्रामकी चाह रखताहे वैद्य धनवानके बिमारीके आरामीकी चाह रखताहे ब्राह्मणलोक अपणे जजमानकी मरणेकी चाह रखताहे ॥

दुहा—भोजगपूछेव्याहविरतकूं नाइपुछेसूत ॥
जैनमुनिसुखशांतापूछे ब्राह्मणपूछेमुंत ॥ १ ॥

मनमे धन जमाका जोनि केवल इच्छावाला

वैद्य धनवानकी मांदगी चाहतेहे जिनोके पास उर कोइभी उत्म कला धन पेदा करणेकें नही हें निकेवल वैद्यपणेकीही आजिविका जाणतेहें उन वैद्योकी एसी बुद्धि प्रायें रहतीहे केइएक जरे हकीम रोगोकी वृद्धि धन लेणेकेवास्ते कर देतेहें एसे कुकर्मकर्त्ता वैद्योकें दया दिलमें कव होसकतीहे केइयक वैद्य निकेवल स्वार्थीयेही होतेहे सो खाणेकोभी मोहताज साधर्मी अ-नाथ मरणेवाला एसोंकाभी धन लेलेतेहें जो वैद्य मदिरा प्रमुख अभक्ष चीज मिली हुई द-वाई खिला देतेहें अनेक जीवोकों दवाइके काममें लेणेंकों मारणेवाला द्वारिका नगरीका प्रथम धन्वंतरकी तरे नरकका पात्र होताहे जिसके कर्त्तव्यका वयान विपाकसूत्रमेंहें एसी वैद्यक्रिया नही करणे योग्य हे अव अगे धर्मार्थी वैद्यके लक्षण एसें होतेहें गुरुलक्ष आर्य वैद्यक शास्त्रका जांणकार उचित लोभ करणेवाला रोगीका कष्ट देखके दिलमे दया लाणेवाला सुपात्रोकी विशेष परिचर्या करणेवाला जेसें ऋषभ देवका जीव जीवानंद वैद्यके भवमें कोढी साधुका कोढ मिटाया एसा तेसेंही खर वैद्य महावीर स्वामीकी कानकी शलाका निकालणे-

वाला वैद्य पुन्यक्षेत्रकी बंदगी करणेसें ब्रह्मदेव लोक गया हिंसक ठग चोर परस्त्रीवैस्यागामी लोंग्वाज दगाबाज एसें अदम्योकों अच्छा करणेसें वो पापी जो पाप करताहे उसका हिस्सा वैद्यकूं मिलताहे पुन्यवंतका पुन्यका मिलताहे लेकिन् हमारी समजसें तो हम एसा जांणतेहे इस वैद्यकी आजीविकाकूं धिग् रहे कारण-
धिगवैद्यस्यवैद्यत्वं परदुःखेनदुःखितः ॥ जीवितो भाग्य योगेने मृतोवैद्येनमारितः ॥१॥ धिक्कार हो वैद्यकी आजीविकाकूं सो पराये दुखसें दुखीहे जीवे तब तो कहतेहे हमारी ऊमर लंबीथी मरणेसें लोक कहतेहें इय वैद्य दवा देताथा सो मार दीया १ ओर फेर एसाभीहे ॥ रोगकालेपितावैद्य मध्यकालेचमित्रवत् ॥ स्नानकालेभवेत् शत्रु वैद्यस्यत्रिविधागतिः ॥ १ ॥ रोग जिस वखत रोगीकूं शताताहे उसवखत वैद्य बापसेंभी ज्यादे मालम देताहे ओर फायदा होणेके बीचमें मित्रकी तरे स्नान रोगके अंतमे करणेके वखत वैद्य दुस्मन मालम देताहे वैद्यका तीन हालहे लेकिन् धन्वंतरि जेसे अंग्रेजी डाक्टरोका यह हाल नही प्रथमतो इनोका राज्याधिकार होणेसें सबसें ज्यादे खातरी हुकमत

करतेहे दुसरे मासिक पगार राज्यसें मिलताहे उषधी बणाणी नही पफ्ती पैसाभी रईसका लगताहे जो बुलावे फी देवे देसी वैद्योंको तो मूर्ख लोग बदनामीभी देदेतेहे डाक्तरोके सांमने चूं नही करते वैद्यक क्रियाके संपूर्ण शास्त्रका जांणकार होय सो वैद्य संसारमें उत्तम गिणा जाताहे सोही लिखाहे ॥ व्याधेः तत्व परिज्ञानं वेदनायाश्चनिग्रह ॥ एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वं नवैद्यःप्रभुरायुषः ॥ १ ॥ रोगकूं जाणणा उस रोगकूं मिटाणेवाली उषधीका देणा वैद्यपणेकी इतनीही खूबीहे लेकिन् वैद्य आयु देणे समर्थ नही रोगी जबही आराम होताहे जब च्यारोंही पायें पूरेही मिलतेहे जेसें रोगकी परिक्षाकारक वैद्य वेसीही दवाई जो कभी पूराणी दवा चाहीये उर नई मिले नई चाहीये उर पुराणी मिले अथवा बणाणेमें कसर रहजावे तो दवा अमृतरूपभी जहिर होजाती हे तीसरा रोगीका परचारक निगेंदास्तीवाला पूरा चाहिये कहे मुजब हिफाजत रखे चोथा रोगी वैद्यके कहे मुजब दवा लेवे उर पथ्य करे तभी दुरस्त होजाताहे इन च्यारोंमेंसें एकमेंभी कसर होगी तो आरामी नही होगी असाध्य जब

जाणा जावे तो उपचार वैद्यकूं करणा अंगीकार-
ही न करणा कदास रोगीके स्वजन बहोत आ-
ग्रह करे तब असाध्य दशा कहणेवाला दवा
देवे तो वैद्यकूं दोष नही रोग तीन तरेसे हो-
ताहे पूर्वक्त पापके उदग्रसें वो दवाइसें मिट-
नेवाला नही उसका इलाज ध्यांन जप पुन्य
सुप ""की भक्ति प्रमुख धर्महे १ दुसरें मावापके जो
रोग होताहे सो संतानके होताहै अथवा कुष्ट आं-
ख दुखणा खाज सीतला वोदरी सुजाक फिरं-
गादिक संसर्गी होताहे इसवास्ते भलशली संस-
र्गज कहलाताहे २ इसका इलाज संसर्गजकाहे
भलशली मिटणा मुसकिलहे ३ तीसरा कायक
तथा मानसक रोगहे मिथ्या आहार मिथ्या
विहारसे वात पित्त कफादिकसें होणेवाले तेसे
काम शोक भयसे होणेवाले जिसमें साध्यका
इलाज सहज हे कष्ट साध्यका इलाज दुखें हो-
ताहे असाध्य रोग त्याज्यहे देश क्षेत्र काल
अवस्था उर अग्निबलकूं विचारे फेर अधर्मकूं
नही प्राप्त होणेवाला इलाज करे ज्योतष निम-
त्तादिक शास्त्रसें आजीविका करणेवाले पुरषकूं
यथार्थ फलही कहणा चाहीये जो फलित शा-
स्त्रमें लिखा होवे नास्तिकादिकोने अपणे क-

लिपत शास्त्रोंमें फलादेश ग्रहोका नही मानाहे अनेक कुयुक्तियां लगाकर फला देशकी नास्तिता सिद्ध करीहे हमने प्रत्यक्ष प्रमांणसें केइयक ज्योतपी देखेहे सो विगर प्रश्न कीये उन आये पुरषकी मनचिंता वात कहतेहे हेडावादमें पंच पक्षीका पढाहुवा ज्योतपी अत्नीविद्यमांनहे इस विद्याका पठन पाठन कम होणेसें ज्योतपीयोकी वात कममिलतीहे ये दोप शास्त्रोका नही पढा हुवा होवे तो सत्य कहणा मिलताहे सूर्यप्रज्ञप्ती चंद्रप्रज्ञप्ती ज्योतिप करंमादिक गणित शास्त्रहे नद्रवाहुसंहिता चूडामणि प्रमुख फलादेशके शास्त्रहे नगवान महावीर सर्वज्ञ कहतेहे हे गौतम ग्रहादिकोके शुन्न अशुन्न फल जो में कहताहूं वो मनुष्योके पूर्वकृत पापपुन्यके फल मनुष्योके जांणनेवास्ते इन ग्रहोके निमत्तसें प्रकास करताहुं शुन्नाशुन्न फल ग्रहोका नही किंतु स्वकृत कर्मोकाहे निमित्तके आठ अंगहे दिव्य १ उत्पात २ अंतरिक्ष ३ स्वर ४ शकुन ५ स्वप्न ६ सामुद्रिकादिक नेद करके इन सवोंके होणेमें पांच समवाय कारणहे निमित्त कहो चाहे आदिकारण कहो सोही अनेकार्थमें लिखाहे ॥ निमित्तहेत्वायतन

प्रत्ययोत्थानकारणं निदानमाहूपर्य्यायै प्राग्रूपं-येनलक्ष्यते ॥ १ ॥ निमित्त १ हेतु २ आयतन ३ प्रत्यय ४ उत्थान ५ कारण ६ निदान ७ ये सब पर्यायवाचक नामहे जिसकरके होनेवाले अहवाल पहले मालम होवे उस निमित्तके इतने नाम एकार्थका कहणेवालाहे इन ग्रहोकी क्रूर दशा जब आवे तब अशुभ कर्मका उदय आया एसा समजके अढारे दोसरहित तीर्थ-करकी भक्ति पूजा सुसाधूकी सेवा शील व्रत तप शुभभावनायुक्त जप करे जेसा भद्रबाहू स्वामीने नवग्रह शांतिस्तोत्रमें लिखाहे उनके वर्ण जेसाही अनाथ दीन दुःखीयोकों दान करे ग्रहोके आम्नतीये वणके जो पोरषभी भिक्षा-की उगाइ करे उनोंसें सावचेत रहे ओरभी जो संसारी कार्य साधनके अनेक शास्त्रहे उसकूं सुणता ओर पढता हुवा हंश जेसी तत्वबुद्धि हेय ज्ञेयपणा करे उपादेयतो सर्वथा प्रकारे आप्तका वचनरूप शास्त्रहे सोही करे नंदी सू-त्रमें लिखाहे मिथ्याश्रुत सम्यक दृष्टि वांचे तो सम्यक शास्त्र होके परिणमे ओर सम्यक शास्त्र मिथ्या दृष्टी वांचे तो ॥ मिथ्यात्वसइपरणमें यदुक्तं नीतौ ॥ उपदेशोहिमूरखाणां प्रकोपायन

शांतये ॥ पयपानभुजंगानां केवलंविषवर्द्धनं ॥१॥ मूर्खकूं उपदेशनिश्चे करके क्रोधकेवास्ते होय शांतिकेवास्ते नही जेसें अमृतरूप दूध सांपकूं पिलाणेसे निकेवल जहरकूंहीवधावे एसा जांणना जेनोक्त शास्त्र आचार्योंके रचे सब तरेके मोजुदहे वणे जहांतक उनकाही परिचय करे तो मि- थ्यात्व नही वधे सब पुरषोकी बुद्धि हंस जेसी नही जेसे कहाहे ॥ कुसंगासंगदोषेण काष्टघंटा विटंवना ॥ अगर सम्यकतत्व जिसकूं पहली प्राप्त होगयाहे एसोकी बुद्धि कुसंगसें अस्तव्यस्त नही होती हे जेसे कहाहे ॥ हीयोहोवेहाथ कुशंगीकेतामिलो चंदनभुजंगासाथ कालोना होयकिसनीया ॥ १ ॥ सुसाधू पंन्डित चतुरों की संगतही श्रेष्ट हे ॥ कहानहोयसत्संगसे देखोतिलउरतेल जातिवर्णसवमिटगयो पायो नाम फुलेल ॥ १ ॥ अब खेती तीन तरेंकी होती हे एक तो वरसाद के जलसें होणेवाली दूसरी कूवा नदी तलाव वगेरोंके जलसें तीसरी दोनोके जलसें होणेवाली गाय भेंस ऊंठ घोडा वकरी वलद हाथी वगेरे जा- नवरोंके पालणेंसें जो आजीविकाकरणी सो पशुरक्षा वृत्ति कहलातीहे वो जानवर वहोत

तरेके होतेहे खेती ओर पशुरक्षा वृत्तिसें आजीविका करणा विवेकी पुरुषोके लायक नही कहाहे हाथीयोके दांतोमें घोमोके खुरोमें राज्य लक्ष्मीहे बलदोके खंधोपर खेमूतोकी लक्ष्मीहे तरवारकी धारपर सुभटोकी लक्ष्मीहे सजे ओर शिणगारे हुये स्तनोंपर वैश्यायोकी लक्ष्मी रहती हे कदास कोइ डुसरी आजिविका नही होय ओर खेतीही करणी पमे तो वोणेका समय बरावर ध्यानमे रखणा तेसेंही पशुरक्षा वृत्ति करणी पमे तो मनमें बहोत दया रखणी कहाहे जो करषणी बीज वोणेका समय जमीनका नाग विचार किसमें केसा पाक आवे एसा विचार जाणे रस्तेके ऊपर खेत होय सो ग्रेरू देवे तब लान होताहे धनके वास्ते जो पशुरक्षण करता होय तो दयाके परिणाम ग्रेरूणा नही खसी करणा नाक वींधना आप जाग्रतपणे करके ग्रविच्छेद वर्जना अब शिल्पकला सो जातकीहे कुंनार सुतार लुहार चित्रकार ओर वस्त्रकार इन कारीगरोके एकेक पेटेके वीस २ नेद गिणणेसें सो होतेहे ओर न्यारे २ कारीगरोकी गिणतीसें शिल्पके अनेक नेदहे आचार्यके उपदेशसें होणेवाली शिल्प कहलातीहे

सुख्य पांच शिल्प ऋषभ देवके हुकमसें चलत आयाहे आचार्यके उपदेश विगर लोक परं परा चलता आया खेती व्यापार सो कर्म कहलाता हे खेती व्यापार पशुरक्षावृत्ति कर्ममे गिणे बाकी सब कर्मादिक शिल्पमें आजातेहें पुरषोंकी स्त्रियोंकी कलाउं कितनी एक तो विद्यामें कितनी एक शिल्पमें आजातीहें कर्मोंका सामान्यसें चार प्रकारहे बुद्धिसें काम करणेवाले उत्तम हाथसें काम करणेवाले मध्यम पगसे करणेवाले अधम उर सिरसें बोझा उठाके काम करणेवाले अधमसें अधम जाणना बुद्धिसें काम करणेवा पर दृष्टांत लिखतेहें चंपा नगरीमें मदननामे धनसेठका लम्काथा उसने बुद्धिवान आदमीसें पांचसों रुपे देकर एक बुद्धिली दोजणे लम्ते होय वहां खमा रहणा नही जब मित्रोंने ये वात सुणी तो मस्करी करणे लगे बापनेभी उलंभा दीया तव मदन पीछा रुपे लेणेकूं शिक्षा पीछी देणेकूं गया तव बुद्धिवानने कहा तूं जो एसा कबूल करे जहां दोजणे लम्ते होय वहां खमा रहूंगा तो रुपे पीछा देदेताहूं उसने कबूल करी रुपे पीछे दिये एकदिन रस्तेमें दो सिपाइ आपसमे लम्तेथे मदन वहां खमा रहा आ-

खिर उन दोनोंनें सदनकूं गवाह बनाया उर कहा जो मेरी गवाइ नही भरेगा तो तेरी खबर लूंगा दोनोंनें एकांतमे धमकाया मदनने बापसें कही इतनेमें तो दोनोंने फरियादकी पोलिसके अंदर मदनकूं गवा लिखाया बापने देखा छोकरेकूं ये दुष्ट मार माळेगें घबराकर उसही बुद्धिवानके पास गये उसने कहा लाख रुपे लूंगा बचादूंगा तब सचहे मरता क्या नही करता तब वेसाही दिया उस बुद्धिवानने उसकों सिखाया तूं पागलपणा पहलेहीसे करणे लगजा एसेंही कीया करणेंसें बचगया एसाही हाल इस वखतमें बमे २ अंग्रेजी पढे हुये बाल्स्टरोका देखणे उर सुणणेमे आताहे इसकों बुद्धिका कमाणा कहतेहे इसवजे बुद्धिवानीके मुझे अनेक दृष्टांत यादहे लिखनेसें ग्रंथ वढजायगा ज्यादे देखणा होय तो अभयकुमार रोहिक वगेरोके चरित्रसें जाणना जिसमें मति ज्ञानसंबंधी च्यार बुद्धि होतीहे सो उत्पातकी १ वैनेयकी २ कार्म्मणकी ३ पारिणामकी ४ वो आदमी वखत पमनेपर प्रत्युत्पन्न मति होताहे आगंके तो नास्तिक तत्त्व इसें मानतेंमें आतेहे

मुख्य पांच शिल्प ऋषभ देवके हुक्मसें चलता
आयाहे आचार्यके उपदेश विगर लोक परंपरासे
चलता आया खेती व्यापार सो कर्म कहलाता
हे खेती व्यापार पशुरक्षावृत्ति कर्ममे गिणे गये
बाकी सब कर्मादिक शिल्पमें आजातेहें पुरषोंकी
स्त्रियोंकी कलाउं कितनी एक तो विद्यामें कि-
तनी एक शिल्पमें आजातीहें कर्मोंका सामा-
न्यसें चार प्रकारहे बुद्धिसें काम करणेवाले उत्तम
हाथसें काम करणेवाले मध्यम पगसे करणेवाले
अधम उंर सिरसें बोजा उठाके काम करणेवाले
अधमसें अधम जाणना बुद्धिसें काम करणेवा
पर दृष्टांत लिखतेहें चंपा नगरीमें मदननांमे ध-
नसेठका लम्काथा उसने बुद्धिवान आदमीसें
पांचसों रुपे देकर एक बुद्धिली दोजणे लम्ते
होय वहां खमा रहणा नही जब मित्रोंने ये
वात सुणी तो मस्करी करणे लगे वापनेभी
उलंभा दीया तव मदन पीछा रुपे लेणेकूं शिक्षा
पीछी देणेकूं गया तव बुद्धिवानने कहा तूं जो
एसा कबूल करे जहां दोजणे लम्ते होय वहां
खमा रहूंगा तो रुपे पीछा देदेताहूं उसने कबूल
करी रुपे पीछे दिये एकदिन रस्तेमें दो सिपाइ
आपसमे लम्तेथे मदन वहां खमा रहा आ-

खिर उन दोनोनें मदनकूं गवाह बनाया ओर कहा जो मेरी गवाइ नही भरेगा तो तेरी खबर लूंगा दोनोंनें एकांतमे धमकाया मदनने बापसें कही इतनेमें तो दोनोंने फरियादकी पोलिसके अंदर मदनकूं गवा लिखाया बापने देखा छोकरेकूं ये दुष्ट मार डालेगें घबराकर उसही बुद्धिवानके पास गये उसने कहा लाख रुपे लूंगा बचादूंगा तब सचहे करता क्या नही करता तब वेसाही दिया उस बुद्धिवानने उसकों सिखाया तूं पागलपणा पहलेहीसे करणे लगजा एसेंही कीया करणेसें बचगया एसाही हाल इस वखतमें बडे २ अंग्रेजी पढे हुये बालस्टरोका देखणे ओर सुणणेमे आताहे इसकों बुद्धिका कमाणा कहतेहे इसवजे बुद्धिवानीके मुजे अनेक दृष्टांत यादहे लिखनेसें ग्रंथ वढजायगा ज्यादे देखणा होय तो अभयकुमार रोहिक वगेरोके चरित्रसें जाणना जिसमें मति ज्ञानसंबंधी च्यार बुद्धि होतीहे सो उत्पातकी १ वैनेयकी २ कार्म्मणकी ३ पारिणामकी ४ वो अदमी वखत पडनेपर प्रत्युत्पन्न मति होताहे आगूंके तो नालिक वचन एसें सुणनेमें आतेहे अग्रिम बुद्धिवणिकजन पिछल बुद्धिविप्र सदा

सुबुद्धिसे बमा तुरतबुद्धि तुर्क १ लेकिन कोइ अपेक्षा आश्री कोइ इनोंमे किसी क्षेत्रमें होवे तो ताजबनही इस वखत तो बुद्धि उंर उद्यम उंर संप उंर लक्ष्मी साहस उंर धैर्य्य उंर शौर्य सर्व आश्री अंग्रेजोकी जितनी तारीफ करें जितनीही थोमीहे एसाहे तन्नी तो नारतके तीन खंमके बादस्याह वणे हुये विजय मंका वजा रहेहें अगले जमानेकें इतिहास वांचणेसें खूब निश्चय मालम देताहे इस आर्यावर्त्तवालोमें ये सब वातें पाये जातीथी अगर फेरन्नी विद्याका पठन पाठनकी वृद्धि होजाय तो ऊपर लिखी सब वात होणी मुसकिल नही अंगरेजोंने जोजो काम हासिल कीयाहे सो विद्याबुद्धिके उद्यमसेही पायाहे पारलामिन्ट सन्ना जो आज विद्यमांनमे इंगलिस देशमे लंदन राजधानीमेंहे ये वात नइ नहीहे राजा श्रेणकके राजगृही नगरीमेंन्नी पांचसे प्रधानोकी कौशलसना जिसमें मुख्य मंत्री राजाका पुत्र नंदानामकी वैस्य जातकी राणीका अंगजात च्यारोंही बुद्धिका धरणेवाला अनय कुमारथा व्यापार तेसें ...वाले लोक हाथसें कमाणेवाले जांणना ... चपरासी कासीद वगेरह पगांसे कमा-

णेवाले जांणना वोझा उठानेवाले वगेरे लोक सिरसे कमाके खातेहे अव नोकरीभी च्यार तरेकी होतीहे १ राजाकी २ राजोंके अमलदार लोकोंकी ३ श्रेष्ठ साहुकारोंकी ४ चोथे सब जातिवालोंकी राजाकी नोकरी रातदिनपर वसता भोगणी पडणेके कारण हरकिसीसे वण आणी मुसकिलहे सोही वतलातेहे अगर नोकर बोले नही तव तो गुंगा कहलाताहे जो खुल्ला जवाब देता हुवा वोलेतो बकवादी कहलावे जो नजीक बेठा रहे तो धीठा कहलाताहे जो दूर वेठा रहे तो बुद्धिहीन कहलाताहे मालक कहे सो सब सहन करे तो कायर कहलाताहे जो नही सहे तो कमजात कहलाताहे इसवास्ते योगी लोकभी जिसकूं नही जाणसके एसा सेवाधर्म परम गहनहे जो अपनी वढोतरीके वास्ते सिर नीचे झुकावे अपणी आजीविका-वास्ते प्राणभी देणे तइयार होय सुखकेवास्ते दुखी होय एसे नोकरी करणेवाले आदमी जेसा कोण मूर्ख होगा पराइ नोकरी करणी सो श्वानवृत्ति जेसीहे एसा केइयक लोक कहतेहे लेकिन हम तो जाणतेहे कुत्तेकी वृत्तिसेंभी नोकरी बुरी कुत्ता तो पुंछसें खुसामद करताहे

उंर नोकर तो मस्तक झुका २ कर खुसामद करताहें जब किसीभी तरह गुजरान होता नही दीखे तब नोकरी करकेभी निर्वाह तो करणाही चाहिये लिखाहे बडे श्रीमंतकूं तो व्यवहार करणा चाहीये थोडे धनवालोकूं खेती करणी उंर जब कोइभी उद्यम न मिले तो तब आखिरकूं नोकरी करे समझवार उपगारका जांण जिसमें दातार गुण होय जिसकीही सेवा करणी कानका कच्चा नही होय सूरवीर कीये हुये उपगारका जांण अपणा सत्व रखणे-वाला गुणपर प्रीति रखणेवाला एसा मालक नोकरकूं पुन्यसेंही मिलताहे कठोर क्रूर विसनी लोभी नीच वहोत दिनोका रोगी मूर्ख उंर अज्ञानी अन्याइ एसें अदमीकी तावेदारी नही करणी जो आदमी विवेकरहित राजाके पाससें धन लेणेकी इच्छा करताहे वो पुरुष पांव प्याद-ल सो योजनकी मजल करणा चाहताहे अ-र्थात् ये वात वडीही मुसकिलहे ॥

दुहा–नदीनीरउंरमूर्खधन हरकोइहरलेत ॥

वलिहारीनृपकृपकी गुणविनवृंदनदेत॥१॥

कामंदकीय नीतिमार्गमेंभी लिखाहे वडे अ-

॰ ंन वृक्ष पुन्यकी सम्मतीमें चलणेवाला

राजा सत्पुरषोंके मांनने योग्य होताहे खराव चाल चलणके लोक कभी बुरे काम करणेकी सल्लाहभी देवे तोभी राजा मांने नही इसी-वास्ते लोकोंमें ये बातकी कहणा वटहे रावणके पास साहूकार प्रधान सल्लाह गीर नहीथा तवही तो लंकाका राज्य ओर ज्यांन खो वेठा हमारी समझसें तो इसपर इतनाही कहणा वटहे अन्याईकी जय नही होती मालककूं चाहीये नोकरके गुणके माफक उसका आदर-सत्कार करणा क्योंके अछे ओर बुरे सबोंकों एक जेसे गिणणेसें जो उद्यमी साहसीकहे उन नोकरोका दिल खट्टा होजाताहे सुणतेहेकी महेश्वर राजाका दिवान टीपू सुलताण नोक-रोका बडाही कदरदानथा इसवास्ते दक्षिण प्रांत देशोका मंडलीक राजा वणगयाथा नोक-रोकों चाहीये सो भक्ति ओर चतुराइमें सावचेत रहे भक्तिवान होय लेकिन् बुद्धिहीन ओर का-यर होय तो कोण कामकाहे ओर बुद्धिवान सूर-वीर नोकर होय ओर भक्त मालकका नही होय तो मालकके क्या कामका इसवास्ते ये तीनोही गुण नोकरमें चाहीये तब राजाके संपत्कालमे ओर विपत्कालमें वो नोकरका मलहे ये तीन

उंर नोकर तो मस्तक झुका २ कर खुसामद करताहे जब किसीभी तरह गुजरान होता नही दीखे तब नोकरी करकेभी निर्वाह तो करणाही चाहिये लिखाहे बडे श्रीमंतकूं तो व्यवहार करणा चाहीये थोडे धनवालोकूं खेती करणी उंर जब कोइभी उद्यम न मिले तो तब आखिरकूं नोकरी करे समझदार उपगारका जांण जिसमें दातार गुण होय जिसकीही सेवा करणी कानका कच्चा नही होय सूरवीर कीये हुये उपगारका जांण अपणा सत्व रखणे-वाला गुणपर प्रीति रखणेवाला एसा मालक नोकरकूं पुन्यसेंही मिलताहे कठोर क्रूर विसनी लोभी नीच बहोत दिनोका रोगी मूर्ख उंर अज्ञानी अन्याइ एसें अदमीकी तावेदारी नही करणी जो आदमी विवेकरहित राजाके पाससें धन लेणेकी इच्छा करताहे वो पुरुष पांव प्याद-ल सो योजनकी मजल करणा चाहताहे अ-र्थात् ये वात बडीही मुसकिलहे ॥

दुहा–नदीनीरउंरमूर्खधन हरकोइहरलेत ॥
बलिहारीनृपकृपकी गुणविनवृंदनदेत ॥१॥

कामंदकीय नीतिमार्गमेंभी लिखाहे वडे अ-
न वृद्ध पुरुषकी सम्मतीसें चलणेवाला

राजा सत्पुरषोंके माननें योग्य होताहै खराब चाल चलणके लोक कभी बुरे काम करणेकी सल्लाहभी देवे तोभी राजा मानें नही इसीवास्ते लोकोंमें ये बातकी कहणा वटहै रावणके पास साहूकार प्रधान सल्लाह गीर नहीथा तबही तो लंकाका राज्य उर ज्यांन खो बेठा हमारी समझसें तो इसपर इतनाही कहणा वटहै अन्याईकी जय नही होती मालककूं चाहीये नोकरके गुणके माफक उसका आदर-सत्कार करणा क्योंके अछे उर बुरे सबोंकों एक जेसे गिणणेसें जो उद्यमी साहसीकहै उन नोकरोका दिल खट्टा होजाताहै सुणतेहैकी महेश्वर राजाका दिवान टीपू सुलताण नोकरोका बडाही कदरदानथा इसवास्ते दक्षिण प्रांत देशोका संम्लीक राजा वणगयाथा नोकरोकों चाहीये सो भक्ति उर चतुराइमें सावचेत रहे भक्तिवान होय लेकिन् बुद्धिहीन उर कायर होय तो कोण कामकाहै उर बुद्धिवान सूरवीर नोकर होय उर भक्त मालकका नही होय तो मालकके क्या कामका इसवास्ते ये तीनोही गुण नोकरमें चाहीये तब राजाके संपत्कालमे उर विपत्कालमें वो नोकरका मलहै ये तीन

गुण बिगर नोकर नपूंसक जांणना राजाप्रसन्न होय तो चाकरकूं मांन ञ्जर बमाइ देताहे लेकिन चाकर तो राजाकेवास्ते अपणा प्राणभी देदेतेहे नोकरोकूं एसा विचार करणा चाहीये मनुष्य एसा चतुर ञ्जर साहसीक होताहे सो सांप सिंघ हाथी एसे १ जांनवरोंकूं वसकर लेताहे तो राजाकूं वस करणा क्या बमी बातहे अक्खवंतोकों मालक केवांये तरफ बेठणा मालकके मूंके तरफ देखणा हाथ जोमणा मालककी तासीरकों पहचानकर काम करणा नोकरोंकों याद रखणा चाहीयेकी दरबारकी सन्नामें वहोत नजीक नही बेठे वहोत दूरभी न वेठे मालकके वरावर आसन नही वेठे ज्यों ञ्जंचाभी नही वेठे तेसे आगे वहोत नजीक तेसेंही पिठामीभी नही वेठे नजीक वहोत वेठे तो मालककूं वुरा लगे दूर वहोत वेठे तो वुद्धिहीन वजे अगामी नजीक वहोत वेठे तो डुसरेकूं वुरा लगे ञ्जर पिठामी वेठे तो मालककी नजर नही पमे इसवास्ते हमने लिखा उस वजे वेठणा मालक अपना थका होय नूख प्याससें पीमित होय क्रोधमें होय कोइ कांममे रुका हुवा होय ञ्जस वखत कोइ अरज डुसरी करणी होय तो

नहि करे उसीमोकेकी बात होय उंर नही अरज करणेसें आगे विगाम होणेका कांम होय तब वहोत आजीजीसाथ बात वाकब कर देवे जेसें गुमानसिंहवेद प्रधान सुगनकुवर पारवती- जी पम्दायतकी लम्कीका देहांत होणेसें वी- कानेरके नूपति राठोम सिरदारसिंहजी जव दसराहेकी सवारी तथा नोजन कीया नही तब बमे शोकातुरोंकों हेतुयुक्तियोसें समजाकर राज्यकार्य करवाया पीछे राजा साहिबनें उस प्रधानकी वहोत तारीफ करी अगर मुजें नही समजाता तो उंर राजपूतोमें मेरी लघुताइ मालम पमती के वीकानेर महाराज पम्दाय- तकी संतानवास्ते दसराहा नही कीया कारण रामचंद्रकी दिग्विजय लोकीकमें दसराहेकी मांनतेहे तबहीसे राजालोक दसराहा करणा सरू कराहे राजालोक इस दिनकूं वमा मंग- लीक गिणतेहे इसीतरे अपणे मालककूं सम- जणा चाहीये इसीतरे राजाकी माता पाटराणी कुमर मुख्य मंत्री राजाका गुरु उंर द्वारपाल इनोके संगनी राजाकी तरेही वर्त्तावा रखणा जेसे कोइ अक्कलहीण एसा विचारे इस अंगा- रकूं मेने सिलगाइहे अथवा मेंही जायाहुं सो

मुझे ये बालेगी नही एसा समझके अग्निसे आ संगतपणा करे तो क्या अग्नि बालेविना छोड़े तेसेंही विचारे मेनें इनको हिकमतसें राजदिलायाहे एसा समझके जो राजाकी अवज्ञा हुकम अदूली करेगा अंगली राजाके लगावेगा तो राजा विगर सजा दीये नही रहता इसवास्ते जेसें वो प्रसन्न रहे रूठे नही एसा चलणा किसी अदमीको राजा वहोत मानता होय तो दिलमें गर्व नही करणा कारण वहोत अहंकार विनासकर देताहे इसपर एसा दृष्टांतहे दिल्लीके वादशाहका वडा वजीर मनमें एसा समझणे लगाके ये रासत मेरेही आधारसें चलतीहे ये गर्वकी वात उस वजीरनें किसी उमरावके सामने करी वो वात वादशाहतक पहुची वादशाहनें उसकी वजीरायत उतारकर एक मोचीके सुप्रतकरदी वो सही करणेकी जगे लोहकी वींधणी जो मोचीयोके जूते सीनेकी होतीहे उसकी करता मतलव राजा जिधर नजर करे उससेही काम लेकर उसकूं वधा देताहे क्योकां वधाया उंर वधातेहे राजाके प्रसन्न होणेसें एश्वर्य वधना कोण वडी वातहे सांडाका खेल दरियाव अपने कुटंवका

भरण पोषण जीवोंकी प्रतिपालणा और राजाकी महरबानी इतनी चीजें तुरत दरिद्र दूर कर देतीहे विक्रम संवत उगणीससें चोदेकी गदरसें जिनोंने बडे २ अंग्रेजोंकी ज्यांन बचाइ वो अभी दलद्र त्यागके बडे २ ऋद्धिवंत विद्यमानहे सुखकी चाह करणेवाले एसे अभिमानी लोक राजा वगेरोकी नोकरीकी बेलासक निंदा करो लेकिन् राजाकी नोकरी विगर स्वजनका उद्धार और शत्रुउंका संहार होताही नही कुमारपाल राजा भागाथा तब वो सिर ब्राह्मणने सहाय दीयाथा जब वखत पाके पीछा राजा हुवा तब उसी वखत उस ब्राह्मणकूं लाट देशका राजा बनायाथा जित शत्रु राजाका पोलिया एक वखत राजाके सांपका उपद्रव दूर कराथा उस राजाके लडका नहीथा अंतमें उस देवराज द्वारपालकूं राज्य देकर राजाने जैन दीक्षा लेकर सिद्धिपदपाया मंत्रवी नगरसेठ सेनापती वगेरोका सब काम राजाकी नोकरीमें समा जाताहे मंत्री प्रधान वजीर प्रमुखका कांम बहोत पापमईहे और फलभी कमवाहे वणे जहांतक श्रावककूं वर्जना चाहीये कह्याहे जिस आदमीके जो अधिकार ...

समें वो चोरी क्न्याविगर रहे नही जेसे प्रभु-दान जोसीकूं जोधपूरके राजा मानसिंगजीने कहा एसा कोइ आदमी ला सो काम सुप्रत करे लेकिन् खावे नही तब अरज करी कललाऊंगा दुसरेदिन सोनेकी म्बीयांमें सालगराम नांमका गंम्की नदीका पत्थर मालके लेगया राजाने कहा प्रभुदांन वो अदमी लाया या नही प्रभुदांन बोला हाजरहे आप एकांतमे पधारें एकांतमे लेजाकै सालगराम दिखलाया राजा बोला ये क्याहे प्रभुदांननें अरज करी गरीब परवर कल आपने फरमायाथा खावे नही एसा कामेती-लाणा तब मेंने बहोत तलास कीया सो पेट सबके नजर आया उर पेट होगा सो खाये विगर रहेगा नही आखिरको सालगरामजी एसे मालम दीये सो इनके सामने जो कुछ धरा जावे कुछभी खावे नही आपके हुकम मुजब हाजर कीया इस द्दष्टांतसें एसा पाया जाताहे सो अपणे २ कसबके सब चोरहे न्या-पवंततो हक्क खानाहे वे हक्क नही खाताहे हक्क खाणेमें बरकतभी बहोतहे इसवास्ते हक्क खाणेवालाही श्रेष्टहे लेकिन् दुनियांमें आज-कल झूटका रुजगार फेल गया सच्च बोलणे-

वालोंके फाके पड़तेहे इसपर कबीरजुलाहेका दृष्टांतहे जेसें कबीर जुलाहा प्रायें विवहारीक झुठ कम बोलताथा पगड़ीवणाके बाजारमेंवेचणेगया असलीदांम पांचरुपेकहे सबदिन फिरा किसीने तीन किसीनेसाढेतीन च्यारसें आगे नहीवढा पूंजीमेंभी घाटा पड़े जांण वेचा नही जब मकानपर आया कबीर संग्रह नही रखताथा लाता तो खाता पूंजी काय मरखताथा दूसरे दिन उस पूंजीकाही सूतलाके वेजावणता रातकूं भूखा रहा तब किसी पड़ोसणीने ये वात जांण के शिक्षादी उंर कहा कबीर तेंने एनमोल क्यों वताया सात रुपे कहनेसें डुनियांसें नफेके संग पघड़ी विक जाती कबीर डुसरे दिन वेसाही कीया तब वोही पघड़ी छव रुपेसें डुसरे दिन विकगइ तब कबीरने घर आके एक डुहा कहा॥

डुहा—साचेजगपतियायनही झुठेजगपतीयाय॥
पांचरुपेकीपाघड़ी छवरुपयेविकजाय ॥१॥

इस वजेका झुठ वरतावा हमारे देसवालोंनें अपणी पत गमाणे उंर ये भव उंर परभव विगाड़नेकों कर रखाहे सच्चा बोलणेका विवहार सबसें उत्तम उंर वरकत करताहे इस भवमें पेठ परभवमें गुनाहसें वचणा वाजे सहर

दिल्ली लखणेव आगरा कासी जेपुर आदिके व्यापारी एक रुपेकी चीजके बूटतेही दसरुपे कहतेहें लेणेवाला कहांतक घटायगा क्या ये गुप्त पुन्य नहीहे सिरप दिलराजी करतेहे इहां वरकत नही आगूं फल खोटेहे झुठहो चाहे सचहो लेकिन् अंगरेज व्यापारीयोंकी ये सत्यता वमीही भारीहे सो अपणे हाफरु तथा सापोंमें जिस चीजका जितना दांम कहतेहे उतनाही लेतेहे चाहेवालक जावे चाहे वृद्ध हमारे देशके व्यापारीयोकों ये अक्कल कव आवेगी श्रावककूं चाहीये सर्वथा प्रकारे राजकाज नही छोडसके तो कोटवालीका उहदा जेल अप्सरता सीमापालपणा महापापका कारण समझके निर्दई आदमीसें वणे एसाहे वंणे जहांतक इनोमें त्यागका प्रयत्न करे कारण ऊपर लिखेये हुदेदार पटेल चोधरी किसी आदमीकूं सुख कमही देता होगा अपराधीकूं सजा देणा तो राजाका धर्महे लेकिन् इन लोकोके सपाटेमें वाजे निरापराधी सुपात्रोंकीनी दुर्दसा होजातीहे जव वो कसूरदार नही होवे तव तो सजा देणेवाला केसा पापी ठहरताहे हमने कइवार सुपात्र और वेकसूरदारोंकी

दुर्दसा देखीहे कसूरदार जिसका नांम लेवे वो निरापराधीभी इन ये हुदेदारोंके हाथ सजा-पातेहें इसवास्ते दयावंतको एसे कामोंसें वंच-णा चाहीये राजकाजके सबयहुदे ज्यादे करके फिकरकी जग्हे जो कभी राज्यका अधिकारी श्रावक होय तो जेसें वस्तपाल तेजपाल विमलमंत्री प्रथ्वीधरकी तरें दुनियांमें अच्छी कीर्त्ति होय एसे काम चलाणा अभी जैपुर राज्याधिपती सवाई रामसिंगजीके सांमने बीकानेरका गोलछा माणकचंद अश्वपतिने जेसी धर्मकर्म ओर नियम निभाया साधर्मीयोको आजीविका सर लगाया इतना राज्यकार्यके कारण थोडा वखत मिलणेपरभी जिन पूजा षडावस्यक कीये विगर अन्न जल नही लेताथा जो आदमी पापमइ राज्यका-जकी हुकमत पाकर सुकृत नही संचतेहे तो वो अदमी क्या लेजांयगें क्योंकी राजाकी महर-बानी नित्य वणी रहेगी एसा जांणकर किसीसे वैर विरोध करणा नही राजा अपणेकूं कोइ काम करणा सोंपे तो राजाके पास ऊपराऊ-परी मनुष्य मांगणा चाहीये वणे जहांतक स-म्यग् दृष्टी राजा श्रावकहीकी नोकरी करणी

उचितहे क्योंके ज्ञांन दर्शनवाला एसा किसी जैन श्रावगका दासन्नी रहणा श्रेष्ठहे उर मिथ्यात्वपणेकरके मूर्ख एसा राजा चक्रवर्त्तिकीन्नी नोकरी करणी अच्छी नही किसीन्नी तरे निर्वाह नही होता दीखे तब सम्यक्तके पच्चखाणमें ॥ वित्तीकंतारेणं एसा आगार राख्याहे जिससें वेसोकीन्नी नोकरी करतां अपनी शक्ति उर युक्तीसें स्वधर्मका कष्ट दूर करणा जेसें विजयपुरनगरमें विजयशेन राजा बमा मिथ्यात्वीथा उस राजाके चंद्रदत्तनांमे मंत्रवी बमा विचक्षणथा सत् गुरुके संयोगमें सर्वज्ञ कथित धर्मकी वाकब कारी होणेसें एसा जिनधर्मपर दृढ श्रद्धा होगइ सो अन्यकु देवोंके वंदन पूजनका नियम कर लीया एकदिन राजासें कथा न्नट्ट ब्राह्मणनें ये वात कही नव राजा इस वातकी परिक्षा करणेकुं हुकम दीया हे मंत्री कल हमारे जन्ममहोच्छवकी वर्षगृंथीहे सो देवकी पूजा करणेकुं तुमकूं जाणाहोगा पूजापेका सर्व सामान उत्तम द्रव्य तुमारे गृहपर नोकर लोक नजरदम लेकर हाजर होंयगें मंत्रवीने हाथ जोम कहा तथास्तु प्रनात होतेंही सामान जो अष्ट द्रव्यादिक हाजर नया देख पमा वस्यक

जब करचूका तब राजाके हुकम मुजब अब उननोकरोंके संग चला विष्णु गृहपर पहुंचा उहां जाकर अंदर प्रवेश करतेही अपणेपास जो डुप्पट्टाथा सो जहां विष्णु उर लक्ष्मी विराजमांनथे उनोंके दरवाजेपर पर्दाकरके एक पहरेदारकों बाहिर बेठला दिया उर उसको कहा अंदर कीसीको जाणे मत देणा उहांसें पूजापा योंकायों संग लेकर देवी अष्टादस भुजीके गृहपर पहुंचा वहां अंदर जाके देखतेही दरवाजे दोनो बंध करके एक पहरा नंगी तलवारका उहां बेठा दिया उर कह्या किसीकूं अंदर मत जाणे देणा उहांसें निकलकर विनायक गजाननके गृह पहुंचा अंदर जाके देखकर सांठोकी कम्ब मंगाकर मंदिरसे ढिगकर दीया उहांसे निकलकर रूद्र गृहपर पहुंचा अंदर जाके देखकर एसी स्तुतिका काव्य पढा ॥ यतः ॥ अकंठस्यकंठेकथंपुष्पमालां ॥ विनानासिकायांकथंगंधधूपं अकर्णस्यकर्णेकथंगीतनादं ॥ अपादस्य पादेकथंसेप्रणामं ॥ १ ॥ एसा स्तुति पढके आगे जैन मंदिर गया जिन मंदिरसें प्रवेश करके अंदर देखतेही पंचागप्रणामकर एसी स्तुति पढणे लगा यतः ॥ प्रशमरसनिमग्नं

दृष्टियुग्मंप्रसन्नम् वदनकमलमंकः कामिनीसंग-
शून्यं करयुगमपधत्ते शस्त्रसंबंधवंध त्वमसिजग-
तदेवो वीतरागस्त्वमेव ॥ १ ॥ एसा कहकर
यतनके साथ निर्जीव जमीनपर शुद्ध जलसें स्ना-
नकर केशर चंदन कर्पूर कस्तूरी घसकर चोपरुत
वस्त्रसें मुख उर नाककी वाफ बंधकर सुदर्शन
तिलककरके उत्तरासण धारकर पूजा विधीसें
पूजा करणेलगा तब ठाने हलकारे जो खबर
निवेशीयोकूं राजा इस बातकी खबर लेणे भे-
जेथे उनोनें सब अहवाल हजूरमें मालम करदी
जब पीछामीसें मंत्री द्रव्य पूजा विधीसे करचू-
का तब भावस्तवमें एसें स्तुति करी ॥ त्वाम-
व्ययंविभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यंब्रह्माणमीश्वरमनंतम
नंगकेतुं योगीश्वरंविदितयोगमनेकमेकं ज्ञानस्व-
रूपममलंप्रवदंतिसंतः ॥ १ ॥ बुद्धस्त्वमेवविबुधा-
र्चितबुद्धिबोधात् त्वंशंकरोसि भुवनत्रयशंकरत्वात्
धातासिधीरशिवमार्गविधेर्विधानात् व्यक्तंत्वमे-
वभगवन्पुरुषोत्तमोसि ॥ २ ॥ आवस्यकीपाठ
कहकर मंदिरसे निकलकर राजाके पास पहुंचा
राजानें पूछा क्या तुम देवपूजा कर आये
मंत्री बोला जी हजूर राजानें पूछा कोनसे
देवकी पूजा करी हमनें तो सुणी के नंग

देवकी मंत्री पूजा कर रहा हे तब मंत्री बोला हजूर आपने कल हुकम दीयाथा देवकी पूजा कल तुम कर के आना सो हजूर जिसमें देव पनेके लक्षण मिले वहांही पूजा करी कुदेवो का नाम लेकर आपने कहा नही था तब राजा बोला तुम किस २ जगे गये क्या क्या कीया देव कुदेव क्या बात हे सो बतलावो जब मंत्री बोला स्वामी नंगा वो कहलाता हे जो की आपके स्कंदपुराणमें लिखा हे जो देव नाम धरा के ऋषीयोकी स्त्रीयोकूं देख कर काम के वस अंधा होकर नग्न होकर नाचणे लगा तब तापस लोक एसी कुचेष्टा देखकर क्रोधमें आकर श्राप दिया अरे पापिष्ट तेरा लिंग टूट पडे तब लिंग कट कर गिर पडा उस लिंगकूं जगमे स्थापन कीया हुवा निर्बुद्धि लोक केइयक गलेमें पहना करते हें केइयक पूजते हे इस्से ज्यादा नंगाफिरकोन होगा सो साक्षात्कार उघाडा जग उपर लिंग कटा हुवा पूजते हे स्वामी एसी कामकुचेष्टा कारक कों कोण बुद्धि वान देव तारन कह सकता हे हे स्वामी मेनें तो जिसवीतरागकी पूजा करी सो जिसके कोइत्तरेका कामकुचेष्टा अथवा नग्न पनेका

निशानभी नहि मूर्तिमें मालमदीया उंर नही उनअर्हंत परमेश्वरकूं कभी किसीनें नग्न देखाथा जब राजत्यागके योग लिया तब गहनावस्त्रादिक सबका मोहत्याग दीयाथा उंर नग्न नहीं दीखतेथे उनके जीवनचरित्र सुनोगे तब हे राजेंद्र सब अज्ञानके पट खुलकर आप्त इश्वरकूं जाणोगे जिसके पास नतो राग मोहकाचिन्ह स्त्री हे उंर नद्वेषकाचिन्ह शस्त्र हे उत्कृष्ट समतारसमे मग्न प्रसन्न हे दोनुदृष्टीजिनोंकी ध्यान धारे हुये चोरासीयोगके आसनमें मुख्य जो पद्मासनधारे हुये एसेंपुरषही शंशारसमुद्रके उद्धार करणेकूं नौका समान हे क्योंके जो देव आपही कामरूप अग्निकुंभमें जलरहाहे वो अपने सेवकोकूं शांतिपद क्यादेसकताहे जो पत्थरकी नाव आपहीडूबजातीहे वोउसमेंकूं कसेंतारकें पार पोहचावेगी में आपके हुक्मसें पूजाका सामान लेकर विष्णुके घरगया आगे देखातो विष्णु अपणीस्त्रीकूं बगलमेंलियेहुवे शंशारके विषयवासनामें मग्नथा तब मेंने देखा कोइभी अदमी अपनी स्त्रीसें एसीकुचेष्टाकरताहोय कदाच अकस्मात किसीकी नजरपरजावेतो अदमी आंखमूंचकर पीछालोटजाताहे क्योंकी

नीतिमें लिखाहे भलाआदमी वोहीहे जोपरा यापर्दा ढके इसवास्ते हेराजेंद्र पूजनीकपुरष होके एसी कुचेष्ठा कर्मोके वसकरनेलगजावे तब मेनें पर्दा ढकदीया पहरा इसवास्तेविठ लाया सो डर कोइ भूलके चलाजावेगा तो इनोकी लज्या जावेगी उहांसे देवीकेगृहमें गया तो उहां एसादेखनेमें आया वोचंमी किसी अदमीका खूनकीयाथा सो उसकामस्तक खून झरता हुवा हाथमें लेररखाथा इसवास्ते स्मृती योमेंलिखाहेकी खूनीको गिरफ्तारकरना फेरएसा हालदेखनेमेंआया एकआदमीकूं नीचापटक रक्खाथा उसआदमीका लिंग उसदेवीके भगमें लगाररखाथा उसलिंगकी जोरसे देवीकी जीभ वाहिर निकलपमीथी सबहाथोमें नंगे शस्त्र लेर-खाहे चाणक्य नीतिशास्त्रमें लिखाहेकी ॥श्लोक॥
नदीनां च नखीनां च शृंगीणां शस्त्रपाणिनां
विश्वासो नैवकर्त्तव्य स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ १ ॥
इसवास्ते क्याभरोसा खुनीका डरभी किसीकूं मारनाले इसवास्ते राज्यनीतिके कायदेके माफक केदकर नंगीतलवारका पहरा लगवादिया अब हजूरके दिलमें आवे सोकरे मेंतो कायदेकी कारवाइ करणेवालाहूं उहांसे आगे गजाननके

गृहमें गया तों हाथी वेठा देखा मेने विचारा इनोके लायक पूजा चरणेकेवास्ते सांठोकी कम वसे ज्यादे क्याभेटधरुं कारण लोकीककहना वटभीहे के देवजेसीही पूजा. लेकिन एक वमीही ताजवकीवाततो येदेखी के इतनामोटाहाथी जिसकेचढणेको चूहा येविचारा केसेंउठासकता होगा कोइकहेगाकी येचूहाभी वलवानथा तो क्या विनायकसेंभी ज्यादे वलवानथा या कम कारण प्रत्यक्षमें देखतेहे मनुष्यकूं उठानेवाले जानवर मनुष्यसें वलवानहोतेहें जव गजानन से वलवानथा तवतो उंदरमेंभी निर्वल गजानन ठहरा दूसरे हेराजेंद्र आपने कभीगणेशपुराणभी सुना होगा जिसमें विनायककी उत्पत्ति इसतरेसें लिखीहे पार्वती उमा एकदिन पीठी करके अंगकामेलउतारकर एकमेलका पुतलावना कर उसमें ज्यांन मालदी जववो हाथजोरकहने लगा हे माता क्या हुकमहे तवपार्वतीवोली में स्नानकरतीहूं तूं पहरादे किसीकूं अंदरमतआने देना पार्वती नग्नहोके स्नानकरनेलगी इतनेमें नांगधतूरा मद्यमें मस्त एसा महेश्वरआया उस- कहान अंदरउसकूं रोका तव दोनोके आप ससे ... आंख्र करके त्रिशूलसें उसका सिर काट

भाला और अंदर चलागया पार्वती लज्जितहोकर वस्त्रसे अंग ढककर क्रोधमें आके झटककर बोली तुम एसें अचानक एकाएक केसें आगये मेंने पहरा बिठलायाथा उसके रहते आप केसें आये महेश्वर बोला में उसकूं मार आया सुणतें ही पार्वती हाय २ कर रोणे लगी और रुद्रकूं कहा तूं मुझे मुं मत दिखला तब लाचार रुद्र हाथ जोड़के वहोत अरजी ओर आजीजीसें कहणे लगा हे सुंदरी तेरा वियोग दुःखसे में महादुःखित तेरे दासके तरफ जरा कृपाकटाक्ष-कर जो अज्ञानपणेसें अपराध हुवा सो माफ कर मेंने नही जाणा के ये तेरा पुत्रहे एसा कहकर पार्वतीकूं प्रसन्न करणेकूं नाचणे लगा तब भवानी बोली मेरे पुत्रकों जीता कर नही तो तेरेसें मेरे कांम नही तब महादेव तीन लोक ढूंढ लीया लेकिन् उसके सिरका पता नही मिला तब देवीके कहणेसें किसी हाथीका कटा हुवा मस्तक लगाकर जीता कीया इति गणेशोत्पत्ति। खेर हे राजेंद्र टुक जरासी वातपर भक्त देवोंके चरित्रसें आप तो बुद्धिवांनहे क्या अद्भुत कहानी पूजनीक गणेश और महेश्वरकीहे बड़ा ताजब एक और सुणो जब पार्वतीका विवाह

हुवा धर्मकी प्राप्ति राजाकूं करदी इसी तरे जो कभी अपणा निर्वाह किसी सम्यक् दृष्टिवंत समकितीके घर थोमेमें होता दीखे तो बणे जहांतक धर्ममें हरजाणा पोहचाणेवाला मिथ्या त्वीकी नोकरी नहि करे अब भिक्षासें आजी-विका किसतरे जीव करतेहें सो कहतेहें भिक्षा मांगणा गृहस्थीकूं किसीभी तरे योग्य नही लेकिन् आफत् काल वहोत बुरा होताहे सोही कबीरके लमकेने कहाहे ॥ भूखसें कामनी काम तज देतहे भूखसें पुरप तज देत नारी भूखसें व्याव उर यज्ञ रहजातहे भूखसे रहे कन्याकु-मारी भूखसें पुरपका तेज घटजातहे भूखसे दंमीकी बुद्धहारी कहतकबीर कमालका बालका वेदवेदांगसे भूख न्यारी ॥ १ ॥ इसवास्ते इसके वस लाचारीसें भीख मांगणी किसी कारणसे पमती हे प्रथम तो इस कांमकूं श्रावक आदरेही नही ये भिक्षा सोना धातू वगेरह अनाज वस्त्र इत्यादिक चीजोकी अनेक तरेकीहे वो भिक्षुक तीन तरेकेहें उसमें सर्वसंग परिग्रहके त्यागी मुनिराजकी जो भिक्षाहे सो धर्मकेवास्ते काया रक्षणार्थहे आहार १ वस्त्र २ काष्टपात्र ३ उप-धी ४ पादि भिक्षा उचितहे मुनिराजकूं ये भि-

खाणेवाला नित्त परघर सोणेवाला इन तीनोंका जीवतव्य वृथाहे मांगके खाणेवाले आदमीमें इतने अवगुण प्राप्त हो जातेहे याने बेफिकर हीया शून्य बहुत खाणेवाला आलसु उंर बहोत निद्रालू तसेंइ भिक्षावृत्तिवालेके प्राये तो धन होताइ नही जो कदास कुछ होजाय तो वो भिक्षुक उस द्रव्यका उपभोग नही ले सकता न भिक्षाके धनसें बरकतहे विद्यमानकालमें भिक्षासें द्रव्यपात्र श्रीमाल ब्राह्मन दृष्टिमें केइयक आतेहे लेकिन् ये लोक सब जन्म

मांगणेवालोंकी बुद्धि कैसी होतीहै श्रीहरिभद्रा-चार्य पांचमें अष्टकमें तीन प्रकारकी भिक्षा लि-खीहै सर्व शंपत्करी १ पौरपघ्नी २ अंर वृत्ति-भिक्षा ३ इसतरे तीन प्रकारकी भिक्षा लिखीहै गुरुकी आज्ञामें रहे हुयें धर्म ध्यांन वगेरे शुभ आचरणमें प्रवृत्तमांन याने जावज्जीव सर्व आरंभसें निवृत्ती प्राप्त हुये एसे यती साधूकी भिक्षा सर्व शंपत्करी कहलातीहै १ अब दुसरी पोरषघ्नी भिक्षा कहलातीहै सो ज्ञांन अंर व्रत शुभक्रि-यारहित नांममात्र जती जिनोके पास शुद्ध जतीवेषभी नही धर्मकूं कलंक लगे एसी चाल चलणेवाले जो श्रावकका कोईभी कांम साधने लायक नही ऐसों पुरषोकी भिक्षा पुरषार्थकूं नाश करणेवाली पौरपघ्नी कहलातीहै इनके भेद अंरभी एसेंह खटदर्शनी दस नांमके सामी दंभी गुसांइ योगी कबीरी दादू नानकके उदासी निर्मले गरीबदासी रूखड़ सूखड़ अनेक कि-स्मके भेपधारी सत्ज्ञांन अंर क्रिया करकेहीन विपयलंपट गांजा चिलम चरस फूंकणेवाले व्यर्थ घूमणेवाले धूणीमें लाखों जीवोका घम-साण करके तपसी वजणेवाले जो लष्ट पुष्टपणें भीख मांगके खातेहे वोभी पौरषघ्नी भिक्षा कह-

दुहा-रुजगारकरेतोटोटालागे गांठखायतोवीते॥
राघोचेतनयोंकहे मांगखायसोजीते ॥ १ ॥
कालकुसम्मेनांमरे वांभणवकरीऊंठ ॥
वो मांगेसबजातने वेचरजावेवूंठ ॥ २ ॥
जती २ क्या नांमगुण मतीनसोचेकोय ॥
पांचो इंद्रीवसकरे सच्चाजतीसोहोय ॥३॥
सच्चाजतीसोहोय विषयरतपामेपटीया ॥
करेपांनसिणगार रखेभोगणकूंखटियां॥४॥
कहेरामऋद्धिसार ज्ञांनविनविगमीसत्ती ॥
खायहरामीमाल नहीवेसच्चाजत्ती ॥ ५ ॥

जंगम अरु योगी सरस रस भोगी सन्यासी समाजीवण लोकनकूं ठगेहे सिरकूं मुंमवाय भारे किसीकोनकाजसारे पेट निजभरणकाज द्वार २ भगेहे भस्मी केइयक धरे मट्टीकेइतिलककरे झूठेकदाग्रही मिथ्यामत लगेहे ऋद्धिसारत्यागधार सुद्धजतीगुरुसंभार एसे भेखभगतमे कुमतिपंथजगेहे ॥ १ ॥

इसवास्ते जो जो मूर्ख साधूनांम धराके साधूपणाकी क्रिया करके रहित शरीरमें पुष्ट होकर दीन होकर भीख मांग पेट भरतेहे उनोका पुरषार्थ नासकूं प्राप्त होजाताहे उन एसें भेखधारीयोंकों चाहीये सो अपणे कुलकूं लंछन

कथंचित् सानुकर्षणे आयव्ययेनृभृज्जेहे भिक्षायां तु कदाचन ॥ १ ॥ पूरी लक्ष्मी व्यापारमेहें वो लक्ष्मी थोमी कर्षाणमेहे राजद्वारमें आवंद उंर खरच दोनोंहे उंर फेर भीखसेती कभी लक्ष्मी होतीही नही निकेवल पेट भराइ होतीहे इसवास्ते मनुस्मृतीके चोथे अध्यायमें इसवजे आजिविका करणी लिखीहे ऋत १ अमृत २ मृत ३ प्रमृत ४ उंर सत्यानृत ५ इतनी तरे आजिविका करणी लेकिन् नीचकी सेवा करके पेट भराइ नही करणी बजारमे विखरे हुये दाणे चुगणा सो ऋत कहलाताहे उंर विगर मांगे जो मिले सो अमृत कहलाताहे ये अमृत भिक्षा मनूकी लिखी हुइ प्रायें जैन जतीयोंमें दिखतीहे कारण जती लोग गृहस्थके घर जातेहे तब याचना नही करतेहे गृहस्थ पात्रमें अपनी इच्छा माफक अर्पण करतेहे सच्चहे परमहंसवृत्तिवालेभी मांगते नहीहे सच्ची उंर पूरी परमहंसगतितो तीर्थंकर जिन कल्पवालोंकेंही छद्मस्थ भावमें होतीहे उंर मांगणेसे मिले सो मृत कहलाताहे खेतीसें जो मिलताहे सो अमृत कहलाताहे उंर व्यापारसे जो प्राप्त होवे सो सत्यानृत कहलाताहे लक्ष्मी नही तो विष्णु-

कथंचित् सातुकर्षणे आयव्ययेनृभूभेहे भिक्षायां तु कदाचन ॥ १ ॥ पूरी लक्ष्मी व्यापारमेहे वो लक्ष्मी थोडी कर्षाणमेहे राजद्वारमें आवंद ओर खरच दोनोंहे ओर फेर भीखसेती कभी लक्ष्मी होतीही नही निकेवल पेट भराइ होतीहे इसवास्ते मनुस्मृतीके चोथे अध्यायमें इसवजे आजिविका करणी लिखीहे ऋत १ अमृत २ मृत ३ प्रमृत ४ ओर सत्यानृत ५ इतनी तरे आजिविका करणी लेकिन् नीचकी सेवा करके पेट भराइ नही करणी बजारमे बिखरे हुये दाणे चुगणा सो ऋत कहलाताहे ओर बिगर मांगे जो मिले सो अमृत कहलाताहे ये अमृत भिक्षा मनूकी लिखी हुइ प्रायें जैन जतीयोंमें दिखतीहे कारण जती लोग गृहस्थके घर जातेहे तब याचना नही करतेहे गृहस्थ पात्रमें अपनी इच्छा माफक अर्पण करतेहे सच्चहे परमहंसवृत्तिवालेभी मांगते नहीहे सच्ची ओर पूरी परमहंसगतितो तीर्थंकर जिन कल्पवालोंकेंही छद्मस्थ भावमें होतीहे ओर मांगणेसे मिले सो मृत कहलाताहे खेतीसें जो मिलताहे सो अमृत कहलाताहे ओर व्यापारसे जो प्राप्त होवे सो सत्यानृत कहलाताहे लक्ष्मी नही तो विष्णु-

मालम कर देतीहे व्यापारके अंदर विवहारकी शुद्धि द्रव्य १ क्षेत्र २ काल ३ अंर भाव इन भेदोसें च्यार प्रकारकीहे जिसमें द्रव्यसें तो पनरे कर्मादांनका कारण एसा किरियाणा सब तरेसें श्रावककूं छोरूणा चाहीये धर्मकूं पीमा करणेवाला अंर लोकमें अपयस पैदा करणेवाला एसा जो किरियाणा वहोत मुनाफा मिलता होय तोभी पुन्यार्थी पुरपोकूं गृहण नहीं करणा चाहीये तयार कीया हुवा सूत वस्त्र नगदी सोना रत्न धातू वगैरे जो निर्दोष किरियाणाहे सो विवेकी आचरे जितना व्यापारमें आरंभ पाप कम होय तेसा हमेसां चलणा कभी काल-कुसमयमें डुसरी तरे निर्वाह नहि होता दीखे तो बहोत आरंभ एसा व्यापार तेसेंही कठोर कर्मभी करे तोभी कठोर कर्म करणेकी मनमें इच्छा नही रखणी एसाही प्रसंग आ पमे तो करणा पमे तब आत्माकी साक्षी तथा गीतार्थ गुरूके सांमने उस बातकी निंदा करणी तेसेंही मनमें लज्जा रखकरकेही एसा काम करणा सिद्धांतमें भाव श्रावकके लक्षणमें कहाहे सु-श्रावक तीव्र आरंभ वर्जे उस विगर निर्वाह नही होता होय तो मनमे तीव्र आरंभकी

वो शास्त्रोंमें लिखे हुये ओभणा भावसें व्यापारके बहोत भेदहे क्षत्री जातिके व्यापारी तथा राजा इनोसें थोभाभी कीया व्यापारमें नफा पाणा मुसकिलहे अपणे हाथसें दीया हुवा पीछे मांगणा मुसकिल होताहे भर रखणा पभताहे जो देणेका व्यापार समझते इनहीहे लेकिन् सरकार अंग्रेज जो कुछ साहूकारोसें लेणदेण करतेहें उसमें हरजाणा नही करतेहे अदालत व्याजकी भिगरी रुपे सइकभेसें ज्यादे नही देसकतीहे इमानदार क्षत्री तथा रइससें लेणेदेणेका विवहार उनोकी पेठप्रतिति जांणके करणा शस्त्रधारी वेइमांनोकूं कदापि उधार नही देणा जंगल जाटन छेभीये चोरस्तेमे साह रांघभकदिय न छेभिये छेभयां होय कुराह १ श्रेष्टवणिये व्यापारीकूं चाहिये सो क्षत्रिय व्यापारी तथा ब्राह्मण व्यापारी शस्त्रधारी दिवालखोरोसें उधार लेनदेन न करे फेर मांगणेसें जो वैर विरोध पीछेसें करे एसेकूं उधार नहि देणा उधार देणेसें माल खरीदकर रखनेसें वखत आणेसे निश्चे तो मुनाफाही मिलताहे कदास असली रकम वसूलायतमें तोटा जांण पभे तो तुरत वस्तु बेचदेणा चाहिये. कदास व्यापारमें

फूसका अंत अपार गिरवीपर व्याजके रुपे ज्यादे होगये होय तो उस ऋणीकूं नोटिस देकर जताकर मुद्दत जो नोटसमें लिखे वो वीतनेपर च्यार मोतबर गवाह रखकर वेच देणा चाहीये नोटिसकी नकल पास रखणी चाहिये उधारमें जो नुकसाणी पोहचतीहे उसपर दृष्टांत कहतेहे जिन दत्तनांमें एक सेठ जिसके एक वे समझ लम्काथा मुग्धयाने जोलाथा बापके प्रताप लीलालहिर करताथा अच्छे कुलकी कन्यासें उस मुग्धकी सादी करदी सेठ उस मुग्ध लम्केकूं इस तरेकी सीखदी हेबेटा सबजगे जीनकूं दांतोका पम्दा रखणा १ किसीकूं व्याजवास्ते रुपे उधार देणा तो पीछी उघराइ नही करणी २ बंधनमें पमी हुइ उंरतकूंही त्रास देणा ३ मीठाही जोजन करणा ५ सुखसें नींद लेणी ६ मुलक २ मे घर करणा ७ वेस्याके जाणा तो प्रजात समय जाणा ८ जुआ खेलणा तो अपणे श्रृंगारित चित्रशालीमे खेलणा ए बासी नही खाणा ताजाही खाणा १० गायामेंही जाणा गायामेंही पीछा आंणा ११ मिठाइ खाणेका व्यसन पम्जाय तो हलवाइके घरपर जाके खाणा १२ दरिद्र अवस्था आ जाय तो खाट्टु उंर मकराणे

जहां प्रीति उर आदर दीखे उहांही जीमणा जहां प्रीति उर आदरहे निश्चे समझणा वोही भोजन मीठाहे ॥

दुहा—वारिवोलावणवेसणो वीनोअरुबहुमांन ॥
जीणघरपांचवनानही सोघरजांणमसान॥१॥
आवनहीआदरनही नहीनयणामेनेह ॥
जिणघरकदीयनजाइये जोकंचनवरसेमेह॥२॥
आवकरेआदरकरे दिलमेधरेसनेह ॥
तिणसज्जनघरजाइये जोपत्थरवरसेमेह ॥३॥

अथवा जब भूख लगे तब भोजन करणा सो मीठा लगताहे विगर पचे खाणेंसे रोगोत्पत्ति वैद्यक वचनहे सुखसें सोणा मतलब जिस जगे किसीभीतरे कष्टउपद्रवकी शंका नही होय उहांही रहणा सो सुखसें नीन्द्रा आवे लोकीकमेंभी सात सुख कहतेहे पहली सुख निरोगी काया दुजा सुख घरमे हुय माया तीजासुख सुथानवासा चोथा सुख राजमे हुयपासा पांचमा सुख कुलवंती नारी छठा सुखपुत्र आज्ञाकारी सातमा सुख धर्ममे मति शास्त्र सुकृत गुरुपंक्ति यती इतना मिले स्वर्गमे वास ये सातोंही पुण्यप्रकास १ अथवा जब

नें क्या मांगूं में भिक्षुक नही मेरे पुरषार्थसें कमाणेसें में च्यार टकेमें राजा भोज हूं राजा भैंसे आश्चर्यमें आकर ग्वालसें पूछणे लगा च्यार टकेमें तूं राजा भोज किस तरेसेहे सो मुझे वतला ग्वाल कहणेलगा देख च्यार रुपे महीना कमाता हूं रुपयाकूं किसी २ देसमें टका कहतेहे सो एक रुपयाको नाज एकमण आताहे जिससें मेरी स्त्री शंतानादिका उदर-पोषण करताहूं दूध उर घी वलीता उर कंवल बिछानेकी टटी ये सब एवझसे मिलताहे एक रुपया स्त्री पुत्र पूत्री उर मेरे वस्त्र सींवाइ रंगाइ धोती वरतण खरचमें लगाताहूं पाव रुपया ति-वारवार पाव रुपया व्याह खरचका न्यारा रख-ताहूं पावरुपयामें पाहुणा मिजमांन स्वजन संबंधीयोका अलायदा रखताहूं पाव रुपया शरीरमें रोगादिकके इलाज वैद्यके वास्ते जुदा धरताहूं दो आने कुलधर्मके गुरुउंके दांन नि-मित्त अलायदे धरताहूं दो आने देव तथा मं-दिर धर्मशाला दीनदुखीयोके दांन देनेवास्ते रखताहूं वारे आणा खजानेमें जमा

इसवास्ते मेरे किसी

बातपर

नं क्या मांगूं में भिक्षुक नही मेरे पुरषार्थसें कमाएसें में च्यार टकेमें राजा भोज हूं राजा बड़े आश्चर्यमें आकर ग्वालसें पूछणे लगा च्यार टकेमें तूं राजा भोज किस तरेसेहे सो मुझे बतला ग्वाल कहणेलगा देख च्यार रुपे महीना कमाता हूं रुपयाकूं किसी २ देसमें टका कहतेहे सो एक रुपयाको नाज एकमण आताहे जिससें मेरी स्त्री शंतानादिका उदर-पोषण करताहूं दूध उर घी बलीता उर कंबल बिछानेकी टटी ये सब ग्वकसे मिलताहे एक रुपया स्त्री पुत्र पूत्री उर मेरे वस्त्र सींवाइ रंगाइ धोती बरतण खरचमें लगाताहूं पाव रुपया ति-वारवार पाव रुपया व्याह खरचका न्यारा रख-ताहूं पावरुपयामें पाहुणा मिजमांन स्वजन संबंधीयोका अलायदा रखताहूं पाव रुपया शरीरमें रोगादिकके इलाज वैद्यके वास्ते जुदा धरताहूं दो आने कुलधर्मके गुरुउंके दांन नि-मित्त अलायदे धरताहूं दो आने देव तथा मं-दिर धर्मशाला दीनदुखीयोके दांन देनेवास्ते रखताहूं बारे आणा खजानेमें जमा करताहूं इसवास्ते मेरे किसी बातकी कमी नही में क्या बातपर तेरेपाससें व्यर्थ दांन लूं तब राजा

करी लेकिन् किसीनेभी नही वतलाया तब राजानें निकाल दीया सो मारे आपदाके इहां आयेहे तूं कुछ जांणताहे तो वतला इतना सुनतेही जंगली बोला इस वातका क्या में वतासकताहूं उन मुत्सद्दीयोनें खूब निश्चयसें पूछा सच्च वतादेगा जंगली बोला सच्च वताउंगा तिलभरका फरक नही जंगली मनमें विचारणे लगा वो सवार निश्चे राजा भोजथा लेकिन् अब राजाका जो हुकमहे वोही करणा चाही-ये तब मुत्सद्दीवभी आजीजसें पूछणेलगे वतला च्यार टकेमें राजा भोज कोणहे जंगली बोला कोटि सोइनये देउ तो राजाकूं तुमारी कही वात समझा देताहूं जब तुमारा राजा कहदेवे तब ले लेऊंगा तुम वणिक हो मुतलवी जातहो किसी कविने कहाहे ॥

दुहा–वभोपकभोवाणीयो तातोलीजेतोरु ॥
जोधीरजसूंकांमले लेवेकंठभरोरु ॥ १ ॥
वाण्यांथारीवांण कोइभीनरजाणेनही ॥
पांणीपीवेछाण सेंवूंधागटकाकरे ॥ २ ॥

इसवास्ते प्रतिज्ञा करो तो राजाके सांमने द्रव्य धराके फेर राजा भोज च्यार टकेमें पेस करूंगा सचहे ॥ मुतलबरी मनुहारने तजी मावे

करी लेकिन् किसीनेभी नही वतलाया तब राजानें निकाल दीया सो मारे आपदाके इहां आयेहे तूं कुछ जांणताहे तो वतला इतना सुनतेही जंगली बोला इस वातका क्या में वतासकताहूं उन मुत्सद्दीयोनें खूब निश्चयसें पूछा सच्च वतादेगा जंगली बोला सच्च वताउंगा तिलभरका फरक नही जंगली मनमें विचारणे लगा वो सवार निश्चे राजा भोजथा लेकिन् अब राजाका जो हुकमहे वोही करणा चाही-ये तव मुत्सद्दीवभी आजीजसें पूछणेलगे वतला च्यार टकेमें राजा भोज कोणहे जंगली बोला कोटि सोइनये देउ तो राजाकूं तुमारी कही वात समझा देताहूं जब तुमारा राजा कहदेवे तब ले लेऊंगा तुम वणिक हो मुतलवी जातहो किसी कविने कहाहे ॥

दुहा–वम्रोपकम्रोवाणीयो तातोलीजेतोम ॥
जोधीरजसूंकांमले लेवेकंठमरोम ॥ १ ॥
वाण्यांथारीवांण कोइभीनरजाणेनही ॥
पांणीपीवेछाण सेंवूंधागटकाकरे ॥ २ ॥

इसवास्ते प्रतिज्ञा करो तो राजाके सांमने द्रव्य धराके फेर राजा भोज च्यार टकेमें पेस करूंगा सचहे ॥ मुतलबरी मनुहारने तजी मावे

जाणा मतलब पहले पहरमे धर्मकृत्य करके व्याख्यान सुणके दांन देकर फेर भोजनकर डुकानपर जाणा गुमास्तोके कांमकी तदारक करणी खरच आवंदका आंकडा साफरखवाणा उधार किसी साहूकारसें होय तो वादे मुजब मंगा लेणा नोकरोको नोकरी मुजब इनाम इकराम आंकडा वधणेपर देणा फेर गया ढले जब घरपर आणा जो मालक अपणे घरका कांम नही देखता सिरप गुमास्तोके भरोसे छोड देताहे उसका घर विगड जाताहे केइ हमने विगडे देखेहे ११ मीठाई खानेका विसन पडजाय तो हलवाईके घरपर जाके खाणा मतलब जब हलवाईके घरपर प्रांणी जाताहे तो किसीभी तरे उसकी मिठाइ खाणेकूं जी नही चाहता किसीमें तो हजारों मखीयां मरी हुइ किसीमें मकोडे उर चिमटीयां मरी हुइ किसीमें ऊंदर गिलेरी आदि अनेक जीवोके रसोकूं छाणबूणके मिठाइ वणाताहे न पाणीकूं छाणताहे नवरतणोकी शुद्धिहे पोंछणें उर छा-णणेके वस्त्रभी महाअशुद्ध उर मलीन रहतेहे उर ते छोकरोके दिसा फराकतके हाथभी ज्यों त्यों योंही लगा देतीहे छोकरे योंही सूततेहे

तरीही होतीहै व्यापार करतां धननही उधारमें आवे तो अपणें मनमें धर्मखाते करणा इसवास्ते विवेकीकूं चाहीये सो साधर्मीके साथही व्यापार करणा म्लेच्छ अनार्योंकी उधार नही आवे तो धर्मखाते गिणनेका रस्ता जैनागममें नहीहै इसवास्ते उसपरसें ममता उतारकर निकेवल मनसें त्यागही करणा और त्याग कीया पीछे कदास देदेवे तो धर्मवास्ते श्रीसंघकूं सोंप देणा तेसेंइ द्रव्य अथवा शस्त्र आयुध वगेरे कोइ चीज खोइ जाय तो और पीछा आणेका संभव नही होवे तो उसकाभी त्याग करणा वो सिराय देणा कदास जो नवो सरावे और चुराणेवाला चोर अथवा दुसरा जिसकूं मिले सो उस चीजसें पापकर्म करे तो गृहस्थभी पापका भागी होय त्यागसे न होय इतना लाभहै विवेकी पुरष पापके अनुबंधकारी अनादिरूप शरीर घर कुटंब द्रव्य शस्त्र वगेरे चीजोका अंतमें त्याग करणा नही करे तो उन चीजोसें होती हुई पापक्रियासें भवोभव बुरे फल भोगणे पडे इस वातकी साक्षी श्रीभगवती सूत्रमेंहै पांचमें शतक छट्ठे उद्देशेमें सिकारीने हिरण

१ वांणसे २ धनुषकी

विचारमेंही रहे आखिरकों निभायही दिया पुरषोंकों चाहीये अपणी करी प्रतिज्ञा एसी निभावे किसी राजपूतके घरके अंदर नींमका दरख तथा उसके नीचे वो राजपूत जब वेठता तब एक कउआ उसपर वींटकर देता वो धनुषवांण मंगाता वो काग देखतेही उडजाता एक दिन उसने अपणी कन्यासें कहा में जब समसेरलाकहूं तब तीरकबाण लादेणा इसीवजे कउअेनें वींटकी संकेत मुजब राजपूत बोला समसेरला कउअेने विचारा समसेरसें तो में मरता नही निंचिंत वेठारहा जो बांणलगा त्योंही राजपूत बोला अरे दुष्ट अब तो मरा तब पडते २ कउआ बोला ॥

दुहा–वचनपलट्टासोमरा कागामरामजाण ॥
नांमलियासमसेरका लाईतीरकबाण॥१॥

सो जुबान कहके पलटणेवाला मराहुआहीहे जब अपणेसे पार नही पडे तो एसा बोल उठाणाही नही कदास कोइ कारण योगसें रुपे वादेपर नही पोहचसके तो किस्त करकेभी करजा उतार देणा एसा नही करे तो फेर पत जाते रहवीहे जहांतक वणे करजदार होणाही नही कारण सुणणा आवाज देणा

तरीही होतीहे व्यापार करतां धननही उधारसें आवे तो अपणें मनमें धर्मखाते करणा इसवास्ते विवेकीकूं चाहीये सो साधर्मीके साथही व्यापार करणा म्लेच्छ अनार्योंकी उधार नही आवे तो धर्मखाते गिणनेका रस्ता जैनागममें नहीहे इसवास्ते उसपरसें ममता उतारकर निकेवल मनसें त्यागही करणा ओर त्याग कीया पीछे कदास देदेवे तो धर्मवास्ते श्रीसंघकूं सोंप देणा तेसेंइ द्रव्य अथवा शस्त्र आयुध वगेरे कोइ चीज खोइ जाय तो ओर पीछा आणेका संभव नही होवे तो उसकाभी त्याग करणा वो सिराय देणा कदास जो नवो सरावे ओर चुराणेवाला चोर अथवा दुसरा जिसकूं मिले सो उस चीजसें पापकर्म करे तो गृहस्थभी पापका भागी होय त्यागसे न होय इतना लाभहे विवेकी पुरष पापके अनुबंधकारी अनादिरूप शरीर घर कुटंब द्रव्य शस्त्र वगेरे चीजोका अंतमें त्याग करणा नही करे तो उन चीजोसें होती हुई पापक्रियासें भवोभव बुरे फल भोगणे पडे इस वातकी साक्षी श्रीभगवती सूत्रमेंहे पांचमें शतक छट्टे उद्देशेमें सिकारीने हिरण मारा तब जिस धनुपसें १ बांणसे २ धनुषकी

तरीही होतीहै व्यापार करतां धननही उधारसें आवे तो अपणें मनमें धर्मखाते करणा इसवास्ते विवेकीकूं चाहीये सो साधर्मीके साथही व्यापार करणा म्लेच्छ अनार्योंकी उधार नही आवे तो धर्मखाते गिणनेका रस्ता जैनागममें नहीहै इसवास्ते उसपरसें ममता उतारकर निकेवल मनसें त्यागही करणा उंर त्याग कीया पीछे कदास देदेवे तो धर्मवास्ते श्रीसंघकूं सोंप देणा तेसेंइ द्रव्य अथवा शस्त्र आयुध वगेरे कोइ चीज खोइ जाय तो उंर पीछा आणेका संभव नही होवे तो उसकाभी त्याग करणा वो सिराय देणा कदास जो नवो सरावे उंर चुराणेवाला चोर अथवा डुसरा जिसकूं मिले सो उस चीजसें पापकर्म करे तो गृहस्थभी पापका भागी होय त्यागसे न होय इतना लाभहे विवेकी पुरष पापके अनुबंधकारी अनादिरूप शरीर घर कुटंब द्रव्य शस्त्र वगेरे चीजोका अंतमें त्याग करणा नही करे तो उन चीजोसें होती हुई पापक्रियासें भवोभव बुरे फल भोगणे पडे इस वातकी साक्षी श्रीभगवती सूत्रमेंहे पांचमें शतक छट्टे उद्देशेमें सिकारीने हिरण मारा तब जिस धनुषसें १ वांणसे २ धनुषकी

जनादि कृत्य कर आताहुं तुम जितने बेठो. सेठ तो जोजन करणे गया उस वखत सेठका पाणी लाणेवाला बेल जंर चूनेके घरट पीसणेवाला जैसेकूंनी खानपानकी छुट्टी मिली कारण श्राव-ककूं चाहीये सो अपणे इलाकेमें जो जांनवर होवे उसके चारे पाणीकी खबर लिये विगर आप जोजन करे तो जीवघातका अतीचार लगे उस वखत वो बेल जंर पाना आपसमें बातां करणेलगे बेल बोला जे मित्र अब हम तो

तीन दिन विताया कहे मुजब वैल मरगया तब सेठ उस राजपूतकूं संग लेकर राजाकेपास जाकर नजर नोछावरकर राजाके हुकम मुजब वैठगया राजाने कुशल क्षेमकी बात पूछी उर बोला सेठ बहोत दिनोंसें आये कुछ कार्य होय सो कहो तब सेठ बोला गरीब परवर नोकरी करके मालककी वंदगी वजाकर हक्क खाणेवाला मेरा चूना पीसणेवाला जेसा भैसा ताकतदारहे जेसा हजुरका माल मलीदा चरणेवाला वृथा पुष्ट पाट हाथीमें ताकत नही अगर लम्तके मुकावलेमें दोनोंकों दंगलमें भिडाये जाय तो आपका हस्ती भाग छूटे राजा हसकर बोला क्या सेठ भंग खाईहे ये वात किसीके समझमें कब आसकतीहे सेठ बोला न मांने तो हाथोतालीका परचा देख लीजीये तब राजा बोला कुछ सरत करोगे सेठ बोला हजार रुपेकी मुकरर ठहराकर दोनोकों लाये भैसेंकूं देखतेही हाथी भाग गया तीन वखत लाये लेकिन हाथी तो तीनही वेर भागगया सेठकूं हजार रुपे दियेगये उर पाडा मरगया राजा बोला हाथीसें धेस्त खाके भेंसा मरगया तब सेठने उस राजपूतसें सब वात राजासें कहलाइ राजा

हकें दिलमें जो कुरान मजहबका धर्मकायदा बेठगयाहे सो इह व्यापारनीति तथा राजनीतिकूं बाधा पोहचाकर सिरफ इतना जालमपणा जरूर यह जांनताहे जो हजरत महम्मदका हुकम नही माने उसकुफरकूं कतल करणा इसवास्ते एसी अक्कलवाला अपणी प्रजाकूं अपणी हितकारणी केसें वणाकर केसें बादस्याही करसकताहे कारण इस भरतक्षेत्रमें तरे २ के फिरकेहे उनोमें अपणी २ मताध्यक्षकी बात सब मांनतेहे सिद्धांत मत तो एकहे सो धोंकलसिंह जाणता नही एकदिन राजा धोकलसिंहकों बुलाके कहा तुमारे हाथ खरचकेवास्ते में ७ हजार रुपेका आवंदका खरचा निकालदेताहूं ये लाख रुपे तुमलो इसके आठ आनीके व्याजसें ७व हजार सालीयाना होगा तब मनमें तो कसमसाया लेकिन् बापकी बेअदवी नहि करणी तब बोला हजूर कल हजूरकी खिदमतमें उस्ताद मौलवीसाहबकूं भेजताहूं जो फरमावे सो उनहीसें फरमा देवे राजा समज गया लेकिन् बोला अच्छा दुसरे दिन मोल वीसाहब आकर कहणेलगे गरीब परवर आपने ये वक्के आजावकी बात माहाराज

रास्तसें आवे उसकूं अपणे राज्यमे खातरक-
रके वसाउं पहलेही वर्षमें जब रुपे उधार
देणेवाले साहूकार नही मिले तब तो कर्षाण
लोक जमीन नही वोयसके तब तो सरकारमें
हासल वहोत कम वेठा दशलाखकी आवंद
साहूकारोके माल ताल जगात वगेरेके वेठतेथे
जिसमेंसें कुलम पैदास आठ लाखकी हुइ
खरच सिपाइयोकी तनखा घोमे हाथी वगे
रोका सब लगणेपर उधार कोइ देणेवाला नही
रहणेसें असवाव जो विका सो सब रामसिं-
हने लीया यूंकरते चोथे वर्षमें सब शस्त्र हाथी
घोमे विकणेपर सब रइयत नागके रामसिंहके
तावे हुइ लाचार मोलवीसाहव उर धोंकलसिंह
अपणी जमीन वेची सोभी रामसिंहने खरीद
करली मोलवीसाहव मक्काकूं तसरीफ लेगये
तदपीछे धोंकलसीहकूं अपणेपास रखा राजा
तीर्थोंसें पीछे आकर देखा तो रामसिंह चोगुणी
समृद्धिसें राज्यकर रहाहे धोकलसिंह लजखा-
णा हुआ तब राजाने कहा वेटा ये क्या हुवा
तब धोकलसिंह बोला हे पूज्य मोलवीसाहिब-
के कहणेमाफक कुरानसरीफके कायदेपर चला
तोभी खुदाने मेरे तरफ कुछभी खयाल नही

खबरदी रूमके वादशाहकी फोज आरहीहे तब वादशाह सब मोलवियोसें कही मोलवी बोले हजूर आप क्यों डरतेहे मके सरीफको जाताहोगा वह बात वजीरने सुणी तब अपणी सब फोजको हुकम दिया तुम सब चुपचाप इहांसे जाकर आठ कोसके फासलेपर जाव सो जब बुलाउं तभी हाजर होणा वजीरने वादशाहसें अरजकी गरीबपर हुकमकी तामील वजाइ गइ बादशाह बोला अच्छा कीया रूमका बादशाह पंजाबमें आ पहुंचा सवारोने खबरदी बादशाह मोलवीयोसें पूछा मोलवीयोने कहा खाजेकी जारत जाताहोगा आखिरकों दिल्ली-के एक मजलपर डेरा दिया और दिल्लीके बादशाहकूं कहला भेजा तीन दिनमें किल्ला खाली करो या मोरचे मजबूत करो ये सुणतेही वादशाहके छक्के छूटगये और घबराकर मोलवी-योसें कहा जूलम हुवा अब क्या करणा तब मोलवी बोले गरीव परवर क्यों घबरातेहें हम अभी समजा देतेहे एसा कहकर बगे खलीतो में कुरान सरीफको डाल रूम सुरत्राणपास पहुंचे वादशाह कुरब कायदेसें विठलाये कुसल क्षेम-की वात चीत पूछकर पूछा हजूरका आणा केसें

खवरदी रूमके वादशाहकी फोज आरहीहे तब वादशाह सब मोलवियोसें कही मोलवी बोले हजूर आप क्यों डरतेहे मके सरीफको जाताहोगा वह बात वजीरने सुणी तब अपणी सब फोजको हुकम दिया तुम सब चुपचाप इहांसे जाकर आठ कोसके फासलेपर जाव सो जब बुलाउं तभी हाजर होणा वजीरने वादशाहसें अरजकी गरीबपर हुकमकी तामील वजाइ गइ बादशाह बोला अच्छा कीया रूमका बादशाह पंजाबमें आ पहुंचा सवारोने खबरदी बादशाह मोलवीयोसें पूछा मोलवीयोनें कहा खाजेकी जारत जाताहोगा आखिरकों दिल्ली-के एक मजलपर डेरा दिया और दिल्लीके बादशाहकूं कहला भेजा तीन दिनमें किल्ला खाली करो या मोरचे मजबूत करो ये सुणतेही वादशाहके छक्के छूटगये और घवराकर मोलवी-योसें कहा जूलम हुवा अब क्या करणा तब मोलबी बोले गरीव परवर क्यों घभरातेहें हम अभी समझा देतेहे एसा कहकर बडे खलीतोमें कुरान सरीफको डाल रूम सुरत्राणपास पहुंचे वादशाह कुरब कायदेसें विठलाये कुसल क्षेम-की वात चीत पूछकर पूछा हजूरका आणा केसें

खबरदी रूमके बादशाहकी फोज आरहीहे तब बादशाह सब मोलवियोसें कही मोलवी बोले हजूर आप क्यों डरतेहे मके सरीफको जाताहोगा यह बात वजीरने सुणी तब अपणी सब फोजको हुकम दिया तुम सब चुपचाप इहांसे जाकर आठ कोसके फासलेपर जाव सो जब बुलाउं तभी हाजर होणा वजीरने बाद-शाहसें अरजकी गरीबपर हुकमकी तामील ब-जाइ गइ बादशाह बोला अच्छा कीया रूमका बादशाह पंजाबमें आ पहुंचा सवारोने खबरदी बादशाह मोलवीयोसें पूछा मोलवीयोनें कहा खाजेकी जारत जाताहोगा आखिरकों दिल्ली-के एक मजलपर डेरा दिया उर दिल्लीके बादशाहकं कहला भेजा तीन [illegible] दलम

खुदाकों जो करणा होगा सो करेगा इस वजे राजाने जब वात कही तब धोकलसिंहने पूछा फेर हजूर रियासत गई या रही राजा बोला तब मोलवीयोकी वात सुणके वादस्याह बडा फिकर बंध होकर वजीरकूं बुलाया ओर आंखो-सें पाणी टपकाता हुवा मोलवीयोकी हकीगत कह सुणाई तब वजीर बोला हजूर जापनाह कुरान सरीफका कायदा राजकाजमें क्या दखल करसकताहे ये राजनीति शास्त्रही जुदाहे जिसमें साम दाम दंड भेदादिक अनेक छल बल ओर वहादुरीहे खेर इन पढत मूर्खोंकी वातपर फेर ज्यादे अमल मत-करणा बादस्याहने तोबा खाइ तब वजीर बादस्याहकूं दिलासा देकर कहा हजूर दिलमें धीरज रखीये जो कुछ सिपाहहे उसहीसे लडेंगें क्या आपनें नही सुणाहे रणजीतसिंह सिख पांच घोडेका सूबेदारथा सो अपणी ब-हादुरीसें पंजाब हत्थेका बादस्याह होगयाथा उसीवखत रूम सूलतानकूं लिखभेजा आप तीनदिन ठहरें फेर मुकाबला करेंगें एक सवार फोजके तरफ भेजा आठ पहरमें फोज आकर रूमकों घेर लिया एसा हाल देख रूमनें कहला

खुदाकों जो करणा होगा सो करेगा इस वजे राजाने जब वात कही तब धोकलसिंहने पूछा फेर हजूर रियासत गई या रही राजा बोला तब मोलवीयोकी वात सुणके वादस्याह बड़ा फिकर बंध होकर वजीरकूं बुलाया ओर आंखो- सें पाणी टपकाता हुवा मोलवीयोकी हकीगत कह सुणाई तब वजीर बोला हजूर जापनाह कुरान सरीफका कायदा राजकाजमें क्या दखल करसकताहे ये राजनीति शास्त्रही जुदाहे जिसमें साम दाम दंड भेदादिक अनेक छल बल ओर वहादुरीहे खेर इन पढत मूर्खोंकी वातपर फेर ज्यादे अमल मत- करणा बादस्याहने तोबा खाइ तब वजीर बादस्याहकूं दिलासा देकर कहा हजूर दिलमें धीरज रखीये जो कुछ सिपाहहे उसहीसे लड़ेंगें क्या आपने नही सुणाहे रणजीतसिंह सिख पांच घोड़ेका सूबेदारथा सो अपणी ब- हादुरीसें पंजाब हत्थेका बादस्याह होगयाथा उसीवखत रूम सूलतानकूं लिखभेजा आप तीनदिन ठहरें फेर मुकाबला करेंगें एक सवार फोजके तरफ भेजा आठ पहरमें फोज आकर रूमकों घेर लिया एसा हाल देख रूमनें कहला

संपदा स्थिर नही रहे तो विपदा क्या थिर रहतीहे जो लक्ष्मीकूं श्रीकृष्ण प्रेमसें गोदीमें बेठाताथा एसी जो लक्ष्मी समुद्रके उंर कृष्णके ही जब नही रही तो उमाउ बेकूबोके पास कब रहसकतीहे पूर्वन्नवके पापके उदयसें जो कन्नी आगे जेसी न्नाग्यवानी नहि आवे तोन्नी मनमें धीरज रखवणी क्योंके आपदारूप समुद्रमें डूबतेकूं धीरज हेसो जिहाजहे सब दिन एक सरीखे नहि रहते इस जगतमें सदा सुखी कोणहे लक्ष्मी जब जगतसेठजीकेही स्थिर नही रही तो उंर किसके रहेगी प्रेमन्नी स्थिर कब रहताहे मोतके वश कोण नहीहे उंर विषयाशक्त कोण नहीहे इसवास्ते विपदमे संतोष रखना जो कन्नी ज्यादा फिकर करे तो इस न्नवमें रोगोत्पत्ती परन्नवमें बुरीगती होतीहे तरे २ के उपाय करणेसेंन्नी जब अपणी तकदीर नही खुले तो किसी श्रीमंत न्नाग्यवानका सहारा लेणा कारणके लक्कमके सहारेसें लोहन्नी पाणीमें तिरणे लगताहे एक न्नाग्यवानके सधर मुनीमथा वो जब मरगया तो उसका बेटा निर्धन होगया तब सेठ उसकूं नोकरी रक्खे नही लेकिन् कन्नी २ बुटकर काम करणा सोपें

संपदा स्थिर नही रहे तो विपदा क्या थिर रहतीहे जो लक्ष्मीकूं श्रीकृष्ण प्रेमसें गोदीमें बेठाताथा एसी जो लक्ष्मी समुद्रके उर कृष्णाके ही जब नही रही तो उमाउ बेकूबोके पास कब रहसकतीहे पूर्वभवके पापके उदयसें जो कभी आगे जेसी भाग्यवानी नहि आवे तोभी मनमें धीरज रखवणी क्योंके आपदारूप समुद्रमें डूबतेकूं धीरज हेसो जिहाजहे सब दिन एक सरीखे नहि रहते इस जगतमें सदा सुखी कोणहे लक्ष्मी जब जगतसेठजीकेही स्थिर नही रही तो उर किसके रहेगी प्रेमभी स्थिर कब रहताहे मोतके वश कोण नहीहे उर विषयाशक्त कोण नहीहे इसवास्ते विपदमे संतोष रखना जो कभी ज्यादा फिकर करे तो इस भवमें रोगोत्पत्ती परभवमें बुरीगती होतीहे तरे २ के उपाय करणेसेंभी जब अपणी तकदीर नही खुले तो किसी श्रीमंत भाग्यवानका सहारा लेणा कारणके लकडके सहारेसें लोहभी पाणीमें तिरणे लगताहे एक भाग्यवानके सधर मुनीमथा वो जब मरगया तो उसका बेटा निर्धन होगया तब सेठ उसकूं नोकरी रक्खे नही लेकिन् कभी २ बुटकर काम करणा सोपें

संपदा स्थिर नही रहे तो विपदा क्या थिर रहतीहे जो लक्ष्मीकूं श्रीकृष्ण प्रेमसें गोदीमें बेठाताथा एसी जो लक्ष्मी समुद्रके ओर कृष्णके ही जब नही रही तो उन्हाउ बेकूबोके पास कब रहसकतीहे पूर्वभवके पापके उदयसें जो कभी आगे जेसी भाग्यवानी नहि आवे तोभी मनमें धीरज रखवणी क्योंके आपदारूप समुद्रमें डूबतेकूं धीरज हेसो जिहाजहे सब दिन एक सरीखे नहि रहते इस जगतमें सदा सुखी कोणहे लक्ष्मी जब जगतसेठजीकेही स्थिर नही रही तो ओर किसके रहेगी प्रेमभी स्थिर कब रहताहे मोतके वश कोण नहीहे ओर विषयाशक्त कोण नहीहे इसवास्ते विपदमे संतोष रखना जो कभी ज्यादा फिकर करे तो इस भवमें रोगोत्पत्ती परभवमें बुरीगती होतीहे तरे २ के उपाय करणेसेंभी जब अपणी तकदीर नही खुले तो किसी श्रीमंत भाग्यवानका सहारा लेणा कारणके लक्कडके सहारेसें लोहभी पाणीमें तिरणे लगताहे एक भाग्यवानके वास्ते मुनीमथा वो जब सरगया तो उसके काम निर्धन होगया तब सेठ उसकूं ोति तथा पं- नही लेकिन् कभी २ बुटकर रुपकूं आजीजीसे

पुरष सो आपदा आणेसें दीन नही होय लक्ष्मी संपदासे गर्व न करे पराया दुख देख दुखी होवे आपमें संकट पडे तो सीदावे नही उस पुरषकूं नमस्कारहे समर्थावान होकर पराया पुरषोंका कीया हुवा उपद्रवसहे धन-वान होकर गर्व नही करे पंडित होकर विनय-वान होय यह तीनों पुरष पृथ्वीमें अलंकार समानहे विवेकी वहीहे जो कोइके संग क्लेश नही करे तथापि बडे अदम्योसें तो भूलचूक-केभी कभी क्लेश नही करणा कहाहे जिसकूं खासीका विकार होय उसकूं चोरी नही करणा जिसकूं बहोत नींद आती होय वो जारी नही करणा जिसकूं रोगहे वो मीठे आदि रसऊपर आसक्त नही होणा जुवान वसरखणा पथ्यमें रहणेसें रोग मिटही जाताहे धनवान होकर किसीसें वैरविरोध नही करणा भंडारी राजा गुरु तपस्वी पक्षपाती ताकतवर क्रूर भंर नीच इनोके संग वाद विवाद नही करणा कभी किसी बडे आदमीसें धन जमीनादिकवास्ते असरचा पडगया होय तो विनय बुद्धिसें काम निकाल लेणा चाहीये चाणाक्यनीति तथा पं-चाख्यानमे लिखाहे उत्तम पुरुषकूं आजीजीसे

रखणेवाले एसे आदम्योके पास में हमेसां रहताहुं विवेकी आंदमी उधारकी उगराइ पण कोमलता राखकर करणा दुनियामें निंदा नही होय जेसे करणा एसा नही करे तो देणदारकी चतुराइ लाज वगेरेका लोप होय उस्सें अपणा धर्म तथा धनकी प्रतिष्ठाकी नुकसाणी होणा संभवहे इसवास्ते लंघन वगेरे न करणा नही कराणा लंघन करणे ओर कराणेवाला अंगरेजी राज्यके कायदेसें सजावार हे जो किसीकों भोजनादिकमे अंतराय देगा वो जीव कृष्णाके कुमर ढंढण ऋषिकी तरे भोजनकी अंतराय पावे सर्व पुरषोकूं तथा वणियेकूं चाहिये सो संप तथा च्यारजनोकी सलाहसें काम करणा चाहीये सब काम साधनके साम दाम दंड भेद एसे च्यार भेदहे जिसमेंभी सामसें सर्वत्र कार्यसिद्धीहे वाकी उपाय सामके जोडके नहीहें करडा ओर करूर अदमीभी मीठी जुवानसें वस होजाताहे लेणदेणमें भूलसें जो कभी झगडा पडजावे तो निकम्मा विवाद नही करणा तब पांच पंच चतुर लोकोकमें प्रतिष्ठावंत जो कहे सो मंजूर करणा उन पंचोका कहा न माने तो झगडा मिटे नही अं-

कीया एसा द्रव्य जो निरवद्य उसकी मिठाइ
उजीये सीधा ले आवेगा सो वेठके खालेंगे
साधोंके उपदेशसें बमे लाभ होगा स्नान करणे-
का मंदिर करवाणेका मूर्त्तिपूजामें एकांत पापहे
इसवास्ते इस बातका जावज्जीव त्याग साध
कराय देगा अपणेको धर्मी जांणके बमे आदमी
जो ढूंढक धर्मीहे सो धनकी मदत देंगे खेर वो
वणिक् तो वेस्याके गया उर ढूंढक पंथी ऋषि-
जीके थानक गया समयसार नाटक ग्रंथमे
लिखाहे दया दान उर पूजादिक विषय कषा-
यादिक इन दोनोंका एक खेत्रहे इन दोनोंके
मन परणाम आश्री दोनोंकी करणी अंतमे ए-
कसीहे कारण ज्ञानीको भोग सोतो निर्जराका
हेतुहे अज्ञानीको भोग सोतो बंध फल देतुहे
ये अचरिजकी बात हिये नहि आवे पूछे कोइ-
यक शिष्य गुरु समझावे १ अब वो वेस्याके
गया उसनें मनमें विचारा धिक् मेरी बुद्धि सो
में सब जन्म इनही कुकर्मोंके करणेमें खोया
धन्यहे वो सो धर्म करणीके वास्ते गयाहे ए-
सा विरक्त भावना भावता हुवा वेस्याके संग
रातभर रहकर प्रभातसमें निकला रस्तेमें संवे-
गधर्मी स्वेतांवरी साधू मिले जिनके मुखसें

कीया एसा द्रव्य जो निरवद्य उसकी मिठाइ बुजीये सीधा ले आवेगा सो बेठके खालेंगे साधोंके उपदेशसें बडे लाभ होगा स्नान करणे-का मंदिर करवाणेका मूर्त्तिपूजामें एकांत पापहे इसवास्ते इस बातका जावज्जीव त्याग साधु कराय देगा अपणेको धर्मी जांणके बडे आदमी जो ढूंढक धर्मीहे सो धनकी मदत देंगे खेर वो वणिक् तो वेस्याके गया उर ढूंढक पंथी ऋषि-जीके थानक गया समयसार नाटक ग्रंथमे लिखाहे दया दान उर पूजादिक विषय कषा-यादिक इन दोनोंका एक खेत्रहे इन दोनोंके मन परणास आश्री दोनोंकी करणी अंतमे ए-कसीहे कारण ज्ञानीको भोग सोतो निर्जराका हेतुहे अज्ञानीको भोग सोतो बंध फल देतुहे ये अचरिजकी बात हिये नहि आवे पूछे कोइ-यक शिष्य गुरु समझावे १ अब वो वेस्याके गया उसनें मनमें विचारा धिक् मेरी बुद्धि सो में सब जन्म इनही कुकर्मोंके करणेमें खोया धन्यहे वो सो धर्म करणीके वास्ते गयाहे ए-सा विरक्त भावना भावता हुवा वेस्याके संग रातभर रहकर प्रभातसमें निकला रस्तेमें संवे-गधर्मी स्वेतांवरी साधू मिले जिनके मुखसे

ताहे निरख तोलकर वे सुमार मोल वधायकर अयोग्यरीते व्याज वधायकर रुसपत देकर अथवा लेकर जूठा मासूल कर्पणोसें धोखा-बाजी करके खोटा नाकल घसाहुवा रुपया पेसा देकर कोइ खरीदता होय अथवा वेचता होय उसका भंग करके पराया ग्राहकोकूं भरमाय कर नमूना एक बतावे माल दुसरा देणा नही जहां लेणेवालेकूं बराबर दीखे नही एसी जगे कपडा वेचे नही लिखणे पढणेमें फेरफार करणा नही इत्यादिक ठगाइ धोखाबाजी कभी करणा नही इस भवमें सरकारसे दंड परभवमें स्वर्ग मोक्षके सुखमें हानी पहुंचतीहे कोइयक मूर्ख एसा कहतेहे कूड कपटविना कमाइ होती नही आजिविका तो कर्मके आधीनहे लेकिन व्यव-हार शुद्ध रखवे तो उलटे ग्राहक ज्यादे आवे मुनाफा ज्यादा होय इसपर एक दृष्टांतहे एक सुंदरपुर नगरमें हेलानामका सेठ रहताथा उसके चार लडका हुवा उरभी उसके परिवार ज्यादाथा तब वो सेठ ग्राहक जब आता तब लडकोकूं समजा रखाथा उसवास्ते गाली देणेके वहाणेसें त्रिपुष्कर पंचपुष्कर एसा शब्द कहकर खोटी तराजु वट वापरकर लोकोकूं ठगताथा

ताहे निरख तोमकर वे सुमार मोल वधायकर अयोग्यरीते व्याज वधायकर रुसपत देकर अथवा लेकर झूठा मासूल कर्पणोसें धोखा-बाजी करके खोटा नाकल घसाहुवा रुपया पेसा देकर कोइ खरीदता होय अथवा वेचता होय उसका भंग करके पराया ग्राहकोकूं भरमाय कर नमूना एक बतावे माल डुसरा देणा नही जहां लेणेवालेकूं बराबर दीखे नही एसी जगे कपमा वेचे नही लिखणे पढणेमें फेरफार करणा नही इत्यादिक ठगाइ धोखाबाजी कभी करणा नही इस भवमें सरकारसे दंम परभवमें स्वर्ग मोक्षके सुखमें हानी पहुंचतीहे कोइयक मूर्ख एसा कहतेहे कूम कपटविना कमाइ होती नही आजिविका तो कर्मके आधीनहे लेकिन व्यव-हार शुद्ध रखवे तो उलटे ग्राहक ज्यादे आवे मुनाफा ज्यादा होय इसपर एक दृष्टांतहे एक सुंदरपुर नगरमें हेलानामका सेठ रहताथा उसके चार लमका हुवा उरभी उसके परिवार ज्यादाथा तब वो सेठ ग्राहक जब आता तब लमकोकूं समझा रखाथा उसवास्ते गाली देणेके वहाणेसें त्रिपुष्कर पंचपुष्कर एसा शब्द कहकर खोटी तराजु वट वापरकर लोकोकूं ठगताथा

सेठकूं लायकर कांठला दीया एसा देखकर सेठकूं हक्क कमाणेपर आस्ता आई शुद्ध व्यापार करता हुवा सेठ बमा धनवांन होगया श्रावक धर्ममें अगवाणी नया उसका नांम लेणेसें सब विघ्न टलगया तब जिहाजोके चलावणेवालोकूं आदि ले सब मनुष्य हेलाहेलो नाम पुकारणे लगा विचारवानोकूं सब पापोके काम गेमणा उसमेंन्नी अपणा मालक दोस्त अपणेपर विश्वास रखणेवाला देव गुरु वृद्ध तथा बालक इनोके संग वेर विरोध करणा नही इनोकी धरवट खाणी नही जमारवाणा उनोकी हत्या करणे जेसीहे जूठी गवा देणेवाला बहोत दिनोतक गुस्सा रखणेवाला विश्वासघाती उर कीये उपगारीका उपगार लोपणेवाला कृतघ्न ए च्यारोही कर्मचंमाल उर पांचमा जातिचंमाल जाणना विश्वासघातपर विसेमिराका दृष्टांत हे विसाला नगरीमें नंदराजा न्नानुमती राणी उनोका पुत्र विजयपाल उर बहुश्रुतनामे मंत्रीथा नंदराजा न्नानुमती राणीपर आसक्त होणेसें सन्नामेंन्नी राणीकूं पासही रखताथा शास्त्रोमें लिखाहे राजाका वैद्य उर गुरु तथा मंत्री ये लोक राजाकूं प्रसन्न रखणेकूं मीठी १

राजाके सामने हमेसां वांचे जो वाक्य यथार्थ आवे उसका विस्तार करे बाकी अवशेशकूं कविताका दखल मांनता हुवा वांचके सुणावे एकदिन कथामें मांस खाणेका निषेध अधिकार सात्वकी आया व्यास बोला यःपुमान् तिलतुष प्रमाणं पललंभुंक्ते साधो अवन्यां कुंभीपाके पचति अर्थात् जो तिल तुसभर मांस खाताहे वो मनुष्य कुंभीपाक नर्क नीचेकी पृथ्वीमें पकताहे ये वात सुणके राजा चमक उठा एसी व्याख्या राजाने कभी बडे व्याससें नही सुणीथी राजा बोला अहो व्यासजीके पुत्र एसा अर्थ आपने सुणाया ये अर्थ जूठाहे क्या व्यासजीसें आप ज्यादे पंडितहो अगर आपका कहा अर्थ सच्चाहे तब तो बेदमे जो यज्ञोमें नानातरेके पशुउंकों होमके मांस खाणेकी विधी लिखीहे उस मुजब असंक्षा जीवोका पुरोडासा अर्थात् यज्ञ कीये वाद वचा जो मांस सो तुमारा वगेरा तथा अनेक राजाउंनें खाया उर खातेहें क्या वो सब नरक गये होंयगे वेदके वचन कभी जूठे होसकतेहे जोकी भगवान ब्रह्माजीने प्रकास कराहे जिस यज्ञोकी तारीफ वेद व्यासजीने पुराणोमें गा-

राजाके सामने हमेसां वांचे जो वाक्य यथार्थ आवे उसका विस्तार करे वाकी अवशेषकूं कविताका दखल मांनता हुवा वांचके सुणावे एकदिन कथामें मांस खाणेका निषेध अधिकार सात्वकी आया व्यास वोला यःपुमान् तिलतुष प्रमाणं पललंतुंत्ते साधो अवन्यां कुंनीपाके पचति अर्थात् जो तिल तुस नर मांस खाताहे वो मनुष्य कुंनीपाक नर्क नीचेकी पृथ्वीमें पकताहे ये वात सुणके राजा चमकउठा एसी व्याख्या राजाने कभी वभे व्याससें नही सुणीथी राजा वोला अहो व्यासजीके पुत्र एसा अर्थ आपने सुणाया ये अर्थ झूठाहे क्या व्यासजीसें आप ज्यादे पंडितहो अगर आपका कहा अर्थ सचाहे तब तो वेदमे जो यज्ञोमें नानातरेके पशुउकों होमके मांस खाणेकी विधी लिखीहे उस मुजब असंख्य जीवोका पुरोडासा अर्थात् यज्ञ कीये वाद बचा जो मांस सो तुमारा वडेरा तथा अनेक राजाउनें खाया उर खातेहें क्या वो सब नरक गये होंयगे वेदके वचन कभी झूठे होसक्तेहे जोकी भगवान ब्रह्माजीने प्रकास कराहे जिन यज्ञोकी तारीफ वेद ... ... जिनोंने ...

दांन करे ओर एक आदमी एक जीवकों मरतेकूं बचावे तो कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन अहिंसा बराबर कोइ धर्म नही राजा स्वार्थीये सच्च मार्ग कभी नही बतासकतेहे एसा कह व्यास घरकूं आया राजाने पेटीये ओर रुपये बंधकर लिये चंददिनमें व्यास घरकूं आये तब व्यासण रोणेलगी व्यासने पूछा क्या भया व्यासणीने सब हकीगत कह सुणाइ व्यासका लडका बोला आप केसी कथा हमेसां वांचतेहे सो राजा सच्चे अर्थकूं झूठा कहणेलगा व्यास बोला कलसुवे राज महलमे आजाणा देख केसाक राजाकूं समझाताहूं खेर फजर होतेही व्यासजी राजापास जाके आसीर्वाद दिया राजा नमस्कार कर सत्कार कर पूछा कुशल क्षेमहे व्यासने कहा अन्नदाता कुशल क्षेमतो हजूरकी सु निजरसेंही रहसकतीहे राजा बोला महाराज कथा इतनेतक तो आपके पुत्रसें सुणी लेकिन लोकोमें मेने एसा सुणाथाके व्यासजीका पुत्र बडा पंडितहे सो तो कुछ नही व्यास बोला गरीबपर पंडताईका घर दूरहे कलियुगके पंडतहे आप तो कल्पवृक्ष कामधेनु साक्षात ईश्वररूपहो एसा सुणकर राजा प्रसन्न

दांन करे उर एक आदमी एक जीवकों मरतेकूं
वचावे तो कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन अहिंसा
बराबर कोइ धर्म नही राजा स्वार्थीये सच्च
मार्ग कभी नही वतासकतेहे एसा कह व्यास
घरकूं आया राजाने पेटीये उर रुपये बंधकर
लिये चंददिनमें व्यास घरकूं आये तब व्यास-
ण रोणेलगी व्यासने पूछा क्या भया व्यास-
णने सब हकीगत कह सुणाइ व्यासका लम्का
बोला आप केसी कथा हमेसां वांचतेहे सो
राजा सच्चे अर्थकूं झूठा कहणेलगा व्यास बोला
कलसुबे राज महलमे आजाणा देख केसाक
राजाकूं समझाताहूं खेर फजर होतेही व्या-
सजी राजापास जाके आसीर्वाद दिया राजा
नमस्कार कर सत्कार कर पूछा कुशल क्षेमहे
व्यासने कहा अन्नदाता कुशल क्षेमतो हजूरकी
सु निजरसेंही रहसकतीहे राजा बोला महा-
राज कथा इतनेतक तो आपके पुत्रसें सुणी
लेकिन् लोकोमें मेने एसा सुणाथाके व्यास-
जीका पुत्र बमा पंम्तिहे सो तो कुछ नही
व्यास बोला गरीबपर पंम्ताईका घर दूरहे
कलियुगके पंम्तहे आप तो कल्पवृक्ष कामधेनु
साक्षात ईश्वररूपहो एसा सुणकर राजा प्रसन्न

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी उर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लमकेका हाथ पकमके अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बमा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपनें स्वर्ग जाणा केसे वतलाया तब व्यासजी बोले अरे नाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या उर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगम जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य वताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी और मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लड़केका हाथ पकड़के अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बड़ा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपने स्वर्ग जाणा केसे बतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या और बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगड़ जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य बताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हु ... वैद्य रोगीके मन मुजब ...

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी ओर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लडकेका हाथ पकडके अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बडा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपनें स्वर्ग जाणा केसे बतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या ओर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगड जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य वताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा ... वैद्य रोगीके मन मुजब ...

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी उंर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लडकेका हाथ पकडके अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बडा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपने स्वर्ग जाणा केसे बतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या उंर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगड जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य बताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी उंर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लडकेका हाथ पकडके अपणें घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने क्या अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपनें स्वर्ग जाणा केसे वतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या उंर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगड जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य बताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी ओर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लडकेका हाथ पकडके अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बडा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपने स्वर्ग जाणा केसे बतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या ओर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगड जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य बताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी ओर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लडकेका हाथ पकडके अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बडा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपने स्वर्ग जाणा केसे बतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या ओर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगड जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य बताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी उंर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लडकेका हाथ पकडके अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बडा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपने स्वर्ग जाणा केसे बतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या उंर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगड जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य बताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे

होकर कथा वांचणेका हुकम दीया इतनेमें व्यासपुत्रजी आ पहूंचा व्यासजी बोल्हो तिल- तुसनर मांस खानेवाला नर्क जाताहै एसा अर्थ करा राजा बोला क्या मैं नर्क जाउंगा व्यास बोला आप तो स्वर्ग वैकुंठ पधारोगे राजा बोला मैं मांस खाताहूं व्यास बोले धर्मावतार पुराणका रहस्य आप विचारो जो तिलतुसनर मांस खावे सो नर्क जावे आप क्या तिलतुसनर खातेहैं राजा बोला नही २ सेर अधसेर नित नव व्यास बोले हे धर्ममूर्ति आप तो शिवलोक सिधावेंगे क्योंकी व्यासजी महाराजने तो तिलतुसनर खाणेवालेकूं नर्क लिखाहै सेर अधसेरवालेकूं कुछ नही लिखा राजा प्रसन्न होकर व्यास को नित नौ व्यास [illegible] राजा व्यासजीके [illegible] व्यासजी पंडिताइ [illegible] नही [illegible] व्यासजी [illegible]

[illegible]

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहै व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी ओर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहै एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लडकेका हाथ पकडके अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बडा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहै आपने स्वर्ग जाणा केसे बतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या ओर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहै इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगड जाताहै इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका है एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य बताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे

वो वैद्य निपेधितहै चाहीये वैद्यकों सो देश काल अवस्था ताकत रोगकी रोगीकी तथा ऊपर्थीके अनुयाईही पथ्य बतलावे, राजा इस बातकी परिक्षा करणेकूं वैद्यसें पूछी वैद्यजी मुझे सब सागोंमें बेंगणका साग अच्छा मालम देताहै वैद्य बोला हां हजूर सबहै भोजन भागविलास ग्रंथमे लिखाहै वृन्ताकं सागनायकं अर्थात् बेंगणहै सो सब सागोंका मालकहै बका रुचिकर वात कफ नहीं होणेसे हुंदुणाहे स्वा-

चूत्रे जेसा बमा विदरूप दीखताहे म्लेच्छ अ-नार्योका खांणापीनाहे इस वेंगणकूं बहुत बीज होणेसें जैनधर्मवाले अन्नक्ष कहतेहे उंर पुरा-णोमें व्यासजीनें लिखाहे जो प्राणी वेंगण खायाहे उंर ठ महीनेमें आदमी मरजावे अगर एक बीजन्नी जो पेटमें रहजावे तो प्राणी नर्क जाताहे तब राजा बोला वैद्यजी हमने जब वेंगणकूं अच्छा कहा तब तो आपनेन्नी अच्छा काहा उंर मेने बुरा कहा तब बुरा कहा ये क्या हालहे तब वैद्य बोला गरीबपरवर नोकर आ-पके क्या वेंगण चंदजीके बापके आप राजी रहो हमकूं तो वेसाही कहणा जरूरहे ॥

दुहा—जाटकहेसुणजाटनी इसीगांवमेंरहणा ॥
उंठविलाइलेगया हांजी २ कहणा ॥१॥

सो हमकूं तो वेसा कहणा जरूरहे एसा खुसामंदीया वैद्य राजाके रोगका वढाणेवाला होताहे एसा विचार मंत्री राजाकूं कहणेलगा महाराज सन्नामें राणीसाहिबकूं पास रखणा वाजिवनही क्योंके नीतिमे लिखाहे अति नि-कट विनाशाय अतिदूरेतिनिष्फलः सेव्यतांमध्य न्नागेन राजावन्हिगुरौस्त्रियः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ राजा अग्नि गुरु उंर स्त्री ए च्यार बहोत न-

जीक होय तो विनाश करतेहै और बहोत दूर
रहे तो बराबर फल देते नहीहै इसवास्ते म-
ध्यमे इनोसें काम लेणा चाहीये इसवास्ते रा-
णीकी एक तसवीर बनायकर पासमें रखिये
तब मंत्रीराजा एक तसवीर बनायकर सारदा
नंदनकामें आपणा गुरुकुं दिखलाई तब शारदा-
नंदन आपणा पंडिताइ दिखाणेकुं बोला के रा-
णीका साथलमें काली जांघपर तिलहै सो इसमें
दीखा नहीं राजा गुरुका वचन सुणकर राणीके
सीलमें संशय आया तब राजा मंत्रीकुं हुकम
दीया के सारदानंदनकुं मारडालो तब मंत्रीने
विचार करा एकाएक विगर विचारा काम
नहीं करना ऐसा जाणकर घरमें छिपाय
रखा [illegible] तब थोडा [illegible] हुकम हुवा
[illegible] शिकारको पधारे आगे चले राजा
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] अटवीमें [illegible] पहुंचे आगे
[illegible] [illegible] एक वृक्षके नीचे [illegible] ना-
[illegible] [illegible] एक [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एक [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सोकर आदमीका दिल पिघलाकर दगाबाजीसें मनुष्योंका प्राण लेताहे इसवास्ते पेस्तर तूं मेरी गोदमें सोजा पीछली रात्रिकों में सोउंगा तब राजकुमार उस बंदरकी गोदमें सो रहा वाघने अनेक छलबल कीये लेकिन् बंदरने राजकुमार-कूं नीचे नाला नही जब पिछली रात्री आइ तब राजपुत्रकी गोदमे बंदर सूता बहोत स-मझाया हे कुमार देख एसा नही होजाय जो वाघकी दया लाके मुझे तूं नीचे पटकदे में तेरे सरणागतहूं मेरे प्रांण तेरे हाथहे एसा समझाकर कुमरके गोदमें वानर सोरहा इतनेमें वाघ आकर बहोत आजीजी करणेलगा हे कुमर में बहोत भूखाहूं तुझें बडा पुन्य होगा ये बंदर तेरे क्या लगताहे उर इसकूं तुं मुझे देदेगा तो तेरेभी प्राण बचजायगें तब कुमर अपनी ज्यांनकी रक्षावास्ते बंदरकूं नीचे नाल-दिया तब बंदर वाघके मूंमे गिराये स्वरूप देख के वाघ हसणे लगा तब बंदर वाघके मूंमेसें निकलकर रोणे लगा तब वाघ बंदरकूं रोणेका कारण पूछा तब बंदर बोला जो कोइ आदमी अपनी जाती छोडकर पराइ जातिपर आसक्त होतेहे उण मूर्खोंकी क्या गती हो-

यगी एसा कहकर शरमिंद राजकुमरकूं पाग-
लकर किया तब राजपुत्र विसे मिरा २ एसा
पुकारणे लगा एसा हुये बाद नंदराजा पिछामी
तलाश करणेकूं असवार भेजा आगे घोडा इकेला
फिरता देखा उसके पगोंके खोजसें फिरते २
कुमर दिवाना हुवा मिला राजाने बहोत उ-
पाय कराया लेकिन कुमर अच्छा हुवा नहीं
तब राजाकूं शारदानंदन याद आया जो डर

गम स्नानके पापसें छूटता नही एसा सुणकर डुसरा अक्षर से छोमदीया मित्रकूं मारणेवाला कृतघ्नी इच्छा करणेवाला कृतघ्नी ओर विश्वास-घाती चोर ये च्यारोंही जहांतक सूर्य चंद्रमाहे उहांतक नर्कमें रहेगें तब कुमर तीसरा अक्षर मि कहणा छोम दीया राजन् तूं अपणे लमकेका कल्याण चाहताहे तो सुपात्रोंकों दांन दे का-रण गृहस्थ दांन देणेसें शुद्ध होताहे एसा वचन सुण कुंवर चोथा अक्षर रा छोमदिया तब अछा होकर कुंवर वाघ ओर बंदरका सर्व वृ-तांत सुणाया तब राजा पमदेमें रहा शारदा-नंदनकूं पूछणेलगा हे बाला वनमे जो वीती बात सो तुजे क्या खबर सो तेने सब हकी-गत श्लोकोमे बनाकर कहकर मेरे पुत्रकूं अच्छा करदिया तब पंमित बोला हे राजन् जिनेश्वर देव सद्गुरूके प्रतापसें मेरे जीव्हाग्रपर सरस्व-तीहे जिस्सें जेसें मेने नानुमती राणीके जां-घका तिल जाण्या तेसेंइ यह बातनी जाण-ताहूं तब पीछे दोनोंकी मुलाखांत नइ दोनोंके आनंद नया इसवास्ते विश्वासघात करणा नही इस लोकमे पाप दो प्रकारकाहे एक तो गुप्त ओर डुसरा जाहिर वो छानेका पापनी दो

तरेकाहै एक खोटा और एक बड़ा खोटी तराजु बट नाप वगेरह रखणा ये खोटा गुप्त पाप और विश्वासघात करणा यह गुप्त महापापहै प्रगट पापका दो प्रकारहै एक तो कुलाचारसें करणा

समाधान एसाहे जो अन्याइ अधर्मी सुखी दिखतेहे उर धर्मी डुखी दिखतेहे ये सब पूर्व-कृत पुन्यपापका फलहे इस जवका जनोके नहि जांणना श्रीधर्म घोपसूरजीने कहाहे पुण्यानुबंधिपुन्य १ पापानु बंधिपुन्य २ पुण्यानु बंधि-पाप ३ पापानु बंधिपाप ४ इसतरेसें पूर्वकृत कर्मके सुखडुखके च्यार जेदहे जो जीव जैन धर्मकी विराधना नही करतेहे वो जीव जरत-चक्रवर्त्तिकी तरह निरुपम सुख पातेहे वो जीव पुण्यानुबंधवाले कहातेहे जो जीव पूर्वजन्ममें अज्ञानसें कष्ट करे वो जीव कोणिक राजाकी तरे बहोत ऋद्धि निरोग शरीरवाला होताहे पापकर केजी धर्म करे नही उर पापकर्ममें रक्त होय वो पापानुबंधिपुन्य जांणना जो जीव पापके उद-यसें दलद्री उर डुखीहो करकेजी लेसमात्र दयाधर्म होणेसें डमक मुनिकी तरे जैनधर्म पाताहे वो पुण्यानुबंधिपाप जाणना ३ उर जो जीव काल शोकरिकश्वंमाल कसाईकी तरे क्रूर-कर्म करणेवाला अधर्मी निर्दइ करे हुये पापका पछतावा नही करणेवाला ज्यों ज्यों डुखी होता जाय त्यों त्यों ज्यादा २ पापकर्म करताजाय वो पापानुबंधि पाप कहलाताहे पुन्यानुबंधिपुन्यसें

बाहरकी शुद्धि और अंतरंग शुद्धिकी पातेहै दोनोंमेंसें एककी शुद्धि जिसने नहि पाइ उस मनुष्यजन्मकों धिक्कारहै जो जीव पहली अछे परिणाममें धर्मकाम शुरू करे और पीछेसें शुभ परिणाम उतर जाणेसें पूरा धर्म करे नहीं तो

आदमी मूर्खताइसें मित्रकूं कपटसें धर्मकूं सुखसे विद्याकूं क्रूर ऊंर कठोरताइसें स्त्रीकूं वस करणा चाहे तेसेंइ डुसरेकूं तकलीप देकर आप सुख-की चाह करे उसकूं मूर्ख जांणना विवेकी लो-कोंको चाहीये सो ज्यों अपणेपर लोक प्रीति करे तेसें चलणा क्योंके इंडीयां जीतनेसें वि-नयगुण पैदा होताहे ऊंर विनयसें अछे २ गुण पैदा होतेहे तब सब लोक उस गुणोके पि-छाडी प्रीति रखतेहे ऊंर लोकोंके अनुरागसें सर्व संपत्ति पैदा होतीहे चतुर पुरषकों चा-हिये अपणे घरके धनका नफा नुकसांन कीया हुवा संग्रह वगेरह बात कोइके आगे नही कहणी क्योंके चतुर आदमी स्त्री आहार पुण्य धन गुण डुराचार मर्म ऊंर मंत्र ये आठ चीज अपणी छीपाके रखणी कोइ अजाण अदमी ऊपर लिखी आठ वातोंमेसें पूछे तो जूठ तो नही बोलणा लेकिन् एसा कहणा तुमारे इस बातसें क्या मतलब हे एसा उत्तर भाषासुम-तिसें देणा राजा गुरु वगेरे बडे आदमी इन-मेंकी बात पूछे तो सच्च २ जेसा होय वेसा कहदेणा क्योंके मित्रोके साथ सच्च बोलणा ऊंरतके साथ मीठा बोलणा डुस्मन साथ जूठ

लेकिन मीठा बोलणा ओर अपणे मालकके साथ सबोंकों अच्छा लगे एसा सच बोलणा सच बोलणा ये मनुष्यकुं बडा आधारहे कारणके सच बोलणेमें विश्वास पेदा होताहे इसपर एक दृष्टांतहे दिल्ली शहरमें एक मोहनसिंहनामका पारख रहताथा वो बडा सत्य-

पणेसें राजापर उपगार नहि करसके उंर राजाका दोस्त राजासें ज्यादा शक्तिवांन होय तो वो राजासें इर्षासे वैर विरोधकर बेठताहे इसवास्ते राजाका दोस्त मध्यम शक्तिवाला होणा चाहीये मित्र एसा होताहे सो आपदाकू दूर कर विषमवखतपर सहाय करताहे जिस वखतमें सगा भाइ उंर बाप उंर कोइभी स्वजन कांम नही देसकताहे रामचंद्रजी कहतेहे हे लक्ष्मण अपणेसें बडा उंर समर्थकी साथ प्रीति रखणी मुझे रुच तीनही कारण उसके घर जब आप जावे तब तो अपणा कुछ आदरसत्कार होता नही अगर वो जब अपणे मकानपर आवे तब उसकी सब तरेसें हाजरी भरणी पडे उंर धन खरच करणा पडे एसाहे तथापि जब कोइ बडा कांम आय पडे तो बडे अदमी विगर सुधरताभी नही उंरभी हरतरेके फायदेहे क्योंके यातो आप समर्थावान होणा या समर्थकूं हाथमें रखणा नही तो कार्य साधनका दुसरा रस्ता नहीहे बडे आदम्योकों चाहीये सो हलके आदमीके संगभी दोस्ती करणा कोइ काम एसा आय गिरताहे सो हलका आदमीसेही निकलणेका होताहे पंचा-

लेकिन मीठा बोलणा और आपणे मालकके साथ उनोंकों अच्छा लगे ऐसा सच बोलणा सच बोलणा ये मनुष्यकूं बडा आधारहै कार-णके सच बोलणेसें बिश्वास पेदा होताहै इस-पर एक दृष्टांतहै दिल्ली शहरमें एक मोहन-सिंहनामका पारख रहताथा वो बडा सत्य-

यनऐसें राजापर उपगार नहि करसके ऊर राजाका दोस्त राजासें ज्यादा शक्तिवांन होय तो वो राजासें इर्षासे वैर विरोधकर बेठताहे इसवास्ते राजाका दोस्त मध्यम शक्तिवाळा होणा चाहीये मित्र एसा होताहे सो आपदा-कू दूर कर विपमवखतपर सहाय करताहे जिस वखतमें सगा ज्ञाइ ऊर बाप ऊर कोइन्नी स्वजन कांम नही देसकताहे रामचंद्रजी क-हतेहे हे लक्ष्मण अपणेसें बमा ऊर समर्थकी साथ प्रीति रखणी मुझे रुच तीनही कारण उसके घर जब आप जावे तब तो अपणा कुछ आदरसत्कार होता नही अगर वो जब अपणे मकानपर आवे तब उसकी सब तरेसें हाजरी ज्ञरणी पमे ऊर धन खरच करणा पमे एसाहे तथापि जब कोइ वमा कांम आय पमे तो बमे अदमी विगर सुधरताज्ञी नही ऊरज्ञी हरतरेके फायदेहे क्योंके यातो आप समर्थावान होणा या समर्थकूं हाथमें रखणा नही तो कार्य सा-धनका डुसरा रस्ता नहीहे बमे आदम्योकों चाहीये सो हलके आदमीके संगज्ञी दोस्ती करणा कोइ काम एसा आय गिरताहे सो ह-लका आदमीसेही निकळणेका होताहे पंचा-

स्थानमें छिपाके जंगलमें बंधनसे पड़े हुवे
कबुतरोंके बंधन ऊंदरने तुड़ाये सुईका काम
तलवारसें बणे नहीं मित्रोंकूं शुद्ध मनसें नाइ
बंधनोंको मन्मानसें छोडेंको प्रेमसें नोक
चाहनेके कांनमें हमारे लोकोंके चतुराईमें नग

नही अगर विश्वास रक्खे तो धनकी हानी नही रक्खे तो अनर्थ होय विश्वासवाला या अविश्वासवालाहो लेकिन् एसा मित्र विरला होगा सो अपणी छुपाकर सोंपी चीजपर लोभ नही करे बडे २ सेठ साहूकारोंकी बुद्धि अस्त-विस्त होजातीहे पराइ जमा जब अपणे घरमें आपडे तो मनमें कहतेहें हे इष्टदेव ये घरवट धरणेवाला मरजावे तो तुझें प्रसाद चढाउंगा जरूरसें धन अनर्थकी जडहे लेकिन् जेसें अग्नि विगर तेसें धन विगर गृहस्थका काम चलता नही इसवास्ते चतुर पुरषोंकों चाहीये सो अ-ग्निकी तरे धनका जाबता करे एक धनेश्वर सेठ अपणा सब धन माल वेचकर आठ रत्न एक क्रोडमें खरीद कीया किसीकूं खबर नही पडे इसतरेसें अपणे मित्रकूं सोंप दीया पीछे आप धन कमाणेकूं परदेश गया वहां बहोत दिन रहा अंतमें बेमारीके वस मरणे लगा तब लो-कोनें पूछा कुछ समाचार अपणे बेटोसें कहणा होय तो कहदो तब सेठ बोला इहां जो मेंनें बहोत धन कमाया सो तो लोकोमें उधार देणाहे सो तो पुत्रोंकों मिलणा मुसकिलहे ले-केन् एक क्रोडके आठ रत्न मेरे मित्रके पासहे

पासमें होगा जब चोर माल लेकर चले गये सेठ अपणी वस्तीमें आया एकदिन वे सब चोर बहोतसा मालताल लेकर आये तब सेठ उन चोरोकूं बोला हमारे रुपये लाउ चोर बोले हमने कब रुपे लीयेथे आखिरकों लम्ते २ सरकारमें गये हाकम पूछणे लगा कोइ गवा साक्षीहे सेठ बोला एक मीन्नीहे चोर बोले सरकार वणीया सरासर जूठाहे जंगलकी लोंकमीकों मीन्नी वतलाताहे इतना सुणतेही हाकिम समजगया के वणिया सच्चाहे लेकिन बमा धूर्त्तहे उसी वखत सेठके सब रुपे दिलवा दिये गवाही एसा काम देताहे किसीमें जमा विगर गवा धरदी गइहो उर वो बदलगया होय तो धरवट निकालणेकी चतुराइ वेस्या जेसी करणी वो दृष्टांत एसाहे एक पारीक ब्राह्मनके पास दस हजार मोहरेंथी वो किसीका विश्वास करे नही उस गांवके बाहिर एक जोगीकी झूंपमीथी वो बावा वमानेक उर पेसा नही रखताथा किसीने रोटी लायदी तो खायली नही तो किसीके घर जाता नहीथा अलख २ जपताथा न किसीके पाससें कुछ मांगता कोइ रुपया देता तो लेता नहीथा एक

तो पुत्रोंमें कहना कि उन्होंने ऐसा कहकर सेठ
भगवान् महावीर [illegible] बिना कुछ नहीं होता
[illegible] पुत्रोंको [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जिनके [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] हुआ था [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] नहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पासमें होगा जब चोर माल लेकर चले गये सेठ अपणी वस्तीमें आया एकदिन वे सब चोर बहोतसा मालताल लेकर आये तब सेठ उन चोरोकूं बोला हमारे रुपये लाउ चोर बोले हमने कब रुपे लीयेथे आखिरकों लम्ते २ सरकारमें गये हाकम पूछणे लगा कोइ गवा साक्षीहे सेठ बोला एक मीन्नीहे चोर बोले सरकार वणीया सरासर जूठाहे जंगलकी लोंकमीकों मीन्नी वतलाताहे इतना सुणतेही हाकिम समजगया के वणिया सच्चाहे लेकिन बमा धूर्त्तहे उसी वखत सेठके सब रुपे दिलवा दिये गवाही एसा काम देताहे किसीमें जमा विगर गवा धरदी गइहो उर वो बदलगया होय तो धरवट निकालणेकी चतुराइ वेस्या जेसी करणी वो दृष्टांत एसाहे एक पारीक ब्राह्मनके पास दस हजार मोहरेंथी वो किसीका विश्वास करे नही उस गांवके बाहिर एक जोगीकी झूंपमीथी वो बावा वमानेक उर पेसा नही रखताथा किसीने रोटी लायदी तो खायली नही तो किसीके घर जाता नहीथा अलख २ जपताथा न किसीके पाससें कुछ मांगता कोइ रुपया देता तो लेता नहीथा एक

लंगोटी उर तुंबा चिमटा रखताथा उस ब्राह्म-
णकों तीर्थ जाणेकी जरूरी नइ मनमें विचारणे
लगा [illegible] णियोकुं सौं पुगा तो खाजायगें कारण
[illegible] है [illegible] पकडी तो भरणेवाला मांगे
नही [illegible] निकाले [illegible] बणिया देता नही
[illegible] दुनियामें [illegible] हुवे ॥
[illegible] ॥

में क्या करुं इसके लालचसें कोइ मुझें मार जायगा इस बखेमेको दूर रख ज्यों ज्यों ब्राह्मण बहोतही नम्रतासे पांव पकमके आजीजी करणेलगा दुनियामें आमे हाथही घी गिरताहे तब जोगी बोला उस आलेमें इस थेलीकों रखके तालाबंध करके कूंची तेरेपास लेजा किसीसें कहणा मत तब वो ब्राह्मण खुस होकर इसी तरेसें धरके चलधरा थोमे दिनवाद योगीने थेली निकालकर विचारणे लगा एक २ मोहरके अगर पच्चीस २ रूपे वटेगे तो अढाइ लाख होगा होते धन तकलीप पाणा ये वे अक्कलीहे इसवातका कोइ गवा साक्षी तो हेनही यह धन तो मेरा हो चूका एसा विचारकर जोगी अब गृहस्थोसें कहणेलगा बाबा एक जोगी यानी लटका हासिल कीयाहे पतवाके तो देखें उन लोकोकें पाससें एक लामसाही पेसा मंगाके बावाजी कुछ जंगलकी पत्तीमें घरके अंगीठीमें पहले मोहर धर दीया करे ठंमा हुये वाद वो मोहर निकालकर उन गृहस्थोके हाथ विकवाणा सरू करा बावा बोले ओ बच्चा एक मठ तो बनवा माले नांम रहजायगा अब तो बावेकूं रसाणी किमीयागर जाणा-

तब उसने सब हकीगत कही वेस्या बोली मत घबराओ में मोहरें पीछी दिला देतीहूं लेकिन में जिसवखत उहां जाके बेठूं उस वखत तुम उस जोगीसें मोहरें मांग लेणा फोरन देदेगा एसा कहके वो वेस्या पांचसात संदूकोमें पत्थरोंकों भरके कुलफ लगाकर बंधकर उसका बीजक मोट कीमत रुपे आमरेका बनाया और जमाउ गहणा मोहरे रुपया वगेरे एसी नगदायतकी

नही उर आपकी नेकनांमी दुनियामें मसहूरहे सो भरोसा जांणके ये क्रोम रुपयेका सामान तो इस संडुकोमेंहे सो सबमें खोल २ के दिखातीहूं एसा कहकर पेसतर लाख दस एकका जो सामानकी गहणोकी संदूक खोलके दिखाणे लगी देखतेही बावाजी तो दंग होगये उर मनमें विचारणे लगे अब्बी दिनदसा जागी अब इस मालमेंभी मेरे बहोत सामाल हाथ लगेगा कीमती नग निकालकर हलके जमवा दूंगा कमसेकम वीस लाखका इसटेट तो मेरा होचूका इतनेमें तो वो ब्राह्मन आकर बोला बावाजी आजके ठ वर्ष पेस्तर जो मेनें जोपमीमें दस हजार मोहरे आपकेपास रक्खीथी सो दीजीये बावाजीने विचारा जो में नामुकर जाउंगा तो ये सेठको धनमें मनचिंता केसें पेस होगा तब बोला हां भाइ लेजा जट उठके वो थेली दस हजारकी लाके देदी उर बोला ले भाइ तेरी संभाल ले ब्राह्मण गिणकर थेली कबजे करी इतनेमें तो दोमती २ आयकर दासी बोली वधायजे २ सेठाणीजी साहिब सेठसाहिबकी सवारी घरपर आयगइ इतना सुणतेही वेस्या एकदम हसती २ जपकेसें वो

[illegible] उसने सब हकीगत कही वेश्या बोली मत [illegible] मैं मोहरें पीछी दिला देतीहूं लेकिन [illegible] जिस वक्त उहां जाके बैठूं उस वक्त तुम [illegible] पेटीमें मोहरें मांग लेना फोरन् देदेगा [illegible] हांडूकोंमें पत्थरोंकों [illegible] उपर लगा कर बंधकर उसका [illegible] [illegible] आगे का बनाया और [illegible]

नही उर आपकी नेकनांमी दुनियामें मसहूरहै सो भरोसा जांणके ये क्रोड रुपयेका सामान तो इस संडुकोमेंहै सो सबमें खोल २ के दिखातीहूं एसा कहकर पेसत्तर लाख दस एकका जो सामानकी गहणोकी संदूक खोजके दिखाणे लगी देखतेही बावाजी तो दंग होगये उर मनमें विचारणे लगे अही दिनदसा जागी अब इस मालमेंभी मेरे बहोत सामाल हाथ लगेगा कीमती नग निकालकर हलके जडवा दूंगा कमसेकम वीस लाखका इसटेट तो मेरा होचूका इतनेमें तो वो ब्राह्मन आकर बोला बावाजी आजके ७ वर्ष पेस्तर जो मेनें झोपडीमें दस हजार मोहरे आपकेपास रक्खीथी सो दीजीये बावाजीने विचारा जो में नामुकर जाउंगा तो ये सेठको धनमें मनचिंता केसें पेस होगा तब बोला हां भाइ लेजा झट उठके वो थेली दस हजारकी लाके देदी उर बोला ले भाइ तेरी संभाल ले ब्राह्मण गिणकर थेली कबजे करी इतनेमें तो दोडती २ आयकर दासी बोली वधायजे २ सेठाणीजी साहिब सेठसाहिबकी सवारी घरपर आयगइ इतना सुणतेही वेस्या एकदम हसती २ झपकेसें वो

तब उसने सब हकीगत कही वेश्या बोली मत घबराओ में मोहरें पीछी दिला देतीहूं लेकिन में जिसवखत वहां जाके बेठूं उस वखत तुम उस जोगीसें मोहरें मांग लेणा फोरन् देदेगा ऐसा कहके वो वेश्या पांचसात संदूकोंमें पत्थरोंको भरके ऊपर [illegible] लगाकर [illegible] उसका

नही ऊंर आपकी नेकनांमी डुनियामें मसहूरहे सो ज्ररोसा जांणके ये क्रोम रुपयेका सामान तो इस संडुकोमेंहे सो सबमें खोल २ के दिखातीहूं एसा कहकर पेसतर लाख दस एकका जो सामानकी गहणोकी संदूक खोलके दिखाणे लगी देखतेही बावाजी तो दंग होगये ऊंर मनमें विचारणे लगे अठी दिनदसा जागी अब इस मालमेंज्री मेरे बहोत सामाल हाथ लगेगा कीमती नग निकालकर हलके जम्वा दूंगा कमसेकम वीस लाखका इसटेट तो मेरा होचूका इतनेमें तो वो ब्राह्मन आकर बोला बावाजी आजके ठ वर्ष पेस्तर जो मेनें झोपमीमें दस हजार मोहरे आपकेपास रक्खीथी सो दीजीये बावाजीने विचारा जो में नामुकर जाऊंगा तो ये सेठको धनमें मनचिंता केसें पेस होगा तब बोला हां ज्राइ लेजा झट ऊठके वो थेली दस हजारकी लाके देदी ऊंर बोला ले ज्राइ तेरी संज्राल ले ब्राह्मण गिणकर थेली कबजे करी इतनेमें तो दोम्ती २ आयकर दासी बोली वधायजे २ सेठाणीजी साहिब सेठसाहिबकी सवारी घरपर आयगम इतना सुणतेही वेस्या एकदम हसती २

विधाताका कोप होताहे तब रसायण जूवा फाटका अंजनसिद्धि ओर यक्षणीकी गुफामें प्रवेश करणेकी बुद्धि होतीहे जो आदमी मंदिरकी धर्मकी सच्ची या झूठी सोगन खातेहे उसका बोधवीज जाते रहताहे ओर अनंत शंशार रुलताहे किसीकी जमानत नही देणी कारण जमानतभी एक आपदाहे ये पांच चीज आपदाका कारणहे घरमें दलद्री होकर दो ओरत रस्तेपर खेत जमानत देणी गवाही भरणी ओर दो तरेकी खेती विवेक पुरषोंको चाहीये सो वणे जहांतक जहां रहता होय उहांही व्यापार करणा जिस्सें स्वजनोसें विछोहा नही होवे धर्मभी अछी तरेसें वण आताहे जो आजीविका नही होती दीखे तब तो परदेस जाणेकी तकलीप उठावे कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन दलद्री रोगी मूर्ख मुसाफर ओर हमेसां पराइ नोकरी करणेवाला ये जीतेभी मरे जेसेहें एसा समजणा जो परदेस जाणेकी जरूरी होय तो आप अथवा अपणे लडकोंसें परदेसमें व्यापार नही करवाणा अपणे परीक्षावंत खातरीदार मूनीमसें व्यापार चलाणा कभे कारण योगसें परदेस जाणा पडे तो हा-

ब्राह्मण अंधा गाय पूज्य गुरु आदि राजा गर्भवंती स्त्री उर सिरपर बोजा उठाया हुवा आदमी इतनोकों पहली रस्ता देकर पीछे आप जाणा कच्चा अन्न पक्का अन्न पूजणेयोग्य मंत्रका मंत्रल नांख दीया गया एसा उबटणा स्नानका पांणी खून उर मराहुवा कलेवर थूक श्लेष्म विष्टा मूत जलती हुइ अग्नि साप मनुष्य शस्त्र इतनी चीजों कोइ वखतभी उल्लांघणी नही विवेकी पुरष नदीके किनारे तक गाय बांधनेके ठिकाणेतक वरू वगेरेके दरखततक तलाव सरोवर कूआ वगीचा वगेरे आवे उहांतक मित्रादिकोकों पोहचाणे [illegible]णा चाहीये अपणा भला चाहणेवाले आ[illegible] रातकूं दरखतके नीचे रहणा नही अंजा[illegible] अदमीके संग अथवा गोलेके दासके संग रस्ते चलणा नही दो पहरका तथा आधी रातका रस्ते चलणा नही लेकिन् रेल तथा अग्निबोट टालकर क्रूर अदमी रखवाली करणेवाला चुगल सिल्पी अर्थात् कारीगर अयोग्य मित्र इनोकेसंग बहोत वातचीत नहि करणी वे वखत इनोके संग आणा जाणाभी नही रस्ते चलते चाहे जितना थकेला चढजाय तोभी भेसा गधा गाय इनोपर नहि चढणा हा-

रत आणेकी जगह मसाण सूनवाम बजार अ-
थवा छिलका या सूका घास विखरा होय
जहां जाते हुये बहोत तकलीप होय जहां
कचरा मालते होय अकूरमा खारी जमीन दर-
खतके शिखरपर पहामकी टूंकपर नदी जेर
कूवेके कांठेपर जहां राख कोयला बाल खोपरी
वगेरे पमी होय इतना ठिकाणोमें ज्यादे खमा
नही रहणा बहोत महनतभी होय तोभी जो-
काम करणा होय सो करणाही अगर तकली-
पसें मरेगा तो पुरुषार्थका फल जो धर्म अर्थ-
काम ये तीनोंही मिलसकता नही जो अदमी
आमंबर रहित होताहे उसका अनादर हो-
ताहे इसवास्ते बुद्धिवानोंकूं जरूर आमंबर र-
खणा परदेस जाणेसें अपनी इज्जत माफक
आमंबर अपणे धर्मकी नेष्टा रखणी इस वातोंसें
बमाइ बहुमान जेर मनमें विचारे हुये कामकी
सिद्धी परदेसमें बहोत लाभ होय तोभी ज्यादे
नही रहणा कारण पिछामी मकानकी व्यवस्था
विगम जातीहे काम सिद्धीकेवास्ते पंचपरमेष्टीका
ध्यांन तथा गौतमका नांम लेणा कितनेक चीजे
देव गुरु तथा ज्ञांनकेवास्ते काम आवे एसी
तरेकी रखणी क्योंके धर्ममें धन लगाणेसें ध-

नकी सफलता होतीहै धर्मके सात क्षेत्रोंमें धन लगानेका मनोरथ करणा जोकी धन पेदा करते आरंभ करणा पडे उसकी निवृत्तिके वास्ते निरंतो आदमीयोंकों चाहिये सो नित बढे २ मनोरथ करना इस कारण मनुष्यकी बुद्धि जैसी होती वैसीही लोग उसीही तरेकी काम करनेका शौक करणादि धन काम चेर गया ये नीतिका होणा हुआ सर्व वाजिबलात निष्फल

ब्राह्मण एक रजपूत एक वणिया एक सुनार ए
च्यारजणे आपसमें दोस्तथे वो च्यारोंही धन
कमाणे परदेस चले रातकूं एक उद्यानमें रहे
उस जगे रातकूं दरखतके सोनेका पोरसा ल-
टकता देखा च्यारोंमेंसें एक बोला धनहे तब
स्वर्ण पोरसा बोला धन अनर्थका मूलहे तब
तीनोंनें तो उसका लालच छोड दिया लेकिन्
सुनार बोला नीचे गिर तब स्वर्णपुरष नीचे
गिरा तब सुनार उसकी अंगली काटली वाकीके
स्वर्णपोरसेंको खड्डेमें डालदिया पीछे उन च्यार-
जणोंमेंसें दो अदमी खानपान लाणेकों गांममें
गये ओर दोजणे बाहिर रहे तब गांममें गये
सो जहर मिलाके खांनपांन लाये मनमें वि-
चारा वो दोनों इसके खाणेसें मरजायगें तब
पोरसा अपणे दोनोंके रहजायगा उधर उन
दोनोने विचार कीया वो जब सहरमेंसें आवेगें
तब उनोकों तलवारसें मारडालेगें तब ये पोरसा
अपणे दोनोंके रहजायगा आखिरकों उन दो-
नोंकों उनोनें शस्त्रसें मारदिया ओर वो दोज-
णोनें उनोकों मारके मिठाइ खाइ सो वोभी
दोनुं मरगये ये पापऋद्धि कहलातीहे इसवास्ते
हमेसां देव अरिहंतका पूजन अन्नदान वगेरह

नहीं मकदूना होतीहै धर्मके सात क्षेत्रोंमें धन लगानेका मनोरथ करणा जोकी धन पैदा करते आरंभ करणा पडे उसकी निवृत्तिके वास्ते नि- ऐसी भावनी हीं चाहिये सो नित्त उठे २ मनो-

ब्राह्मण एक रजपूत एक वणिया एक सुनार ए च्यारजणे आपसमे दोस्तथे वो च्यारोंही धन कमाणे परदेस चले रातकूं एक उद्यानमें रहे उस जगे रातकूं दरखतके सोनेका पोरसा लटकता देखा च्यारोंमेंसें एक बोला धनहे तब स्वर्ण पोरसा बोला धन अनर्थका मूलहे तब तीनोनें तो उसका लालच छोड दिया लेकिन् सुनार बोला नीचे गिर तब स्वर्णपुरष नीचे गिरा तब सुनार उसकी अंगली काटली वाकीके स्वर्णपोरसेंको खड्डेमें गालदिया पीछे उन च्यारजणोंमेंसें दो अदमी खानपान लाणेकों गांममें गये ओर दोजणे बाहिर रहे तब गांममें गये सो जहर मिलाके खांनपांन लाये मनमें विचारा वो दोनों इसके खाणेसें मरजायगें तब पोरसा अपणे दोनोंके रहजायगा उधर उन दोनोने विचार कीया वो जब सहरमेंसें आवेगें तब उनोकों तलवारसें मारगालेगें तब ये पोरसा अपणे दोनोंके रहजायगा आखिरकों उन दोनोंकों उनोनें शस्त्रसें मारदिया ओर वो दोजणोनें उनोकों मारके मिठाइ खाइ सो वोभी दोनुं मरगये ये पापऋद्धि कहलातीहे इसवास्ते हमेसां देव अरिहंतका पूजन अन्नदान वगेरह

ताही जाताहे जीवण मल नाहटेके अफीमके फाटकेमें नगद असी हजार रुपे पासमें होगये तब मोहनलाल गोलछेनें कहा अब जीवणमल फाटकेका सट्टा छोडकर जेपुरमें सराफी दुकान करले सो लखपती जेसा रुजगार खरच चलता रहेगा जीवणमल बोला लाख रुपया होणेसें फाटका छोडूंगा आखिरकों यह हाल हुवा सो वो सब धन वरबाद होकर हजारो रुपेका करजदार होकर आखिरकों बरबाद होगया ये बात मेनें प्रतक्ष देखीहे जो अदमी आस्याका दास भया वो जगतका दास होजाताहे और जिसनें तृष्णा आसा जीतली उसनें जगत् जीतलिया गृहस्थोंकों चाहीये सो धर्म अर्थ काम इन तीनोंकों आपसमें बाधा नही पोहचे एसा सेवन करणा अपणे २ वखतपर सब करणा निकेवल विषयसुखमें मग्न एसा कोण आदमीहें सो आपदामें नही पडताहे विषय मग्न आदमीके धनकी धर्मकी शरीरकी लोक लाजकी नुकशानी होतीहे धर्म और काम दोनोकों छोडके जो कष्ट करके धन पैदा करतेहें वो धन दुसरेही भोगतेहें जेसे सिंह हाथीकूं मारकर फकत पापकाही भागी होताहे अर्थ

पुण्य नथा कोइ वखत पर संघ पूजा साधर्मी
वात्सल्य वगेरह धर्मकाम करके लक्ष्मीकूं सुकृ-
तार्थमें लगाणा हमेसा थोडा २ पुन्य करणाही
नहीये थोडा होय तो थोडेमेसें थोडाही ल-
गाणा धर्मके काममें ढील नही करणी भाग्य-
वानकी इर्ष्या न करणी द्रव्य पेदा करणेका
उद्यम हमेसां करणा वणिया वेश्या कवि भट्ट
चोर ठग ब्राह्मण इतने अदमी जिसदिन कुछ
नही मिले तो दिन निष्फल मानते है चोथी
आरंभमें उद्यम छोडणा नही मान हाथमें लि-
याहै तो अदबी छोडणी नही संपदा मिलणेसेंही
अकड़णी नही दशा सदा न रहवे उसका दृष्टांत

ताही जाताहे जीवण मल नाहटेके अफीमके फाटकेमें नगद असी हजार रुपे पासमें होगये तब मोहनलाल गोलछेनें कहा अब जीवणमल फाटकेका सट्टा छोड़कर जेपुरमें सराफी दुकान करले सो लखपती जेसा रुजगार खरच चलता रहेगा जीवणमल बोला लाख रुपया होणेसें फाटका छोडूंगा आखिरकों यह हाल हुवा सो वो सब धन वरवाद होकर हजारो रुपेका क़रजदार होकर आखिरकों वरवाद होगया ये बात मेनें प्रतक्ष देखीहे जो अदमी आस्याका दास भया वो जगतका दास होजाताहे ओर जिसनें तृष्णा आसा जीतली उसनें जगत् जीतलिया गृहस्थोंकों चाहीये सो धर्म अर्थ काम इन तीनोंकों आपसमें बाधा नही पोहचे एसा सेवन करणा अपणे २ वखतपर सब करणा निकेवल विषयसुखमें मग्न एसा कोण आदमीहें सो आपदामें नही पड़ताहे विषय मग्न आदमीके धनकी धर्मकी शरीरकी लोक लाजकी नुकशानी होतीहे धर्म ओर काम दोनोकों छोड़के जो कष्ट करके धन पैदा करतेहें वो धन दुसरेही भोगतेहें जेसे सिंह हाथीकूं मारकर फकत पापकाही भागी होताहे अर्थ

उर काम इन दोनोंकों रोकके जो फक्त धर्म-
हीं सेवन करतेहैं वो साधू मुनिराजकाही
धर्महै गृहस्थका नही गृहस्थोकूंतो चाहीये
सो धर्मकूं बाधा उपजायकर अर्थकूं उर कामकूं
सेवन नही करणा जैसे खेत बोणेकूं रखे हुये
बीजोंकों जो खाय जाताहै एसें अधर्मी
पुरुषका अंतमें कल्याण नही होताहै जो अर-
थी परलोक नही बिगाडै उर इस लोकका
सुख जोगे वोही सुखी कहलाताहै जैसेंइ धनकूं
बिगाडकर धर्मकूं उर कामकूं सेवन करताहै वो
कर्जदार होजाताहै जैसेंइ कामकूं बाधा पो-
हुंचायकर धर्मकूं उर धनकूं सेवन करताहै [illegible]

रकूं दुख देकर धन जमा करे वो कंजूस कृपण कहलाताहे योग्य ठिकाणे खरच नही करे वोभी कृपण कहलाताहे इसमें क्षणिक विषयासुखमें आसक्त और मूल भक्षक ये दोनोंही धन खो-णेवालेहे इय दोनोंही पीछे पछतातेहे कृपणकी जमा पराइ कहलातीहे राजा भाइबंध या जमीन या चोर वगेरे लोक कंजूसका धन खा-तेहें उसका धन धर्ममें अथवा काममें लगता नहीहे जिसके धनके भाइबंध मालक होय चोर लूंटे किसीभी बलसें राजा ले लेवे अंगा-रमें जल जावे जलमें डूबजाय जमीनमें रह-जाय खोटी चाल चलणमें उडादेवे एसा जो धन बहोतोके ताबेमें रहेहुयेकूं धिकार हो जेसें माल जादी औरत अपणे पुत्रको लाड लडावते हुये पतिकूं हसतीहे तेसें मोत शरीरके रक्षककूं हसतीहे जमीनहे सो धनके रक्षककूं हसतीहे कीडियोका जमा कीया हुवा धान मखीयोका जमा कीया हुवा सहत कंजूसका जमा कीया हुवा धन ये तीनोंही पराये काममें आतेहे इसवास्ते गृहस्थकूं चाहीये सो धर्म अर्थ और कांम इन तीनोंकों बाधा नही पोहचावे जो कर्मयोगमें बाधा पडे तो इस मुजब हिफाजत

करणा कामकी जो गवाइ नही मिले तो धर्म-
की और धनकी रक्षा करणी कारण इन दोनों-
की रक्षा करणेवालोंकूं विषयसुख मिलनी सक-
नाहै नेमेंड अर्थ और काम दोनोंकी जो गवाइ
नही मिले तो धर्म तो जरूरही करणा कारण
धनकी जड धर्महै दीनतामें जीव मांगनेकी
अपणी आजीविका चलाता और धर्म क-
रना नाम तो मनमें विचारणाहीमें भगवानकूं
तो मनुष्य जन्म पायकरके इन तीनोंका पा-
लन नही करताहै उसकी उमर पशुकी तरै
निकमी जातिहै जिसकी धनकी आवंद होय
उसमें एक भाग जमा करणा दूसरा धर्म तीसरा
विषयका आचार और आगमें लगाणा तीन भाग

लेकिन् वखत पमनेपर सत्पुरष दोनोंकों तिनखे बराबर गिणतेहे १ यशका फेलाव करणा होय २ दोस्ती करणी होय ३ अपणी प्यारी स्त्रीके वास्ते कुछ कांम होय ४ अपणे निर्धनजाइबंधुअंकों सहाय करणा होय ५ धर्मकाम करणा होय ६ विवाह करणा होय ७ डुस्मनका क्षय करणा होय ८ अथवा कोइ संकट आगया होय इत्यादिक कांममें स्याणे आदमी धन खरच करणेकी गिणती रखते नहीहे चतुर आदमीका एक बदामजी अगर खोटे रस्ते चला जाय तो हजार रुपया गया एसा समजतेहे वो अदमी अच्छे रस्ते आतेहे एसा आदमी अगर क्रोमो रुपया खुल्ले हाथसें खरच करे तोजी धन खूटता नही इसपर एक दृष्टांतहे एक सेठके बेटेकी बहू नइ परणी हुईथी उसनें एकदिन अपणे सुसरेकूं चराकके अंदरसें नीचे गिरे हुये तेलके बुंदसें अपणी जूती चुपमते देखकर दिलमें विचारणे लगीके मेरा सुसरा कंजूसहे यह बमी कसरहे तब उसने पारख करणेकूं एसा वाहना कीया के मेरा सिर डुखताहे एसा कहती हुइ रोणे लगी तब सेठ बहोतही इलाज करवाया लेकिन् जांणकर करे

जिसका फायदा कैसें होय तब बहु बोली ऐसें मेरा सिर बहोतसीवेर दुखा करेहे आखिरकों बढ़िया मोतीयोंकों पीसके लेप करणेसें मिट-जाताहै ये बात सुणतेही सेठ बडा प्रसन्न हो-कर ऐसे बढ़िया मोती मंगाकर पीसणेकी तया-

थिर होगइ लक्ष्मीकी एसी बात सुणके सेठने विचार कीया कदास मेरा व्रतमें भंग न पमे एसें भरसें नगर छोम बाहिर चलागया इतनेमें विना पुत्र नगरीका राजा मरगया उसके पिछामी मंत्रीयोंने पाट हस्तीकी शुंममे अभिषेक कलस दीया जिसपर माले वोही राजा आखिरकों उसनें विद्यापति सेठका अभिषेक कीया तब देवतोंने आकासवाणी करी हे सेठ यह राज्य तो तुजें करणाही होगा तब सेठ राज्य सिंहासणपर ऋषभ देव अरिहंतकी मूर्तिकूं बेठायकर आप राजकाज चलाया अनुक्रमसें पांचमें भव मोक्ष गया न्यायसें धन कमाणेवालेका कोइ भक नही रखताहे जगे २ तारीफ होतीहे प्राये करके नुकशांन नही होताहे सुख समाधि दिन २ बढते जातीहे इसवास्ते न्यायवंतपणेका धन दोनों भवमें सुखदाईहे धर्मी पुरष शुद्ध चलणसें धीरजसें वर्त्तावा करतेहे लेकिन पापी अदमी कुकर्मी होणेसें सब जगे शंकासें वर्त्तावा रखताहे इसपर दृष्टांतहे देव उर यश ये दोय नांमके सेठ बहुत प्रीतिसें साथ २ फिरतेथे कोइ सहरमें रस्तेमें पमा हुवा रत्नसें जमा हुवा कुंमल उन दोनोनें देखा देव तो

श्रावकथा इसवास्ते पराया धन लेणेका नियम होणेसें पीछा फिरा यशादी उसके संग पीछा फिरा लेकिन मनमें विचारणे लगा पमी चीज उठानेमें क्या दोषहै तब देव सेठकी नजर चुकायकर कुंमल उठा लीया फेर मनमें विचार-णे लगा मेरा मित्र देव है सो धन्यहै जिसमें ऐसी क निर्लोभता गुणहै लेकिन केइएक दिन [illegible] इनमें उसकूं आजीविका देऊंगा एसा विचार यशमित्र यश कुंमलके धनसें व्यापार कि-या बहोत नहीं किया अनुक्रमसें दोनुं श्रावी

तेजी आइ सो देवसेठके मालमें चोगुणा लाभ होगया अन्यायके धनका एसा हाल देखकर श्रावक व्रत यशनेभी अंगीकार करा इस तरेसें न्यायसें कमाया धनका अगर दांनभी दीया जाय तो लेणेवालेके बहोत वढोतरी होतीहे इसपर दृष्टांतहे चंपा नगरीमें सोमनामे राजा था उसनें अच्छे पर्वपर दांन करणेकूं बहोत धन जमा कीया तद पीछे अपणे प्रधानकों पूछा अहो मंत्री दांन लेणेवाला सुपात्र चाहीये तब मंत्री बोला इस नगरीमें एक ब्राह्मणहे लेकिन हे स्वामी न्यायोपार्जित धन मिलणा मुसकिलहे तेसेंइ सुद्धमनवाला उर योग्य उर गुणवान एसा पात्र ये दोनोका योग मिलना तो बहोतही कठणहे तब सोमराजा न्यायसें धन कमाणेकी इच्छासें वेष बदलकर कोइ नही पहचाणे इस मुजब वणियेकी दुकानपर जाके मजूरी करके आठ मोहरे कमाइ पर्व आणेसें सब विप्रोकों निहुंता दीया उस सुपात्रकों नहुंता देणे मंत्रीकूं भेजा तब वो ब्राह्मण बोला हे मंत्रवी जो ब्राह्मन लोभके वश राजासें दांन ले वो तमिस्रा घोर नर्कमें पडके दुखी होय राजाका दांन सहतमें जहर मिला जेसा हे वख-

तेजी आइ सो देवलोकके मालमें चोगुणा लाभ होगया अन्यायके धनका एसा हाल देखकर श्रावक व्रत यशनेभी अंगीकार करा इस तरेसें न्यायसें कमाया धनका अगर दांनभी लीया जाय तो लेणेवालेके बहोत वढोतरी होतीहे इसपर दृष्टांतहे चंपा नगरीमें सोमनामे राजा था उसनें अच्छे पर्वपर दांन करणेकूं बहोत धन जमा कीया तद पीछे अपणे प्रधानकों पूछा अहो मंत्री दांन लेणेवाला सुपात्र चाहीये तब मंत्री बोला इस नगरीमें एक ब्राह्मणहे लेकिन हे स्वामी न्यायोपार्जित धन मिलणा मुसकिलहे तेसेंइ सुद्धमनवाला अर योग्य अर गुणवान एसा पात्र ये दोनोका योग मिलना तो बहोतही कठणहे तब सोमराजा न्यायसें धन कमाणेकी इच्छासें वेष बदलकर कोइ नही पहचाणे इस मुजब वणियेकी दुकानपर जाके मजूरी करके आठ मोहरे कमाइ पर्व आणेसें सब विप्रोकों निहुंता दीया उस सुपात्रकों नहुंता देणे मंत्रीकूं भेजा तब वो ब्राह्मण बोला हे मंत्रवी जो ब्राह्मन लोभके वश राजासें दांन ले वो तमिस्रा घोर नर्कमें पडके दुखी होय राजाका दांन सहतमें जहर मिला जेसा हे वख-

बातकथा इसवास्ते परागा भन लोगोंका नियम हुलोगोंसें पीछा फिरा गया जी इसके संग पीछा फिरा लेकिन मनमें विचारणे लगा गयी भी [illegible]

तेजी आइ सो देवसेठके मालमें चोगुणा लाभ होगया अन्यायके धनका एसा हाल देखकर श्रावक व्रत यशनेभी अंगीकार करा इस तरेसें न्यायसें कमाया धनका अगर दांनभी लीया जाय तो लेणेवालेके बहोत वढोतरी होतीहे इसपर दृष्टांतहे चंपा नगरीमें सोमनामे राजा था उसनें अच्छे पर्वपर दांन करणेकूं बहोत धन जमा कीया तद पीछे अपणे प्रधानकों पूछा अहो मंत्री दांन लेणेवाला सुपात्र चाहीये तब मंत्री बोला इस नगरीमें एक ब्राह्मणहे लेकिन हे स्वामी न्यायोपार्जित धन मिलणा मुसकिलहे तेसेंइ सुद्धमनवाला ओर योग्य ओर गुणवान एसा पात्र ये दोनोका योग मिलना तो बहोतही कठणहे तब सोमराजा न्यायसें धन कमाणेकी इच्छासें वेष बदलकर कोइ नही पहचाणे इस मुजब वणियेकी दुकानपर जाके मजूरी करके आठ मोहरे कमाइ पर्व आणेसें सब विप्रोकों निहुंता दीया उस सुपात्रकों नहुंता देणे मंत्रीकूं भेजा तब वो ब्राह्मण बोला हे मंत्रवी जो ब्राह्मन लोभके वश राजासें दांन ले वो तमिस्रा घोर नर्कमें पड्के दुखी होय राजाका दांन सहतमें जहर मिला जेसा हे वस्त-

नपर चाहे पुत्रका मांस खावे सो श्रेष्ठ लेकिन राजापास दान नहि लेणा चक्रवर्तिपास दान लेणा दस हिंसा समान राजकेपास दान लेणा हजार हिंसा समान राजापास दान लेणा सो दस हजार हिंसा समान एसा स्मृतियों का तथा पुराणों का कहनाहे इसवास्ते मैं राजदान नहीं लेऊंगा तब मंत्री बोला हे स्वा- मिन् प्रभुजी आप के निमन्त्रणामेंही पेदा किया अन्नका दान दिया उसवास्ते इसमें कुछ दोष नहीं [illegible] मंत्री [illegible] [illegible] निमन्त्रण दीया [illegible] जिनमें पूजा नहीं सो आज [illegible]

चार भंग होतेहें जिसमें पहला भेद एसें हे यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें उत्कृष्ट देवतापणा युगलियोमें मनुष्यजन्म उर सम्यक्त वगेरेका लाभ होताहे अंतमें मोक्षसुख होताहे जेसे धन्नासार्थवाहने घीका दांन देणेसें साधूउंको तेरमे भवमें ऋषभदेव तीर्थंकर हुवा शा-लिभद्र क्षीरके दांनसें हुवा २ न्यायसें पेदा कीया धन उर कुपात्रोंको देणा ये दूसरा भंगहे यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें इससें कोइ २ भवमें देखता लाभ विषयसुखका हो-ताहे तोभी अंतमें फल कम्वे लगतेहें इस जगे लाख ब्राह्मनोकों जीमाणेवाले ब्राह्मनकी तरे वो दृष्टांत एसाहे एक ब्राह्मन हमेसां ब्राह्मनोकों जीमाते २ लाख ब्राह्मन जीमाया उर विषय-सुख भोगता हुवा मरके भद्रजातीका सेचनक नामका हाथी हुवा उर उसही जगे ब्राह्मणो-कों जीमाये वाद जो अन्न वचता सो एक ग-रीब दलद्री ब्राह्मन सुपात्रोंकों दान देदेता वो गरीब ब्राह्मन उहांसें मरके सो धर्म देवलोक गया उहांका सुख भोगके आयुष्य पूर्णकर श्रे-णिक राजाके नंदिखेण नामका पूत्र हुवा उसकूं देख सेचनक हाथीकूं जातिस्मरण ज्ञांन हुवा

नपर चाहे पुत्रका मांस खावे तो श्रेष्ठ लेकिन राजापास दांन नहिं होगा चक्रवर्तीपास दांन होगा दस हिंसा समान राजकेपास दांन होगा हजार हिंसा समान राजापास दांन होगा और दश हजार हिंसा समान ऐसा स्मृतियोंका तथा पुराणोंका वचन है इसवास्ते मैं [illegible] नहीं लेऊंगा तब मंत्री बोला है सा- [illegible] अनुभूति आपके निमन्त्रणार्थे पेश किया [illegible] दान लिया [illegible] इसमें कुछ दोष

चार भंग होतेहैं जिसमें पहला भेद एसें है
यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें उत्कृष्ट
देवतापणा युगलियोमें मनुष्यजन्म उर सम्यक्त
वगैरेका लाभ होताहै अंतमें मोक्षसुख होताहै
जेसे धन्नासार्थवाहने घीका दांन देणेसें साधू
उंको तेरमे भवमें ऋषभदेव तीर्थंकर हुवा शा-
लिभद्र क्षीरके दांनसें हुवा २ न्यायसें पेदा
कीया धन उर कुपात्रोंको देणा ये दूसरा भंगहै
यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें इससें
कोइ २ भवमें देखता लाभ विषयसुखका हो-
ताहै तोभी अंतमें फल कम्वे लगतेहैं इस जगे
लाख ब्राह्मनोकों जीमाणेवाले ब्राह्मनकी तरे वो
दृष्टांत एसाहै एक ब्राह्मन हमेसां ब्राह्मनोकों
जीमाते २ लाख ब्राह्मन जीमाया उर विषय-
सुख भोगता हुवा मरके भद्रजातीका सेचनक
नामका हाथी हुवा उर उसही जगे ब्राह्मणो-
कों जीमाये वाद जो अन्न वचता सो एक ग-
रीब दलद्री ब्राह्मन सुपात्रोंकों दान देदेता वो
गरीब ब्राह्मन उहांसें मरके सो धर्म देवलोक
गया उहांका सुख भोगके आयुष्य पूर्णकर श्रे-
णिक राजाके नंदिखेण नामका पूत्र हुवा उसकूं
देख सेचनक हाथीकूं जातिस्मरण ज्ञांन हुवा

नगर मांहि पुन्यका माल खावे सो देख लेवो राजाका दांन नहि लेणा एक कसाईखाना दान होणा दस हिंसा समान कलालका दान होणा हजार हिंसा समान राजाका दान होणा सो दश हजार हिंसा समान एसा स्मृतियोंका तथा पुराणोंका वचन है ब्राह्मणो मैं राजदांन नही लेउंगा तब मंत्री बोला है मह-राज मन्त्रमुनि आपकू निजन्यायमें पेदा कीया धनका दान देगा ब्राह्मणो उसमें कुछ दोष नही इत्यादिक वचनोसें समझायकर मंत्री रा-जाकेपास लाया राजा उसकूं सिंहासन दीया पगधोकर जिनमें पूजा करी वो आठ मोहर दक्षिणा दीनीकि कोइ नही देवे इस मुजब मू-ठीमें दांन दिया दुसरे ब्राह्मण इस स्वरूपकूं देख मनमें गुस्से हुवे राजाने इसकूं कोइ सार पदार्थ देदीया पीछेसे राजा बहोतसा धन दुसरे ब्राह्मनोकों देदेकर खुस कीया राजका दीया धन उस विप्रोके थोडे दिनोमें खूट गया सब ब्राह्मनोके लेकिन् वो आठ मोहरे तो खाते खरचते जन्मभर उस ब्राह्मणके अखूट होगया जेसें खेतमें बीजवृद्धि होय तेसें न्या-यसें पेदा कीया धन उर सुपात्र दांन इसके

चार भंग होतेहें जिसमें पहला भेद एसें हे यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें उत्कृष्ट देवतापणा युगलियोमें मनुष्यजन्म ओर सम्यक्त्व वगेरेका लाभ होताहे अंतमें मोक्षसुख होताहे जेसे धन्नासार्थवाहने घीका दांन देणेसें साधूउंको तेरमे भवमें ऋषभदेव तीर्थंकर हुवा शालिभद्र क्षीरके दांनसें हुवा २ न्यायसें पेदा कीया धन ओर कुपात्रोंको देणा ये दूसरा भंगहे यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें इससें कोइ २ भवमें देखता लाभ विषयसुखका होताहे तोभी अंतमें फल कम्वे लगतेहें इस जगे लाख ब्राह्मनोकों जीमाणेवाले ब्राह्मनकी तरे वो दृष्टांत एसाहे एक ब्राह्मन हमेसां ब्राह्मनोकों जीमाते २ लाख ब्राह्मन जीमाया ओर विषयसुख भोगता हुवा मरके भद्रजातीका सेचनक नामका हाथी हुवा ओर उसही जगे ब्राह्मणोकों जीमाये वाद जो अन्न वचता सो एक गरीब दलद्री ब्राह्मन सुपात्रोंकों दान देदेता वो गरीब ब्राह्मन उहांसें मरके सो धर्म देवलोक गया उहांका सुख भोगके आयुष्य पूर्णकर श्रेणिक राजाके नंदिखेण नामका पूत्र हुवा उसकूं देख सेचनक हाथीकूं जातिस्मरण ज्ञांन हुवा

सागर जाते पुत्रका मांस खाते जो ऐसे ते[illegible]
हाथीवाला दान नहिं देणा शकटवाला दान
देणा दस हिंसा समान भूमिवाला दान
देणा हजार हिंसा समान गायवाला दान
देणा सो दस हजार हिंसा समान ऐसा
स्मृतियोंका तथा पुराणोंका वचन है इसवास्ते मैं
राजदान नहीं लेऊंगा तब मंत्री बोला है सा-
स्त्र अनुसार आपकू जिनमार्गमें पैदा किया
धनका दान देणा इसवास्ते इसमें कुछ दोष
नहीं इत्यादिक वचनोंसें समझायकर मंत्री रा-
जाकेपास लाया राजा उनकूं सिंघासन दीया
होकर विनयसें पूजा करी सो आप मोहर
ऐसा तरीके कोइ नहीं देवे इस मुजब भू-
मीमें दान दिया दुसरे ब्राह्मण इस स्वरूपकूं
देख मनमें गुस्से हुये राजाने इनकूं कोड सार
पदार्थ देदीया पीछेसे राजा बहोतसा धन
दुसरे ब्राह्मनोंकों देदेकर खुस कीया राजका
दीया धन उस विप्रके थोडे दिनोंमें खूट गया

चार भंग होतेहैं जिसमें पहला भेद एसें हे
यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें उत्कृष्ट
देवतापणा युगलियोमें मनुष्यजन्म उर सम्यक्त
वगेरेका लाभ होताहे अंतमें मोक्षसुख होताहे
जेसे धन्नासार्थवाहने घीका दांन देणेसें साधू
उंको तेरमे भवमें ऋषभदेव तीर्थंकर हुवा शा-
लिभद्र क्षीरके दांनसें हुवा २ न्यायसें पेदा
कीया धन उर कुपात्रोंको देणा ये दूसरा भंगहे
यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें इससें
कोइ २ भवमें देखता लाभ विषयसुखका हो-
ताहे तोभी अंतमें फल कडवे लगतेहैं इस जगे
लाख ब्राह्मनोकों जीमाणेवाले ब्राह्मनकी तरे वो
दृष्टांत एसाहे एक ब्राह्मन हमेसां ब्राह्मनोकों
जीमाते २ लाख ब्राह्मन जीमाया उर विषय-
सुख भोगता हुवा मरके भद्रजातीका सेचनक
नामका हाथी हुवा उर उसही जगे ब्राह्मनोंकें
कों जीमाये वाद जो अन्न वचता सो होतेहैं
रीब दलद्री ब्राह्मन सुपात्रोंकों दान जेसें गायकूं
गरीब ब्राह्मन उहांसें मरके सं अन्यायके क-
गया उहांका सुख भोगके उस कर्मसे चंभाल
णिक राजाके नंदिखेणजातमें जन्म लेणा होताहे
देख सेचनक हाथीसें तेरा पंथीमतके ढूंढक गुरु

नगर वासे पुनका मारक पांचसे गो सेवक तेलिक राजाराम दांन नहि लेना नरकनीपास दस होता दस हिंसा समान चक्रिकास दस होता दस हजार हिंसा समान राजाजारक दस होता सो दस हजार हिंसा समान पुन्य स्मृतियोंका तथा पुराणोंका वचनहै इस वास्ते में राजदान नहीं लेऊंगा तब मंत्री बोला है महा-भाग्य महामूर्ति आपकूं निजन्यायसें पैदा किया धनका दान देगा इसवास्ते उसमें कुछ दोष नहीं इत्यादिक वचनोंमें समझाकर मंत्री रा-जाकेपास लाया राजा उसकुं सिंहासन दीया पगधोकर विनयसें पूजा करी दो आठ मोहर दक्षिणा तरीके कोइ नहीं देवे इस मुजब मु-ठीमें दांन दिया दुसरे ब्राह्मण इस स्वरूपकुं देख मनमें गुस्से हुये राजाने इसकुं कोइ सार पदार्थ देदीया पीछेसे राजा बहोतसा धन दुसरे ब्राह्मनोकों देकर खुस कीया राजका दीया धन उस विप्रोके थोडे दिनोमें खुट गया सब ब्राह्मनोके लेकिन वो आठ मोहरे तो खाते खरचते जन्मभर उस ब्राह्मणके अखुट होगया जैसें खेतमें बीजवृद्धि होय तैसें न्या-यसें पेदा कीया धन और सुपात्र दांन इसके

सें खरीदकर क्रोमो सोनइये लगाकर मंदिर बनवाया जिस मंदिरकों तोमणेंको उरंगजेब मुसलमीन बादशाह चढा जबके मंदिरकी को-रणीकी रमन्नक देखी तब हाथमें जो गुरजथा सो बूटगया उंर कहणेलगा अय परवर दिगार में इस अइमारतको हरगिज नही तोमसकता करवाणेवाले उंर कारीगरोकों कहांतक खूबी दीजाय बमे २ अंगरेज उस मंदिरकी छिब देखकर यह कहतेहे अगर सब मुल्कका धन इनाममें दीया जाय तोजी इस जिन मंदिरकी नकल नही कोइ बणासकता तो अनेक पापारं-नसे अनुचित काम करके जमा कीया धन धर्मखाते नही लगावे तो इस नवमें अपयश उंर परनवमें नरक पमणा होताहे जिसपर म-म्मणसेठका दृष्टांत जाणणा ४ अन्यायसें पेदा कीया धन उंर कुपात्र दांन यह चोथा नंगहे जिसकरके मनुष्य धिकारणे लायक होतेहें विवेकीयोकूं जरूर गेमणा चाहीये जेसें गायकूं मारके कउअेकूं पोषणा जेसें अन्यायके क-माये धनसें श्राद्ध करतेहे उस कर्मसे चंमाल निल्ल एसी हलकी जातमें जन्म लेणा होताहे जेसें विद्यमांनकालमें तेरा पंथीमतके ढूंढक गुरु

रिता उनके मारके पछी नरकमें जाते [illegible] कुपात्र दानको भी पढे ३ [illegible] पैदा होता हुआ धन और कुपात्र दान उस कुपात्र [illegible] नेग होताहै और ऐसे [illegible] [illegible] ऐसा अंकुर पैदा होताहै लेकिन अनाज पैदा होता नहीं जिसमें उसमें कुछ का मतलब होताहै जिसतरहके राजा [illegible] और पद्धी आदमीसे धन पैदा करवाते चोरीके [illegible] मानने योग्य होताहै एक बकरीका [illegible] लकडीकी तरे मार जिसकी [illegible] जिसकी हुक्मके शान सेनोंमें चोरकरके जुलमसे लेती बगाड जैसे खलगायकूं देणेसें दूधरूप होताहै और दूध सापकूं पिलाणेसें जहर होताहै इसीतरे सुपात्र कुपात्रके न्यारे २ फल होतेहै स्वातिनक्षत्रका जल सांपके मूंमें गिरणेसें [illegible]प होताहै और सीपमें गिरणेसें मोती बनतेमें [illegible]न बुद्धिमान विचार लेवे चाहे स्वाति[illegible] [illegible]की जल लेकिन पात्रके फेरफारसें [illegible]रे इस विषयपर खरतर गच्छी [illegible] उपदेशित आबू पहाडपर [illegible]धन कमाकर चोगुडे [illegible] जमीन ब्राह्मणो-

सें खरीदकर क्रोमो सोनइये लगाकर मंदिर बनवाया जिस मंदिरकों तोमणेंको ञरंगजेब मुसलमीन बादशाह चढा जबके मंदिरकी कोरणीकी रमन्नक देखी तब हाथमें जो गुरजथा सो बूटगया ञर कहणेलगा अय परवर दिगार में इस अइमारतको हरगिज नही तोमसकता करवाणेवाले ञर कारीगरोकों कहांतक खूबी दीजाय बमे २ अंगरेज उस मंदिरकी छिव देखकर यह कहतेहे अगर सब मुल्कका धन इनाममें दीया जाय तोत्नी इस जिन मंदिरकी नकल नही कोइ बणासकता तो अनेक पापारंत्नसे अनुचित काम करके जमा कीया धन धर्मखाते नही लगावे तो इस त्नवमें अपयश ञर परत्नवमें नरक पमणा होताहे जिसपर मम्मणसेठका दृष्टांत जाणणा ४ अन्यायसें पेदा कीया धन ञर कुपात्र दांन यह चोथा त्नंगहे जिसकरके मनुष्य धिकारणे लायक होतेहें विवेकीयोकूं जरूर छोमणा चाहीये जेसें गायकूं मारके कञ्जेकूं पोपणा जेसें अन्यायके कमाये धनसें श्राद्ध करतेहे उस कर्मसे चंमाल त्निल्ल एसी हलकी जातमें जन्म लेणा होताहे जेसें विद्यमांनकालमें तेरा पंथीमतके ढूंढक गुरु

नहीं [illegible] उनके मनके उस [illegible]
[illegible] जमा करके हेतु [illegible] हैके
उपजाकरके [illegible] और मनमें सुगुणोंकी भक्ति
[illegible] जीमनके [illegible]
तीन हजार लगावे शिखर बद्धमें भगवान
के बिंबको तीन हजार लगावे और साथ होवे
जो उचित मर्यादापूर्वक उसमें एक पैसाभी
नहि लगातेहैं पुन्यनिमित्तको धनहै उस
समझकूं जिन मंदिरोंकी कुछभी सार संभाल
नहि करतेहै न्यायसें उपार्जन कीया धन सु-
पात्रोंकों दान दे तो कल्याण होताहै लेकिन्
अन्यायसें कमाये धनसें कल्याण चाहतेहैं सो
कभी होणा नही वो कालकूट जहर खाणे जे-
साहै अन्यायसें धन कमाणेवाले गृहस्थ अ-
न्याई लबाइखोर अहंकारी और पापकर्मी हो-
ताहै जैसे विक्रम संवत तीनसेमें रांका सेठका
होणेकी कथा श्राद्धविधीमें लिखीहै वैसा अ-
न्यायसें धन जमा कीया अंतमे दुखदाइ हो-
ताहै साधुउंका आहार विहार व्यवहार और
वचन ये च्यारोंही शुद्ध होताहै सो दुनिया
देखतीहै लेकिन् गृहस्थका तो एक व्यवहारही
शुद्ध देखतेहै व्यवहार शुद्ध होय तो सब धर्म

काम सफल होताहे आद्धदिनकरमेंभी लिखाहे व्यवहार शुद्धधर्मका मूलहे कारण व्यवहार शुद्ध होय तब कमाया धन शुद्ध होताहे ओर धन शुद्ध होय तब आहार शुद्ध होय अहार शुद्ध होय तब देह शुद्ध होताहे ओर देह शुद्ध होय तब धर्मके योग्य होताहे ओर धर्मकृत्य सफल होताहे व्यवहार शुद्ध विना सब निर्फलहे व्यवहार शुद्ध नही रखे वो अदमी धर्मकी निंदा करातेहें ओर धर्मकूं निंदा कराणेवाला दुर्लभ बोधि होताहे इसवास्ते एसे यत्नसें एसा काम करणा जिस्सें मूर्खलोक निंदा नही करसके आहार माफक शरीरकी प्रकृति वंधतीहे जेसें बालक ऊमरमें घोडा भेंसका दूध पीताहे वो तो जलमे अच्छी तरेसें पडे रहतेहे ओर गायका दूध पीणेवाले जलसें घोडे दूर रहतेहे तेसेंइ बालक जेसा आहार करताहे वेसाही उसकी प्रकृति होतीहे इसवास्ते विवहार शुद्ध रखणा तेसेंही देसविरुद्ध कामकूं छोडणा जेसें सिंधदेसमे खेती करणी देश विरुद्धहे तेसेंइ लाट जो भरु अच्छका प्रांत देस जिसमें दारू सराप निपजाणाभी देसविरुद्धहे इस मुजब ओरभी अनेक देशोंमें अनेक बात-

नहीं यारके मरणोतार उनके मनके उपर आत दु-
र्गाने बैठे जमा करके देढ़ गोरी अमीरोंकों देवे
दंडाताकर २ के और मनमें कृपाओंकी भक्ति
समझके कूमेंहै ऐसुमें ज्ञानमाके जिनकी
तीन हजार लगाये गिरनार मदुरमें मंत्राज-
के जिनकी तीन हजार लगाये और मानमेंभ
जो धनिन महापुन्यकर्ताहै उसमें एक पैसाभी
नहिं लगातेहैं पुन्यनिलोभनेहैं धनके इस
समझकें जिन मंदिरोंकी पूजा भार संभाल
नहिं करतेहैं न्यायसें उपार्जन कीया धन सु-
पात्रोंकों दान देवे तो कल्याण होताहै लेकिन
अन्यायसें कमाये धनसें कल्याण चाहतेहै सो
कभी होणा नहीं वो कालकूट जहर खाणे जे-
साहै अन्यायसें धन कमाणेवाले गृहस्थ अ-
न्याई लबाडखोर अहंकारी उर पापकर्मी हो-
ताहै जैसे विक्रम संवत तीनसेमें रांका सेठका
होणेकी कथा श्राद्धविधीमें लिखीहै वैसा अ-
न्यायसें धन जमा कीया अंतमे दुखदाइ हो-
ताहै साधुवोंका आहार विहार व्यवहार उर
वचन ये च्यारोंही शुद्ध होताहै सो दुनिया
देखतीहै लेकिन गृहस्थका तो एक व्यवहारही
शुद्ध देखतेहै व्यवहार शुद्ध होय तो सब धर्म

दोय राजाउंके आपसमें तकरार चालती होय उहां धाम वगेरे पमणेसें रस्ता बंध होय अथवा पार नही पमे एसे बमे जंगलमें समी सांझ वगेरह भयंकर वखतमें विना सहाय अथवा विनाताकत जांणेसें प्राणकी अथवा धनकी हानि होय अथवा दुसरा कोइ अनर्थ सांमने आवे सो काल विरुद्ध कहलाताहे अथवा फागण महीनेवाद तिल पीलणा तिलका व्यापार करणा अथवा तिल खाणा वर्षातकी मोसममे चंदलीया वगेरे पत्तोंका साग खाणा जहां बहोत जीवाकुल जमीन होय उसरस्ते गामी गामा असवारी चलाणा एसा बमे जुलम करणा सो काल विरुद्ध कहलाताहे राजविरुद्ध नहि करणा सो इस तरेसें राजा प्रधानादिकोंका उगुण निकालणा राजमाने एसा मंत्री वगेरेका आदर सत्कार नहि करणा राजासें वेमुख एसें आदमीकी सोहबत करणी वैरि दुस्मनोके ठिकाणे लोभसें जाणा वैरि दुस्मनोके ठिकाणेसें आये हुये अदमीके संग वर्त्ताव रखणा राजाकी महरबानीहे एसा समज राजाके करे हुये कांममें फेरफार करणा सहरमें आगेवान जो लोक होवे उनोंसें विपरीत चलणा

[illegible]

देता अपना दोष नटावे अरु सबका अवगु[illegible]
जाहिर करे इसपर दृष्टांत सुनाते है किसी राजा
आगे कोइ परदेसी तीन खोपरी लाया उनक[illegible]
पंडितोने परिक्षा करी तो इस मुजब एक खोपरी[illegible]
के कानमे डोरा डाला सो मूंहमेंसें बाहि[illegible]
निकलगया तब पंडत लोक बोले अरे इसने
जो जो वात कांनोसें सुणा सो सब मूंहेंसें
वकदीया करतीथी इसवास्ते इस खोपरीकी की[illegible]
मत फूटी कोडीहै दूसरी खोपरीके कानमें डोरा
डाला वो डोरा दूसरे कांनमेंसें बाहिर निकल

गया तब पंमित बोले तेनें इस कांननसें बात सुणी उंर डुसरेके आगे बाहर निकाल देताथा इसवास्ते इस खोपरीकी किम्मत लाख मोह्-रकीहे तीसरी खोपरीके कानमें मोरा माला सो गलेमें उतरगया इसके जीवनें जो कुछ बात सुणी सो पेटमेही रखी इसवास्ते इसकी कीमत हम नही करसकते इसतरे छती बात कहतेहें उनोकी अमोल कीमतहे सीधा सरल आदमीकी मस्करी नहि करणी गुणवान आ-दम्योंसें द्वेषजाव नहि करणा कृतघ्नी नहि होणा बहोत लोकोंके संग वैर विरोध रखणेवालोंकी सोहबत नहि करणी लोकोंमें पूजा प्रतिष्टा पाये हुये अदमीका मांनजंग नहि करणा अच्छी चालचलणके आदमीमें कोइ तरेका सं-कट आ परू तो दिलमें खुस नहि होणा अप-णेमें शक्ति होय उंर जले अदमीमें संकट आ-परू तो जरूर मदत करणी रीत मर्याद कुलकी तथा देसकी छोमणी नही अपणे घरकी हेसि-यतसे ज्यादे बधिया तथा ज्यादे घटीया वेषजी नहि पहरणा चाहिये यह सब बातें लोकवि-रुद्ध कहलातीहे इस बातोसें इस लोकमें अपयश होताहे वाचक श्रीउमास्वाति सर्व

आपणे मालकके साथ निमक हरामी करणी यह सब बाते राजविरुद्ध कहलातीहै उनके काल पहोरा पुंचे जैसे सुननामूके वालीका और पूर्वनगमें रोहणीयो शे बनी विवाहकी नेश्राकी डर पडी हुईथी लेकिन राजाकी सामीलता हुआ कुशील कहांक चोरीयोमें राजा उस साहुकारकी बेटी रोहणीकी जीभ काटकर देससें निकालदी दुःखी होकर रोहणी अनेक जनोंमें जीभ कटानेका दुःख पाया इसवास्ते राजविरुद्ध कांम नहीं करणा लोकको लेसंह विशेष करके गुणीजणोंकी निंदा करणी और आपणे मूंसे अपणी तारीफ करणी ये दोनोंही लोकविरुद्ध कहलाताहै खरा या खोटा पराया औगुण निकालणोसें धनका और यशका लाभ होता नहीं इतनाही नहीं लेकिन जिसके औगुण प्रकास करे वो एकनया दुस्मन पैदा होताहै अपणी तारीफ पराइ निंदा बस नहीं रखणी हुइ जुबान ४ और अच्छे कपडे ५ और क्रोधादि कषाय ए पांच चीज संयम पालणोकुं अच्छे उद्यम करणेवाले मुनिराजकुंभी हरजाना करताहै जिस आदमीमें अच्छे २ गुण है तो विगर कहेभी जाहिर हुयेविगर रहेगा नहीं नहीं जब खुदी

बमाईमें क्या फायदाहे आप अपणे मूंसे तारी-
फ करे उसके मित्र उसकूं हसतेहे जाइ निंदा
करे एसे आदमीकों बमे आदमीपास नही
विठलाते उंर उसके माबापजी उसकूं बहोत
मानते नही अपणी तारीफ उंर परनिंदा जवो-
जवमें नीच गोत्र कर्मवंधताहे वो कर्म कोमों जव
होणेसेंजी बूटणा मुसकिल होताहे पराइ निंदा
करणी यह बमा पापहे कारण बहोत खेदकी
बातहे विगर कीये पापजी पराइ निंदा करणे-
वालेकूं खड्डेमें गिराताहे इसपर एक दृष्टांतहे
सुग्राम गाममें सुंदर नांमका एक सेठथा वो
बमा धर्मीथा सो मुसाफर वगेरह लोकोकूं जो-
जन वस्त्र रहणेका ठिकाणा वगेरह देकर उनके
ऊपर उपगार करताथा उसके पमोसमें एक
ब्राह्मणी रहतीथी वो सेठकी हमेसां निंदा कीया
करे लोकोकूं कहा करे यह सेठ मुसाफर लोक
परदेसी मरजाताहे उसकी जमा हजम कर-
णेकूं यह वणिया एसा करताहे एकदिन एक
कार्पटि अर्थात् सामी प्यासकरके व्याकुल आ-
या तब सेठ अहीरणके पाससें गाछ मोल लेकर
उसकूं पिलाइ उसके पीणेसें वो गुसाइ मरग-
या कारण उस अहीरणने गाछका वरतण उ-

खाना रस ग्रामागा उसमें नीमक मागा जो
जातीथी उसमें गरल गिरगईथी एसा जाण
देखकर तो ब्राह्मणी कहणेलगी देखो तो कैसाहै
धर्मी सेठने कीया इसवास्ते तो हत्या आकासमें
खडी विचार करणेलगी के मेरेको कुछ कसूर
नहीं है मगर ये अज्ञानी सेठ नीमकके मुंने
परनसथा हे नीमकका जातिस्वभाव
खाणेकाहै अहीरण इस बातकी अजा-
अबमें किसके पिच्छाडी लगुं अंतमें वो
हत्या उस निंद्याखोर ब्राह्मणीके लगी उस
करके काली कुरूप कोढणी होगइ इस मु-
जब निंदकका हाल होताहै जो कोइ अण-
हुंता अछता दोष चढावे अव सचा ओगुण
जाहिर करे उसपर दृष्टांत एसाहै किसी राजा-
कोइ परदेसी तीन खोपरी लाया उसकी
तोने परिक्षा करी वो इस मुजब एक खोपरी-
कांनमे मोरा माला सो मुंहमेंसें बाहिर
तब पंडत लोक बोले अरे इसने
जो जो बात कांनोसें सुणा सो सब मुंहसें
बकदीया करतीथी इसवास्ते इस खोपरीकी की-
मत फूटी कोडीहै दूसरी खोपरीके कांनमें मोरा
नाखा वो मोरा दूसरे कांनमेंसें बाहिर निकल

गया तब पंमित बोले तेनें इस कांननसें बात सुणी उंर डुसरेके आगे बाहर निकाल देताथा इसवास्ते इस खोपरीकी किम्मत लाख मोह-रकीहे तीसरी खोपरीके कानमें मोरा माला सो गलेमें उतरगया इसके जीवने जो कुछ बात सुणी सो पेटमेही रखी इसवास्ते इसकी कीमत हम नही करसकते इसतरे छती बात कहतेहें उनोकी अमोल कीमतहे सीधा सरल आदमीकी मस्करी नहि करणी गुणवान आ-दम्योंसें द्वेषन्नाव नहि करणा कृतघ्नी नहि होणा बहोत लोकोके संग वैर विरोध रखणेवालोंकी सोहबत नहि करणी लोकोमें पूजा प्रतिष्टा पाये हुये अदमीका मांनत्नंग नहि करणा अच्छी चालचलणके आदमीमें कोइ तरेका सं-कट आ परे तो दिलमें खुस नहि होणा अप-णेमें शक्ति होय उंर न्नले अदमीमें संकट आ-परे तो जरूर मदत करणी रीत मर्याद कुलकी तथा देसकी छोमणी नही अपणे घरकी हेसि-यतसे ज्यादे बधिया तथा ज्यादे घटीया वेषन्नी नहि पहरणा चाहिये यह सब बाते लोकवि-रुद्ध कहलातीहे इस बातोसें इस लोकमें अपयश होताहे वाचक श्रीउमास्वाति सर्व

शिरोमणीने लिखाहै के समितोमें जोजोंको जी-
कही आभासहुतहै उसमेसे जो जग वि-
रुद्ध अगर धर्मविरुद्ध होय तो मानना नहि
करणी ये दोनों विरुद्ध होनेसे जीवोंको ग-
णो ऊपर प्रीति होतीहै रागनी सामग्रीमें
आताहै और मुखमें निगोद होताहै जोकथि
आदमी सम्यक्त्व मूलके बीजभूतहै अब धर्मवि-
रुद्ध करणीहै मिथ्यात्वका काम करणा मनमें
दया नहि रखना दुराचार गरीबोंको मारणा
बांधणो आदि तकलीफका देणा जूंवांलीखोंको
धूपमें नाखणा सिरके बाल वली बारीक कांग-
सीसे उतारणा लीखोंको फोडणा गरमीके
समयमें गलणो मजबूतसें तीन वेर और सो-
... दो वेर जीवोंकी सार संभाल नहि रख-
कर पाणीका छाणनेका उपयोग नहि रखणा
अनाज इंधन गोबरी शाग खाणेके साग पान
फल फूल तपासणेमें अच्छी तरे उपयोग नहि
रखणा साबुन सोपारी खारक खजूर छुहारा
बादाम फली वगैरे साबित दंतो मुंमें डाल-
णी नाला वगैरह भारीका ... पीणा चालते
बैठते सोते ... करते कोई जीव रखते
नि मज-
रखते नसते

मूत्र खंखार थूंकते कुरला करते जल तथा पां-
नका पीक नाखते बराबर ज़तना राखणी धर्म
करणीका आदर करणा देवगुरु तथा साधर्मी
इनोंके संग द्वेष नहि करणा देवके द्रव्यकूं अ-
पणे कांमसें नहि लाणा अधर्मी अदमीकी सो-
हबत नहि करणी धर्मी अदमीकी मस्करी नहि
करणी कषायका उदय बहोत नहि रखणा
बहोत पापकारी चीज लेणी या वेचणी नही
कठोर खरकर्म तथा पापमइ अधिकार इत्या-
दिकमें नहि प्रवर्त्तणा ये सब बाबतें धर्मविरुद्ध
कहलातीहे यह जो ऊपर लिखी बाबत मि-
थ्यात्व वगेरेका वयान अर्थ दीपकामें कीयाहे
धर्मी लोक देसविरुद्ध कालविरुद्ध राजविरुद्ध
अथवा लोकविरुद्ध आचरण करे तो धर्मकी
निंदा होतीहे इसवास्ते इन सब बातोंकों धर्म-
विरुद्धही समजणा अब हितोपदेशमालामें नव
प्रकारका उचित आचरण लिखाहे वो आचरण
केसा कहेके सब मनुष्य तो देह इंद्रीयों धरा-
णेवाले एकसेहीहे उनोमें केइयक आदमी इस
संशारमें स्याणे विचक्षण होकर यशवंत कहला-
तहें वो सब उचित आचरणकीही महिमाहे वो
इस मुजबहे अपणे पिता संबंधी१ मातासंबंधी

२ नाईसंबंधी ३ स्त्रीसंबंधी ४ पुत्रपुत्रीसंबंधी ५ सगेसाजनसंबंधी ६ धनि ओक संबंधी ७ सद्गुरुके स्थानवाले लोक संबंधी ८ नेशंद अन्य दर्शनीसंबंधी ९ ये नव उचितावणा सब मनुष्योंकोंकरणा जो पिता है पिताकी नक्ति मनवचन कायासें करणी चाहिये बापकी शरीर सेवा चाकरकी तरे आप करणी उनोंका पग धोणा दाबणा वृद्ध अवस्थामें उठाणा बेठाणा देश उर ..लके माफिक उनोंकों नोजन कराणा बिछान- .. वस्त्र गहणा वगेरे वस्तु देणा कोइके कहणेसें तिरस्कार अपमांन नही करणा पुत्र अपणे बापके सामने वेठा जेसा शोनापाताहै वेसी शोनाका सो माहिस्सा उंचे सिंहासण बेठणेसें कनी मिलणेका नही बापके वचन मूंमेंसें निकले तेही उठा लेणा चाहिये जेसें राजतिलक बेठणेके वखत रामचंद्रजीनें पिताका वचन पालणेकूं वनवास पधार गये वेसें सपूतोंकों करणा चाहीये जी हजूर जो हुकम अनी करताहूं एसी मजवही कबूल करणा लेकिन् आनाकानी सिर धूंणा अथवा बहोत देर लगायकरके कोसे पर्छे अथवा अधूरा कांम छोडदेणा इत्यादिक ऐसें नही करणी उनोंकों पसंद पडे

सब कांम करणा अपणी अक्कलसे कोइ
नेश्चेही करणा विचारया होय तोभी उ-
ाचे तभी करणा बुद्धिका पहला गुण
की मावापकी टेहल करणी जब वो प्रसन्न
तब गुप्त रहस्य सब बतादेतेहें ज्ञानक-
ों बमेहे उनकी बंदगी नहि करणेसें चाहे
ही पुराण उर आगम पढो चाहे कित-
अपणी बुद्धिसें कल्पना करो लेकिन
बुद्धिकी प्रबलता होती नही एक स्थविर
तें जाणताहे सो लाखों जुवान नही
हे देखो राजाकूं लात मारणेवाला अ-
द्धोके वचनसें पूजाताहे वृद्धोकें वचन
कांम पमनेपर बहुश्रुत वृद्धकोंही पूछणा
; कोमुदीमें लिखाहे हंसका टोला बंध-
के हुयेकूं वृद्ध वचनोंने बुभाया तेसेंही
अभिप्राय पिताके आगे प्रकटपणे कहणा
ाम मना करे सो नही करणा कोइ कसूर
पिता करभी जुवान कहे तो तोभी वि-
ा नहि छोमणा मर्यादा छोमकर बेतरेका
नहि करणा जेसें अभयकुमार श्रेणि क-
उर चेलणा माताका मनोरथ पूर्ण कीया
ाधारण मनुष्यभी अपनी शक्ति माफक

उत्तरभेदकरके प्ररूपणाकरके उस धर्ममें स्थापन करदेवे तब तो मावापके उपगारका बदला उतर सकताहै इसी तरे कोइ बडा धनवान आदमी एकाध दलद्रीकूं धन वगेरे देकरके अच्छी अवस्था वणादेवे उंर वो भाग्यवानही बणा रहे तदपीछे वो देणेवाला कर्मयोगसें दलद्री हो-जाय उसकूं वो अपणा सर्व धनमाल देदेवे तोभी अपणेकूं भाग्यवान बनानेवाले मालकका बदला नही उतारसके लेकिन् जो उस माल-ककूं केवली कथित जिन धर्ममें दृढ करदेवे तभी उस मालकका बदला उतरशके कोइ पुरष सिद्धांतमें कहे मुजब श्रमणमाहण धर्माचार्यके पाससें धर्मका एक उत्तम वचन सुणकर मनमें उसका विचार करे मरणकी वखत तदपीछे देव-लोकमे देवता होकरके अपणे धर्माचार्यकूं काल पडे हुये मुलकसें सुकालके देसमें लेजाकरके रक्खे बडा विकराल जंगलमेंसें पार उतारे अ-थवा बहोत दिनोंके बेमारीकों मिटावे तोभी उस धर्माचार्यके उपगारका बदला नहि उतरे लेकिन् जब धर्माचार्य केवलि प्ररूपित धर्मसें भ्रष्ट होजाय उसकूं केवलि कथित धर्ममें पीछा दृढ करे तभी बदला उतरसके मातापिताकी

मनोरथ पूर्ण करणा जहांभी देवगुरु गुरुजनों धर्म सुणाना अन्न पान दान करणा उ आत्म- कर्मों पालणा मात सोगोमें मन लगाणा तीर्थ- यात्रा करणी और तीन दुःखी अनाथोंकू दर्शा- स करणा ये धर्म मनोरथ पिताके अन्ते उम- गमें पूरा करणाणा होइतो तो मातापिताके उपगारका भार पूत्र नही उतार सकता लेकिन अपने वडेरे गुरु लोकोंकों केवलीका कहा स- द्धर्मके विषे जोडे विगर और उपाय उनके वदला उतारणेका नही ठाणांग सूत्रमें लिखाहै तीन आदमीका उपगार ऊतार नही शके एसाहै मावापका १ धणीका २ और धर्माचार्यका ३ कोइ आदमी जावजीवतक प्रभातसमें अपने मावापकुं शतपाक सहस्त्रपाक तेलसेती मालिस करे सुगंध पीठीमसले गंधोदक गरम पाणी ठंढा पाणीसें स्नान करावे गहणे पहरावे सुशोभित करे भोजन शास्त्र मुजव रांधकर अठारे जातिके शागयुक्त मन माफक अन्नादिक जीमावे और यावज्जीव खंधे उठाये फिरे तोभी मावापके उपगारका वदला पूत्र नहि ऊतार सके लेकिन जब वो पुरप केवली भापित धर्म सुणायकर मनमें बरावर ऊतरायकर धर्मका मूलभेद और

उत्तरभेदकरके प्ररूपणाकरके उस धर्ममें स्थापन
करदेवे तब तो माबापके उपगारका बदला उतर
सकताहे इसी तरे कोइ बमा धनवान अदमी
एकाध दलद्रीकूं धन वगेरे देकरके अच्छी अव-
स्था बणादेवे उर वो भाग्यवानही बणा रहे
तदपीछे वो देणेवाला कर्मयोगसें दलद्री हो-
जाय उसकूं वो अपणा सर्व धनमाल देदेवे
तोभी अपणेकूं भाग्यवान बनानेवाले मालकका
बदला नही उतारसके लेकिन् जो उस माल-
ककूं केवली कथित जिन धर्ममें दृढ करदेवे तभी
उस मालकका बदला उतरशके कोइ पुरुष
सिद्धांतमें कहे मुजब श्रमणमाहण धर्माचार्यके
पाससें धर्मका एक उत्तम वचन सुणाकर मनमें
उसका विचार करे मरणकी वखत तदपीछे देव-
लोकमें देवता होकरके अपणे धर्माचार्यकूं काल
पमे हुये मुलकसें सुकालके देसमें लेजाकरके [illegible] योंके
रक्खे बमा विकराल जंगलमेंसें पार [illegible]
थवा बहोत दिनोंके बेमारीकों मिटावे [illegible]
उस धर्माचार्यके उपगारका बदला नहि [illegible]
लेकिन् जब धर्माचार्य केवलि प्ररूपित [illegible]
भ्रष्ट होजाय उसकूं केवलि कथित धर्मसें [illegible]
दृढ करे तभी बदला उतरसके मातापिताका

सेवा अन्नपाणकी तरे हरणी केवलि कपिल धर्ममें गिरकरके दीक्षा देणेवाले मातापोकूं आर्यर क्षितसूरजीका दृष्टांत जांणना ओर केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ पीछे मातापिताकूं प्रतिबोध करणेकूं निरवद्य वृत्तिसे रहे हुये मकानपर कूर्मापुत्रका दृष्टांत जाणना अपणा मालक मिथ्यात्वी सेठकूं प्रतिबोध देणेवाला उसका मूनीम जिणदास सेठका दृष्टांत जांणना अपणा धर्माचार्यकूं धर्मसें भ्रष्ट हुयेकूं फेर धर्ममें स्थापन करणेपर शेलकाचार्यकूं पंथक शिष्यका दृष्टांत जांणना इत्यादिक पितासंबंधी उचिताचरण कहाहे १ इसी तरेही मातासबंधी उचिताचरणहे लेकिन जो कुछ विशेषहे सो लिखतेहे माता जातकी स्त्री होतीहे ओर स्त्रीका मीजाज एसा होताहे थोडीसी निकम्मी बाबतमें वो अपणा अपमांन मांनलेतीहे इसवास्ते उसका दिल नही दूखे सपूतोकों चाहीये सो उनकी मरजीमाफक चले बापसेंभी ज्यादा मन माका रखणा जरूर क्योंके बापसें मा ज्यादे पूजनीकहे सो इसतरे जांणना उपाध्याय जो सूत्र अर्थ पढावे उससें दशगुण ज्यादे आचार्यहे ओर आचार्यसें सो गुणा अधिक बापहे ओर, बापसें

हजार गुण अधिक माताहै जांनवर जहांतक दूध पीणा होय जहांतकही मां मांनतेहै अधम पुरष जहांतक स्त्री नहि मिले जहांतकही मा मांनतेहै मध्यम पुरष घरका कामकाज उस माताके हाथसें चलता होय जहांतकही माकूं मांनतेहै ओर उत्तम पुरष तो यावज्जीव मांनतेहै जांनवरोंकी माता पूत्रकूं जीता देखके संतोष पातीहै मध्यम पुरषोंकी माता पूत्रकी कमाईसें सुखी होतीहै उत्तम पुरषोंकी माता पूत्रका सूरवीरपणाका काम देखके खुस होतीहै ओर धर्मात्मा पुरषोंकी माता पूत्रका उत्तम आचरणसें खुस होतीहै २ अब भाइ संबंधी उचिताचरण कहतेहै अपणे सगेभाईकूं अपणी मांफक जाणना छोटे भाईकूं बडे भाईमाफक गिणना क्योंके बडा भाइ बाप बराबर होताहै जेसें श्रीरामचंद्रजीकूं लक्ष्मण खुस रखताथा तेसेंइ शोक माका अथवा सगीमाके भायोंके संग वर्त्तावा रखणा भायोकी मरजीमाफक चलाणा भायोंकी स्त्री पूत्र वगेरे लोकोंनेभी उचित आचरण ध्यांनमें रखणा जुदा भाव नही दिखावे मनका अभिप्राय कहे पूछे उनोकूं व्यापारमें लगावे भायोंसें थोडाभी धन व्यापारमें

छुपाके रखे नही जिसकरके अगोसें अगाले नही मनमें दगा रखके भन नही छिपावे लेकिन संकटमें काम आवे इसवास्ते कोइ वखत काम आवेगा एसा समजके छिपाके रखणेमें कुछ दोष नही ३ अगर खराब संगतसें अपणा भाइ वीगडा होय तो उसको उसका दोस्त होय जिस्सें समजावे आप एकांतमें समजावे अथवा दुसरेके मिषसें समजावे काका मामा सुसरा साला वगेरे लोकोंसें सीखामण दिरावे आप ज्यादा तिरस्कार भाइका करे नही क्योंके कदास वेसरम होकर मर्यादा न छोडदेवे हृदयमें प्रीति होय तोभी वहारसें उसकूं अपणा स्वरूप क्रोधी जेसा देखावे उर जब वो भाइ विनयवान होजावे तब उसके संग पूरे प्रेमसें वात करे इत्यादिक उपरके लिखे मुजब उपाय करणेसेंभी जब सुधरे नहि तो इसका स्वभावही एसाहे एसा तत्वविचारकर उसकी उपेक्षा करे ३ भाइकी स्त्री पूत्र वगेरोके देणे लेणेमें समान दृष्टि रखणी अपणे स्त्री पूत्रकी तरे आदर रखकर भरण पोषण करणा उर सोकेलमाके भाइके स्त्री पूत्र वगेरोका मांन पांन उपचार अपणे स्त्री पुत्रसेंभी ज्यादे रखणा कारण

उन लोकोंकें थोमीसी बातमें दिलमें फरक आताहे उंर लोकोमें अपकीर्ति होतीहे इसीतरे उंर लोकोंसेंभी उचिताचरण जिसके जेसा योग्य होय वेसा ध्यानमें रखणा जेसेंके पेदा करणेवाला १ पालणेवाला २ विद्याका सिखा-णेवाला ३ अन्न वस्त्र देणेवाला ४ उंर अपणे जीवकूं बचाणेवाला ५ ये पांच पिता कहला-तेहें राजाकी स्त्री १ गुरुकी स्त्री २ सासू ३ उंर जन्मदेणेवाली ४ उंर धाय माता ५ ये पांच माता कहलातीहें सगा भाई १ संगमे पढणे-वाला २ मित्र ३ मांदगीमें बंदगी करणेवाला ४ उंर रस्तेमें बातचीत करणेसें हुवा सो मित्र ५ ये पांच भाइ कहलातेहे भाइयोकों चाहीयें सो एक एककूं अच्छी तरेसें धर्म करणी याद कराणा चाहीये जो पुरष प्रमादरूप अग्निसें सिलगे हुये शंशाररूप घरमें मोहरूप नींदमेंसें सूतेंकूं जगावे वो उसका परम बंधु कहाताहे भायोंकी आपसमें प्रीतिपर भरतका दूत आणेसें ऋषभ देवके अठाणवे पूत्र भगवानकूं पूछणेगये उनोका दृष्टांत जांणना इसतरे भाईका उचिताचरण जांणना ३ अब भार्याके संग उचिताचरण लि-खतेहे मनुष्यकूं चहीये सो स्त्रीका अच्छीतरे

तका अच्छा वस्त्र अच्छा गहना वगेरेहे सो घरकी शोभा उंर लक्ष्मीकूं वधातीहे क्योंके लक्ष्मी मंगलीक कांम करणेसें वढतीहे उंर चतुराईसें जन्ममूलरूप थिर होकर रहतीहे उंर इंद्रीजीतणेसे वसमें रहसकतीहे नाटक उंर कांमदेव पेदा करणेवाले चित्र तथा गायन सुणणेसें प्रायें उंरतें व्यभिचारणीयां होजातीहे जेसें वरसातकी हवासे अच्छे एनेकी आव विगमतीहे एसें उंरतें विगमतीहे रातकूं उंरतकूं बहार राजरस्तेमें अथवा किसीके घर नजाणे देवे कुटनी स्त्री वगेरे कुशीलकी संगत नही करणे देवे देणालेणा सगासंबंधीयोका आदर सत्कार करणा रसोइका कांम करणा इत्यादिक घरके कांम जरूर करके उनके हवाले करे अपणेसे अलग एकेली नही रहणे देवे मुनिराजकी तरे कुलवंती उंरतोंकों बाहिर फिरणा वाजब नही कोइ धर्मसंबंधी कांमकेवास्ते भेजणी होय तो मा बहिन वगेरे सूशील स्त्रीउंके संगमें जाणेका हुकम देणा उंरतोके घरके काम इस तरेकेहे बिछोना वगेरे बिछाना समेटणा झाडू देकर मकान साफ करणा पाणी छाणणा चूला बरतण वगेरें साफ करणा अनाज साफ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] दूधी
दूधी अथाणा सिजोणा करणा भोजन पाक
गेरे सब तरेकी तयारी करणी जिसकूं जैसा
लायक ऐसा पुरसारा करणा भाग्यवानकी स्त्री-
यां अगर आप नहीं करे तो नोकराणी दासी
अथवा सूपकारादिकसें निगे दास्तीसें करवाणा
पणो लायक होग सो आप करणा सासू

आख्यान सुणके कुलस्त्रीका रक्षण करणा उर अपणी आत्मासंयमके योगसें हमेसां उद्यममें रखणा स्त्रीकूं अपणेसें दूर नहि रखणा स्त्रीकी सार शंभाल नहि लेणेसें बहोत निगेदास्ती करणेसें जब आपसमें सामल होय तब नहि बोलणेसें अहंकारसें उर अपमांनसें इन पांच कारणोसें प्रेम घटताहे पुरष हमेसां मुसाफरी करता रहे तो स्त्रीका मन उस ऊपरसें उतर जाताहे विभचारणीभी होजातीहे स्त्रीकूं क्रोधमें आकर एसा विनाकारण कभी नहि कहणाके मैं तेरेपर दूसरी परणूंगा कोइ कसूर स्त्रीने कीया होय तो एकांतमें एसी हितशिक्षा देवे सो फेर एसा कांम नही करे बहोत गुस्सेमें भरगइ होय तो उसकूं समझावे धनका फायदा हुवा होय या नुकसान हुवा होय तो स्त्रीके सांमने बात नहि करणी तेसेंइ घरकी गुप्त मसलत उसके सांमने नहि कहे दोय उरतवाले पुरषकूं चैन नही रातदिन लडाइमें वीतताहे बडी आपदाका कारणहें राजा या बडा भाग्यवानोके दो स्त्री फेरभी निभसकतीहे एक स्त्रीका पतीका प्रेम रामचंद्र जेसा होताहे बहोत स्त्रीयोंका पतीका प्रेम कृष्ण जेसा होताहे

करणा चुणाना फटकाणा कूटणा पीसणा वस्त्र सीणा कसीदा निकालणा कदाचतू कनारी गोटे वगेरोके गोसरू अलमास चंपा लमी नाना कसणा वणाणा गढ़ाणा पोणा गाय भूंढ़णी दही जमाणा विलोणा करणा भोजन पाक वगेरे सब तरेकी तयारी वणाणी जिसकूं जेसा लायक एसा पुरसारा करणा भाग्यवानकी स्त्रीयां अगर आप नहीं करे तो नोकरणी दासी अथवा सूर्पकारादिकसें निगें दास्तीसें करवाणा अपणे लायक होय सो आप करणा सासु सुसरा भर्त्तार नणद जेठ देवर वगेरेका विनय साचवणा इस वजेसें अनेक किसम कुलवहूवें-का कृत्य जांणाना जो घरका पति इनकामोमें स्त्रीयोकों नहि लगावे तो उरतें हमेसां उदास रहतीहे उर स्त्रीके उदास रहणेसें घरका काम बिगमताहे डुसरे उरतका स्वभाव चपल होताहे सो निकम्भी रहणेसें विगमतीहे स्त्रीकूं देखणेसें वातचीत करणेसें उसके गुणकी तारीफ करणेसें उसके मनमानी चीजोके देणेसें उर मनमुजब चलणेसें पुरपके ऊपर मजबुत प्रेम जमताहे एसा श्री उमास्वातिवाचक प्रशमरति ग्रंथमे लिखतेहे पुरषोंकूं चाहीये सो पिसाचका

आख्यान सुणके कुलस्त्रीका रक्षण करणा उर अपणी आत्मासंयमके योगसें हमेसां उद्यममें रखणा स्त्रीकूं अपणेसें दूर नहि रखणा स्त्रीकी सार शंभाल नहि लेणेसें बहोत निगेदास्ती करणेंसें जब आपसमें सामल होय तब नहि बोलणेसें अहंकारसें उर अपमांनसें इन पांच कारणोसें प्रेम घटताहे पुरष हमेसां मुसाफरी करता रहे तो स्त्रीका मन उस ऊपरसें उतर जाताहे विभचारणीभी होजातीहे स्त्रीकूं क्रोधमें आकर एसा विनाकारण कभी नहि कहणाके में तेरेपर दूसरी परणूंगा कोइ कसूर स्त्रीनें कीया होय तो एकांतमे एसी हितशिक्षा देवे सो फेर एसा कांम नही करे बहोत गुस्सेंमें भरगइ होय तो उसकूं समजावे धनका फायदा हुवा होय या नुकसान हुवा होय तो स्त्रीके सांमने बात नहि करणी तेसेंइ घरकी गुप्त मसलत उसके सांमने नहि कहे दोय उरतवाले पुरषकूं चैन नही रातदिन लमाइमें वीतताहे बमी आपदाका कारणहें राजा या बमा भाग्यवानोके दो स्त्री फेरभी निभसकतीहे एक स्त्रीका पतीका प्रेम रामचंद्र जेसा होताहे बहोत स्त्रीयोंका पतीका प्रेम कृष्ण जेसा होताहे

कोइ कारण गोगसें दो खी परणे तो दोनोंके
दूसोंपर सम दृष्टि रखे उनोंमेंसें किसीका भाग
खंडित नही करणा जो खी अपणी शोकका
भाग खंडित करके मैथुन सेवे उसके चौथे
व्रतमें अतीचार लगे उन्नोंमें हमेसां नरमाय-
स रखणा कारण बहोत गुस्सेमें आणेसे प्राण
घातक कर बेठती है ओर विना नरमायस
कार्यमें हरजाणा करती है जो कदी घरकी
खी निर्गुणीनी मिलजाय तो बहोतही सम-
जदारीके साथ घरका कांम चलाणा देहमें
जीवहे उहांतक मजबूत बेनी लगी तनजाणा
गृहणीहै सोही घरहै नफा कहणेसें खी खुले
हाथोसें धन खरचणे लगजातीहै खीके पेटमें
.टक्ती नही इसवास्ते नुकसानी वगेरे

कुलकी उंरत पढी हुइ चतुर उंरत रूपवंत पद्मनी या चित्रनी वह उत्तम स्त्री कहलातीहे समजुवार उंरत तो घरमें मुकत्यारी करे तो फेरभी केइ बातोसें डुरस्तभीहे लेकिन् जिस घरमें प्रायें उंरतोका चलण होताहे वो घर मट्टी मिलजाताहे सरकारी दंभभी होताहे इसवास्ते चतुरोंकों चाहीये सो विगर विचारे घरमें उंरतोकों मुख्य नही करे जिसपर एसा दृष्टांतहे एक जुलाहे कपडे वूणनेवालेके घरमें स्त्री मुकत्यारथी वो जुलाहा एकदिन वस्त्र वूणनेके उंजारकेवास्ते लकडी लाणेकूं जंगलमे गया एक सीसमके दरखतकूं काटणेलगा उसका अधिष्टायक कोइ व्यंतर बोला मतकाट तोभी जुलाहा डरा नही साहसकर काटणेलगा तब इसका सत्व देखके भूत प्रसन्न होकर बोला वरमांग जो मांगेगा सो दूंगा वह जुलाहा स्त्री लंपटथा बोला मेरी उंरतसें पूछके वर मांगूगा खेर स्त्रीकूं जाके पूछा तब वो उंरत तुच्छ स्वभावकीथी इसवास्ते उसके यादमें एसी बात आइ ॥

श्लोक ॥ प्रवर्द्धमानपुरुष स्त्रयाणामुपघातकृत् पूर्वोपार्जितमित्राणां दाराणामथवेस्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थ—जब पुरषकूं लक्ष्मी बहोत मिलजाती

कोइ कारण योगसें दो स्त्री परणे तो दोनोंके पुत्रोंपर सम दृष्टि रखे उनोंमेंसें किसीका बारा खंडित नही करणा जो स्त्री अपणी शोक्का बारा खंडित करके मैथुन सेवे उसके चोथे व्रतमें अतीचार लगे उरतोसें हमेसां नरमाय- स रखणा कारण बहोत गुस्सेमें आणेसे प्राण घाततक कर बेठती हे उर विना नरमायस कार्यमें हरजाणा करती हे जो कभी घरकी स्त्री निर्गुणीनी मिलजाय तो वहोतही सम- झदारीके साथ घरका कांम चलाणा देहमें जीवहे उहांतक मजवूत वेडी लगी समझणा ...हे सोही घरहे नफा कहणेसें स्त्री खुल्ले थोसें धन खरचणे लगजातीहे स्त्रीके पेटमें बात टिकती नही इसवास्ते नुकसानी वगेरें कोइभी गुप्त बात उसके सांमने कहदेणेंसें लो- कोमें कहकर आबरू खोदेतीहे राजसंबंधी बा- तोकें कहणेसें राजदंडभी होजाताहे जिसपर एसा दृष्टांतहे रूमके बादशाहने दिल्लीके बा- फ ...हसें च्यार चीजें मंगवाइ गादीका गधा मनाइ कुत्ता असलकी कमअसल कमअसलकी जभल्ल वह दृष्टांतसे जांणना अर्थात् सब उरते ग्रंथमे लिखी नही होती प्रायें होतीहीहे अच्छे

कुलकी उर पढी हुइ चतुर उर रूपवंत पद्मनी या चित्रनी वह उत्तम स्त्री कहलातीहे समजु-वार उरत तो घरमें मुकत्यारी करे तो फेरभी केइ बातोसें उरस्तभीहे लेकिन् जिस घरमें प्रायें उरतोंका चलण होताहे वो घर मट्टी मिलजाताहे सरकारी दंमभी होताहे इसवास्ते चतुरोंकों चाहीये सो विगर विचारे घरमें उर-तोकों मुख्य नही करे जिसपर एसा दृष्टांतहे एक जुलाहे कपमे वूणनेवालेके घरमें स्त्री मु-कत्यारथी वो जुलाहा एकदिन वस्त्र वूणनेके उजारकेवास्ते लकमी लाणेकूं जंगलमे गया एक सीसमके दरखतकूं काटणेलगा उसका अधि-ष्टायक कोइ व्यंतर बोला मतकाट तोभी जुला-हा मरा नही साहसकर काटणेलगा तब इस-का सत्व देखके भूत प्रसन्न होकर बोला वरमां-ग जो मांगेगा सो दूंगा वह जुलाहा स्त्री लंपट-था बोला मेरी उरतसें पूछके वर मांगूगा खेर स्त्रीकूं जाके पूछा तब वो उरत तुच्छ स्वभावकी-थी इसवास्ते उसके यादमें एसी बात आइ ॥

श्लोक ॥ प्रवर्द्धमानपुरुष स्त्रयाणामुपघातकृत् पूर्वोपार्जितमित्राणां दाराणामथवेस्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थ—जब पुरषकूं लक्ष्मी बहोत मिलजाती

कोइ कारण योगसें दो स्त्री परणे तो दोनें
पूर्वापर सम दृष्टि रखे उनोंमेंसें किसीका बा
खंम्ति नही करणा जो स्त्री अपणी शोक
बारा खंम्ति करके मैथुन सेवे उसके चो
व्रतमें अतीचार लगे उरतोसें हमेसां नरमा
स रखणा कारण बहोत गुस्सेमें आणेसे प्रा
घाततक कर वेठती हे उर विना नरमाय
कार्यमें हरजाणा करती हे जो कभी घरव
स्त्री निर्गुणीनी मिलजाय तो बहोतही स
ऊदारीके साथ घरका कांम चलाणा देह
जीवहे उहांतक मजवूत वेमी लगी समजण
गृहणीहे सोही घरहे नफा कहणेसें स्त्री खुल
हाथोसें धन खरचणें लगजातीहे स्त्रीके पेट
बात टिकती नही इसवास्ते नुकसानी वगे
कोइभी गुप्त बात उसके सांमने कहदेणेंसें लो
कोमें कहकर आवरू खोदेतीहे राजसंबंधी ब
तोकें कहणेसें राजदंम्भी होजाताहे जिसप
एसा दृष्टांतहे रूमके बादशाहने दिल्लीके बा
फ शहरसें च्यार चीजें मंगवाइ गादीका गध
मनाइ कुत्ता असलकी कमअसल कमअसलकं
जभल वह दृष्टांतसे जांणना अर्थात् सब उर
ग्रंथमे लिरी नही होती प्रायें होतीहीहे अच्

एसी स्त्रीके संग अपणी स्त्रीके प्रीति करावणी उंरत बेमार परे तो उसकी दवा दारु पथ्य वगेरे करे लेकिन् उसकूं सूगाके बे बजे छोरणा नही तपस्या ऊजमणा दांन देवपूजा तीर्थ यात्रा वगेरे धर्मकृत्यमें उमंग वधाकर धनकी मदत देकर सहाय करणा लेकिन् अंतराय नहि करणा कारण स्त्रीके पुन्यमें पुरषका हिस्सा प्रतक्ष प्रमांणसेहे धर्मकृत्य कराणा यही परम उपगारहे उंर जब उपगारहे तब तो पुन्यमें नाग निश्चेहे ४ अब पूत्रके संबंधमे पिता संबंधी उचिताचरण कहतेहे पिताकूं चाहीये सो पुष्टिकारक अन्नादिक ऋतुपथ्य मुजब खिलावे बालकके मनमाफक फिरावे धिरावे तरे २ के खिलोंणे देकर कलाकुशल करे बालकपणेमें जो शंका करके दूबला सरीर रहे तो वोजवानीमें- नी कमजोर होताहे चाणक्य कहताहे पुत्र पांचवर्षका होय जहांतक लार लगाणा तदपीछे धमकीसें पढाणा खाणे पहरणेका लार रखणा एवं दसवर्ष बाद मारपीटके साथनी हितशिक्षा उंर विद्याभ्यास कुलाचार सिखाणा सोले वर्ष बाद मित्रकी तरे पिताकूं वर्त्ताव पुत्रसें करणा देव गुरु धर्म सुखी स्वजन इनोके संग हमेसां

है तब पुरष पुराणे दोस्तकूं उरतकूं उर पुराणे घरकूं गोमदेताहै एसा विचार करके स्याविदसें कहा हे पति वना डुखदाइ राज्य लेकर न्या करोगे एसा वर मांगां सो दो हाथोके च्यार तो हाथ हो जावे उर दो सिर होजावे पेट एकही रहै अगर जब च्यार हाथ होयगा तब डुप्पट मजूरी कमाउगें इतनेमेंही अपणा घर तो धनसें नरजायगा अहो २ स्त्रीकी स्वार्थता व्यर्थ सर्वस्व खोणेका उपाय बताया उसने वेसाही वर मांगा नूतने वेसाही बणादिया गांमके लोकोने उसका एसा विचित्र रूप देखकर राक्षस जांणके लठी उर पच्छरोंसे मारनाला जिसमें अपणी अक्कल होय नहि स्याणे मित्रका कहा माने नहि उर अक्कलहीन स्त्रीके वसमे रहै वो इस जुलाहेकी तरे नास होय इस मुजब दृष्टांत कोइयक ठिकाणेही वण आताहै बुद्धमांन स्त्री होय तो उसकी सल्ला जरूर लेणा फायदा होताहै इसपर अनुपम देवी उर वस्तुपालका दृष्टांत जांणना अच्छे कुलकी पक्की ऊमरकी कपट करके रहित धर्म करणी करणेमें तत्पर अपणे साधर्मणी उर अपणे स्वजनसंबंधीयोके घरकी बेटी वहू होय

एसी स्त्रीके संग अपणी स्त्रीके प्रीति करावणी उरत बेमार पके तो उसकी दवा दारु पथ्य वगेरे करे लेकिन् उसकूं सूगाके बे बजे छोमणा नही तपस्या ऊजमणा दांन देवपूजा तीर्थ यात्रा वगेरे धर्मकृत्यमें उमंग वधाकर धनकी मदत देकर सहाय करणा लेकिन् अंतराय नहि करणा कारण स्त्रीके पुन्यमें पुरषका हिस्सा प्रतक्ष प्रमांणसेहे धर्मकृत्य कराणा यही परम उपगारहे उर जब उपगारहे तब तो पुन्यमें जाग निश्चेहे ४ अब पूत्रके संबंधमे पिता संबंधी उचिताचरण कहतेहे पिताकूं चाहीये सो पुष्टिकारक अन्नादिक ऋतुपथ्य मुजब खिलावे बालकके मनमाफक फिरावे धिरावे तरे २ के खिलोणे देकर कलाकुशल करे बालकपणेमें जो शंका करके दूबला सरीर रहे तो वोजवानीमें भी कमजोर होताहे चाणक्य कहताहे पुत्र पांचवर्षका होय जहांतक लाम लमाणा तदपीछे धमकीसें पढाणा खाणे पहरणेका लाम रखणा एवं दसवर्ष बाद मारपीटके साथभी हितशिक्षा उर विद्याभ्यास कुलाचार सिखाणा सोले वर्ष बाद मित्रकी तरे पिताकूं वर्त्ताव पुत्रसें करणा देव गुरु धर्म सुखी स्वजन इनोके संग हमे

परिचय कराणा कारण अच्छे मनुष्योंके संग दोस्ती कराणेसें वल्कलचीरीकीनरे हमेसां धर्मकी वासना बणी रहतीहे उत्तम जातिके कुलवंत सुशीलके संग दोस्ती करणेसें कदास धन नही मिले भाग्ययोगसें लेकिन् आवता हुवा अनर्थ तो जरूरही टलजाताहे क्योंके अनार्य देशमें पेदा हुये हुये आड्र कुमारके अभय कुमारकी मित्रता मुक्तीकेवास्ते हुई लरुकेकूं अच्छी कुलकी ओर अच्छे रूपकी अठारे वर्षमें इग्यारे तथा वारे वर्षकी कन्यासें सादी करावणी लरुकेकूं चाहीये सो वीस वर्ष उपरांत शंशारी उत्पत्तिके काममें जयणा करे अनुक्रमसें घरके कामकाजकी मुक्त्यारी स्यानसबूरीमाफक सोंपे जो कदास योग्य कन्या परणावे नही तो उलटी विटंवना होजातीहे कारण दोनोंजणे अनुचित कृत्य करणे लगजावे तो फजीता होताहे आपसमे एक २ के परसन नही परु तव स्त्री भर्त्तारके आपसमें विरोध परुजाताहे धारानगरमें एक कुरूप निर्गुणीके तो बरुी रूपवान ओर गुणवान स्त्री व्याहे गइ ओर एक रूपवान गुणवानकूं विदरूप ओर निर्गुणी स्त्री व्याहेगइ भवतव्यतासें दोनोंके घरमें चोरोने

खातमाली आगे दोनुं जोमोका संयोग उरस्त नही एसा समज उन चोरोने वो रूपवांन स्त्री रूपवान पास सुलायदी कुरूप कुरूपके पास धरदी रूपवंत दोनों दिलमें उदासथे उन दोनोंके तो मनकांमना पूरी नई लेकिन् विदरूप वणिया प्रन्नातसमें एसा हाल देखकर राजा नोजसें फरियादकी तब राजा सहरमें ढंढोरा पिटवाया ये काम किसने कीया ऊंर क्यों कीया करणेमें क्या फायदा देखा मेरे सांमने जाहर होवे तब चोरोने आकर कहा गरीब परवर काग हंशका जोमा जो विधाताने नूलके करदीयाथा सो नूल हम चोरलोकोने सुधारदी रत्नसें रत्न मिलादीया यह बात राजा सुणके हुकम दीया यह इनसाफ ठीकहे पुत्रकूं हमेसां पेदास खरच करणेका घरकांममें लगाणा जो लायक होय तो घरकी मुकत्यारी सोंप देणी क्योंके हमेसां घरके फिकरमें रहणेसें इच्छा चारी तथा मदोन्मत्त नही होताहे बमी तकलीपसें धन कमाणा पमताहे इस बातका जाणकार होजाय तब धन नही ऊमाताहे ढोटी ऊमरमें इसमेही प्रतिष्ठित इज्जतदार कहलाताहे जेसें राजगृही नगरीका प्रशेनजित राजा अपणे

सो लम्कोंका इमतियान करता हुवा श्रेणिककूं योग्य जांण उसकोंही राज्य सोंपदीया तेसें लम्केके माफक लम्कीका नतीजेका वेटेकी बहूका उचिताचरण जांणना जेसें धन्नासेठ च्यारों वेटेकी वहूकी परिक्षा करणेकूं पहली उज्झिताकूं पांचशालि चावलोके दाणे दिये उसने फेंकदिये दुसरेकी बहू भोगवती सो उस दाणोंकों खागइ तीसरी रक्षिता यतनसे रख छोना चोथेकी बहू रोहणी उसने अपणे पीहरके कर्षोंकों देकर खेतमें वो वादीये उस्सें तीसरे वर्ष जाते एककोठार भरगया परीक्षा पूछी तब सुसरेकूं दिखलाये तब सेठ फेंकणेवालीकूं झाडू बुहारु करणेका काम सोंपा दुसरीकूं राधणेका काम सोंफा तीसरीकूं आटा सीधा वगेरे घर विखरीका काम सोंपा रोहणीकूं गहणा जवाहिर रुपीया मोंहरे वगेरे सोंपी इय च्यारोंहीमें जो जो गुणथा वेसाही उनोनें ग्रहस्थाश्रममें उन्नतीकर दिखलाइ बापकूं चाहीये पुत्रकेरूबरू तारीफ नही करे कारण फेर उसकी लायकी और गुण बढते नही अभिमानमें आजाताहे कदास लम्का जूआ या चोरी या रंडीबाजी नसाबाजी पेटीपणा वगेरे कुलक्षण

सीखजावे तो उस कामोसें धनका नास बेइ-
ज्जती राजदंड होताहे इत्यादिक दुर्दसाकी
बातोके दृष्टांत सुणावे जो लडका अक्कलवाला
ओर तकदीरवाला होय तो जरूर विसनोसें बच
जाताहे रोकडकी कूंची लडकेकूं सोंपे तो आवंद
खरच ओर शिलक हमेसां संभाल लेवे उसकरके
मनोमती नहि होसके गुरूकी तारीफ सामनें
करणी भाईकी ओर दोस्तकी तारीफ पिछाडी
करणी चाकरकी दासकी गुमास्तेकी तारीफ
अच्छा कांम करचूके तब करणी स्त्रीकी तारीफ
मरे बाद करणी पुत्रकी तारीफ तो बिलकुल
करणीही नहीं जो करणी तो पीछाडी करणी
जबकी बिना तारीफ कीये सरे नही तब लड-
केकूं राजसभा दिखलाणी क्योंके कोइ कर्म-
योगसें अणचिंता संकट आपडे तो कायर होके
घबराता नहीहे बडे २ राजमान्य पुरषोके संग
मोहबत करणेसें बहोत फायदाहे जेसेंके धन-
वानके दुस्मन बहोत होतेहे हरतरेसें जालला
पटकतेहें इसवास्तें राजवर्गीयोसें धनका फाय-
दा नही होवे तो अनर्थ तो जरूरही मिटा
सकतेहे परदेसकी रीतभांतसें लडकेकूं जरूर
वाकिफ करदेणा चाहीये क्योंके जब परदेशके

चाल चलणासें वाकबी नही होवे वखत पमणे-
पर परदेश जाणा पमे तब गोनूजाणके परदे-
शके जालसाज अनेक तरेके फंदसें धनका
लालच दिखाकर ठग लेतेहे तास गंजीफेके
खेलसें नोट बणाणेकी धोखाबाजीसें जमीनमें
गमाहुवा धन दिखाकर वेस्यायोंकों भाग्यवा-
नकी स्त्रियां बणाकर मम्मइ वगेरे मुल्कमें सो-
नाटोलीके लुच्चे विद्यमांनसमेंमें अनेकोंकों ठग-
तेहे मिरजापुर कासीमें गुंमेलोक कोइतो आ-
गूंकी वीतक वात वापदादोका नांम वताकर
पहचान निकालकर अपणे मकानमें लेजाकर
माल छीनलेतेहे कोइ निजूमी कोइ हकीम ब-
णाकर पसारीयोसें मिलकर माल उतारतेहे जे-
पुर आगरे वगेरोमें दलालोका फंदा लुचाइकाहे
इत्यादिक देसावरी हालतोसें वाकबकर देणा
चाहीये इसबजे मातानी पुत्रकेवास्ते पूत्रकी
बहूकेवास्ते उचिताचरण करणा अपणी सोकके
बेटेका लाम अपणे पूत्रसें ज्यादे रखणा इस
बातोंसें डुनियामें तारीफ होतीहे पराये जाये-
को अपणा करके केवटणा यह बात बमी लाय-
क वंदीकीहे पिताके कुलके माताके कुलके तथा
स्त्रीके कुलके जो लोक होतेहें वो स्वजन कह-

जानेहे उनोके संगभी उचिताचरण रखणा अपणे घरमें पुत्रजन्म तेसें विवाह सगाइ वगेरे मंगलीक कामोंमें उनोका हमेसां सत्कार करणा तेसेंही उनोंके नुकशांन वगेरे पमजावे तो उनोंकों अपणेपास रखणा स्वजनोमे संकट आपमे तब अथवा उनोंके घर उच्छव होवे तब उनोके इहां आप जाणा रोगाग्रस्त अथवा धनहीन होजाय तो उनोका उद्धार करणा मित्र ओर स्वजन वोही कहलाताहे जो रोगमें आपदामें डुकालमें संकट आपमे तब राजद्वारमें ओर स्मशानमें जो संग रहे ओर छेहनही दिखावे सो बंधव कहताहे स्वजनोका उद्धार करणा वो अपणाही उद्धार समजणा कारण लक्ष्मी चंचलहे अरटकी घमनालकी तरे भरी ओर खाली होजातीहे तेसेंही पेसेवाला दलद्री ओर दलद्री तालेवर होजाताहे इसवास्ते जिसकूं सहाय आपने कीया होय वखत पमणेपर जरूर वो अपणी सहाय करताहे स्वजनोकी परपूठ निंदा नही करणी उनोके संग मस्करी वगेरेमेंभी विगर कारण सूका वाद नही करणा कारणके वादविवादमें बहोत दिनोंकी प्रीती तूटजातीहे स्वजनोके शत्रूके साथ दोस्ती नही करणी स्वज-

नके मित्रोके साथ मित्राइ करणी स्वजन घरमें नही होय ओर उनकी एकेली स्त्री घरमे होय तो एकेला नहि जाणा स्वजनोके संग उधार-का धंदा देस काल भाव सोचके करणा देवका या गुरुकाया धर्मका काम होय तो उनोमें सजनोके संग एक दिल होणा दोस्तीकी जगे तीनकाम नहि करणा वादविवाद उधारपार उनके नही रहणेसें उनकी स्त्रीके संग वात ये तीन वात नही करणी शंशारके काममेंभी जब च्यार आदम्योंका एक दिल होताहे तब अच्छी तरेसें काम सुधरताहे तेसेंही जिन मं-दिर वगेरे धर्मकांममें तो निश्चेही एक दिल ... हीकाम निर्वाण चढताहे क्योंके धर्म- ... तो सर्व श्री संघके आधारपरहे स्वज- .के संग एकदिल होणेपर पंच अंगुलीयोका दृष्टांतहे पहली अंगूठेकी पासकी अंगली तर्जनी सो लिखणेमें चित्राम करणेमें कोइ चीजकूं दिखाणेमें चीजोकी तारीफ करणेमें चिमटी ब-जाणेमें अगवाणीहे इसवास्ते अहंकारमें आकर मध्यमा जो बिचली अंगलीहे उसकूं पूछणे लगी तेरेमें क्या गुणहे तब मध्यमा बोली मे सब अं-गुली- योमें मुख्यहूं बडीहूं बीचमें रहतीहूं तंभी

गीत ताल वगेरे कलामें कुशलहूं कामकी जल
दीपणा बताणेकूं अथवा दोष छल वगेरोका नास
करणेकूं चिमठी बजातीहूं टचकारासें शिक्षा
करतीहूं एसेंइ तीसरी अंगली अनामिकाकूं
पूछा तब वो बोली देव गुरु स्थापनाचार्य सा-
धर्मीयोकी नवांग पूजा मंगलीक साथिया नं-
द्यावर्त्त वगेरे करणा जल चंदन वासक्षेप चूर्ण
वगेरोका मंत्रणा ये कांममे करसकतीहूं तब
तर्जनी चोथी अंगुलीसें पूछा तब वो बोली में
पतलीहूं इसवास्ते कांन वगेरेकी खाज खुणनी
शरीरमें कष्ट आवे तब तकलीप पातीहूं भूत
शाकनीके उपद्रवमें कष्टसहके दूर करतीहूं
जापकी गिणती करणेमें अगवाणीहूं एसा सुण-
के च्यारोंही आंगलीयोनें आपसमें दोस्ती करी
उर अंगूठेकूं पूछा तुमारेमें क्या गुणहे तब अं-
गूठा बोला में तुमारा मालकहूं देखो लिखणा
चित्रांम कवा ग्रास लेणा चिमठी भरणी चिमठी
बजाणी टचकारा करणा मूठी भरणी गांठ देणी
हथियार वापरणा दाढी मूंछ समारणा कतरणा
कातणा उखेरणा लोच करणा पीजणा वूणना
धोणा कूटणा दलणा पुरसणा कांटा निकालणा
गाय दूहणी जापकी गिणती करणी बाल अ-

साचवणेमें मंद आदर दिखावे लेकिन् साधूकों कोइ उसरा अनादर करे तो तुरत उहां जाय करके सहाय करे वो श्रावक नाइ जेसा जांणना २ जो श्रावक साधूउंकों स्वजनसेंभी ज्यादे गिणे उर कोइ कामकाजमें साधू सला नही पूछे तो अहंकारसें क्रोध करे वह श्रावक मित्र जेसा जांणना ३ जो गृहस्थ अहंकारी साधूउंका छल छिद्र हमेसां देखा करे उर उनोका जो कसूर प्रमादसें होजावे वो हमेसां जाहिर कीया करे उर उन जती साधूउंको तिणखे जेसा गिणा करे वो श्रावक शोक जेसा जांणना निंदक लोकोंहे सो जो कुछ जिन मंदिर जैन

ी हीलना निंदा करते होय तो यथा,
मिटाणा चाहीये जेसें कुंभारके भवमें
हजार आदमीका कीया हुवा उपद्रव दूर कीया यात्रा जाते हुये संघकी रक्षा करी वो मरके सगर चक्रवर्त्तिका पोता जन्हुकुमार हुवा वह दृष्टांत जाणना धर्माचार्य शिक्षा दे तो तहत्त कहणा धर्माचार्य कोइ तरेका प्रमाद सेवते

तो समझाणा माहाराज आप
यह बात योग्य नही इत्या-
शष्योकों चाहीये साम-

ने आणा ऊठणा आसण देणा पग चंपी करणी शूश्रू वस्त्र पात्र अन्न उषधी ज्ञानके उपगरण वगेरे समयके उचितविनय उपचारभक्तिसे करणा हृदयमें प्रीति रखणी आप परदेशमें होय तो गुरुका सम्यक्त दानके उपगारकूं हमेसां याद करे अब सहर वस्तीके लोकोंसें उचिताचरण लिखतेहैं सहरके लोकोंमें कोइ संकट आय पड़े तो मनमें समजणा की मेंभी संकटमें पड़ाहुं एसा विचारणा उच्छवमें होय तो आपभी उच्छव मांणना क्योंके एक वस्तीमें रहके द्विधा भाव नही रखणा एक धंदेके रुजगार करणेवालो आपसमें कुसंप होय तो निश्चे वो लोक संकटमें जा गिरतेहे बड़ा कोइ काम करणा होय तो बड़ाइ वधाणेकेवास्ते सब नागरिक लोकोंके संग जाणा जिस्सें किसीका दिल नही दुखे इकेले नही जाणा कोइ कांमकी गुप्त मसलत करी होय तो बाहिर प्रकाश नही करणी किसीकी चुगली नहि करणी सब बराबरीके होय तोभी मुसलमीनोकी तरे एककूं अगवाणी करके आप उनोके पिछाड़ी रहणा लेकिन् राजाके हुकम मुजब मंत्रवी परीक्षा करणेकूं एकसेज सबोकों सोनेकूं दी तब पांचसे

पातेहे तब आपसमें संप उंर प्रीति छोरु देतेहे जब वस्तीवालोमें संप नही होय तो कितनाही ताकतवर क्यों न होय वगरूमेंसे निकले हुये सिंघकी तरे जहांतहा अनादर पाताहे इसवास्ते आपसमें संप रखणा कल्याणकारीहे उसमेंजी अपणे पक्षमें न्यातीगोतीयोमें तो जरूरही चाहिये क्योंके छिलके दूर करदीये जाय तो चावल ऊगते नहीहे इत्यादिक जांणना अपणा जला चाहो तो राजाके देवस्थानके अथवा धर्मखातेके अधिकारी देरासरी तथा उनोके नीचेके लोकोके संग लेणदेणका विवहार नही करणा क्योंके ये लोक पहले तो मीठी बात बणाकर आसन उंर पान बीमी देकर जलाइ दिखातेहे लेकिन् वखत परूणेपर रूपे मांगणेसें एसा कहतेहे हमने तुमारा वो कांम कीया वो कांम कीया तिलके फोतरे जितने उपकारकूं उस वखत पहारु जितना गिणातेहे पहली बातकूं जूलजातेहे ब्राह्मणमें क्षमा १ मातामें द्वेष २ कसवणमे प्रेम ३ उंर सरकारीय हुदेदारोमें इमानदारी ४ ये बातें प्रायें होणी मुसकिलहे देणा तो दूर रहा लेकिन् ज्यादा मांगणेसें कोइ ज्यादे तूमत लापटकतेहे क्योंके

मूर्ख कुसंपसें आपसमे झगडे लगे एसें कुसंप-
वाले लोकोकूं संग ले राजाकी मुलाखात कर-
णेकूं नही जाणा ओर एसोंकी अरजनी नहि
करणी प्रतक्ष प्रमांणहे कितनीही नाकात तुच्छ
चीज होय लेकिन् जब वोही चीज वहोत
एकठी होजाय तब बडी ताकतपर होजातीहे
देखीये कच्चे घास या सूतके तागे जब सांमल
होके रस्सा बनाया जाताहे तब हाथी जेसें
ताकतवरकूं बांध लेताहे जो अदमी आपसमें
एक २ का मर्म उघाडे वो वंबीमे रहे ओर पेटमे
सापकी तरे मरणांत कष्ट पाते हे ॥ श्लोक ॥
रूपराणिमर्माणि जापंतेअधमानराः ते नरावि-
लयंयाति वल्मीकोदरसर्पवत् ॥ १ ॥ किसी दोनो
अदम्योके आपसमें झगडा होय तो तराजूके
पालणे मुजब बराबर रहणा लेकिन् अपणे
स्वजन संबंधीयोकी खेंच अथवा किसीसें रुस-
पतखाके न्यायसें वेमुख कनि नही होणा उप-
गारनी सच्चे इनसाफसें करणा आप समर्थ
होकर गरीब लोकोंपर मासूल कर तथा राज-
दंडसें सताणा नही तथा थोडा कसूर किसीने
कर लीया होय तो एकदम दंड नहि करणा
मासूल तथा राजदंडसें तकलीप जब लोक

धनवानके लागूहे दलड्डीपर कोण नूमत लाताहे इसवजे नागरिक लोकोका उचिताचरण जांणना अव अन्यदर्शनी नेपधारीका उचिताचरण लिखतेहे अन्यदर्शनी नेपधारी अपणे घर नीखकूं आवे तो उनोंकों यथायोग्य दांन देणा उंर राजमान्य एसा जो अन्यदर्शनी मकानपर आवे तो विशेप नक्तीकरके दांन देणा श्रावकके दिलमें अन्य दर्शनीके नेपकी नक्ती तो नही उंर नही उनके गुणोका पक्षपातहे तोनी मकानपर आये हुयेका आदरमांन करणा गृहस्थका धर्महे मीठा वचन वोलणा आसण देणा जीमणेकूं निमंत्रणा करणी किसकारणसें आणा हुवा सो पूछणा उनोका काम करणा संकटमे पमे हुये लोकोकूं बाहिर निकालणा यह बात सर्व धर्मीयोकूं सम्मतहे श्रावककूं जो उचिताचरण करणा लिखा उसका मतलब एसाहे जो की उचिताचरण करणेमें कुशल नहीहे वो पुरष लोकोत्तर पुरष जो सर्वज्ञ उनकी वाणीका सुक्ष्म बुद्धिसें गृहण करणा एसा जो जैनधर्म उसमें केसें कुशल होसके इसवास्ते धर्मार्थी लोकोकूं अवश्य उचिताचरण ध्यांनमें लेणा गुणपर प्रीति रखणा दोषोंपर मध्यस्थ नाव रखणा जिन

वचनपर रुचि राखणी यह सम्यग् दृष्टिका ल-
क्षणहे समुद्र मर्यादा छोम्ता नही पर्वत चलाय
मांन होता नही तेसेंइ उत्तम पुरष उचिताचरण
छोम्ते नही इसवास्ते जगद्गुरु तीर्थंकरनी गृ-
हस्थपणेमें मातापिताके संबंधमें उठणा प्रमुख
आदरसत्कार करतेहे बमे पुरष आणेसें आदरसें
उठणा प्रमुख आचरणा करतेहे तो फिर उनोसें
ज्यादा कोणहे सो उचिताचरण नही करे ऊपर
लिखे उचित वचनोंसें बहोत गुण पैदा होतेहे जेसें
आंबम जिसकी उंलादवाले नणशाली उंसवाल
बजतेहे शोलंकी राजपूत वो आंबम मल्लिकार्जु
नकूं जीतकर चवदे क्रोम मोलका नरे हुये छवटो
करी चोदे २ नार तोलके एसे सोनेसें नरे हुये
बत्तीस घमे सिणगार उंरत मर्दोंके सजणेके
रत्नजमित एक क्रोम जहरकूं मिटाणेवाली सीप
वगेरे धनमाल चहुआण महाराज कुमारपालके
खजानेमें माली तब राजा प्रसन्न होकर राज-
पितामह एसा विरुद उंर क्रोम द्रव्य उंर
चोवीस जातिवंत घोमे एसा इनाम दीया ये
सब धन आंबट घर पोहचते २ रस्तेमेंही या-
चकोकों देदीया इसबातकी चुगली किसीने
राजासें खाई तब राजा गुस्सेमें आकर आंबम

[illegible] को २० बने कायदेकी
[illegible] २१ साधारण बोलणेमें
[illegible] शब्द बोले २२ बेटेके
[illegible] आप हीन दुखी होवे
[illegible] उधार वगेरे मांगणी
[illegible] होणेमें दूसरी
[illegible] संग हरीफाइसें
[illegible] गुस्सा करके उसका
[illegible] लोकोंकी करी हुई
[illegible] मनमें अहंकार लावे २८ आपणी
[illegible]

समझे उसके आगे अपणा गुण प्रगट करे ३८ शरीर निरोगी रहते हुये वे हमसें दवा खावे ३९ रोगी होकर पथ्यपरे जनहि करे ४० लोभके वस स्वजनोकूं छोडदे ४१ जिस वातोसें दोस्तका दिल खट्टा होजाय एसी बात कहे ४२ फायदेका वखत आवे उस वखत आलस करे ४३ बमा धनवान होकर लमाइ दंगा करे ४४ जोतषीकी जुवानपर भरोसा रखके राज्य मिलणेकी इच्छा करे ४५ मूर्खके संग सल्लाह करणेका आदर रक्खे ४६ गरीब अनाथ लोकोकूं तकलीप देणेमें सूरवीरता जाहिर करे ४७ जिसकी एवजा हिरा देखणेमे आवे एसी उरत परप्रीति राखे ४८ गुणके सीखणेमें क्षणमात्र प्रीति राखे ४९ दुसरोंका जमा कीया हुवा धन उमावे ५० अहंकार रखकर राजा जेसा बणाव करे ५१ लोकोके सामने राजा वगेरोकी जाहिर निंदा करे ५२ दुख आणेसें दीनपणां प्रगट करे ५३ सुख होणेसें आगे होणेवाली खोटी गतिकूं भूल जावे ५४ थोमे बचावकेवास्ते ज्यादे खर्च करे ५५ परिक्षा करणेकूं जहर खावे ५६ किमियागरीमें धन होमे ५७ खयरोग होगयेवाद फेर रसायण खावे५८

जीमणेके वखत क्रोध करे २० बमे कायदेकी आसासें धन विखेरे २१ साधारण बोलणेमें कठन संस्कृत वगेरेके शब्द बोले २२ बेटेके हाथमें सब धन सोंपके आप दीन दुखी होवे २३ उंरतके पक्षके लोकोसें उधार वगेरे मांगणी करे २४ उंरतके संग लमाइ होणेसें दूसरी सादी करे २५ कामी पुरषोके संग हरीफाइसें धन उमावे २६ लमकेपर गुस्सा करके उसका नुकसांन करे २७ मंगत लोकोंकी करी हुई स्तुति सुणके मनमे अहंकार लावे २८ अपणी अहंकार बुद्धिसें दुसरेका हितकारी वचन नही सुणे २९ हमारी बमी जातिहे एसे अहंकारसें किसीकी नोकरी नहि करे ३० दुखसें कमाया जावे एसा जो धन सो देकरके कांम भोग सेवे ३१ मोल किराया देकर खराब रस्ते जावे ३२ जो राजा लोभी होय उर उसके पाससें धन लेणेकी आसा रख्के ३३ हाकम दुष्ट अन्याइ होय उसके पाससें धनकी आसा रखे ३४ कायस्थ लोकोसें दोस्ती मोहबतकी आसा रख्के ३५ मंत्रबीजादिल क्रूर कठोर होय उसका मर नही रख्के ३६ कृतघ्नीसें उपगारके बद-लेकी आसा रख्के ३७ जो मूर्ख रसकूं नहि

समजे उसके आगे अपणा गुण प्रगट करे ३७ शरीर निरोगी रहते हुये वे हमसें दवा खावे ३९ रोगी होकर पथ्यपरे जनहि करे ४० लोकके वस स्वजनोकूं गेमदे ४१ जिस वातोसें दोस्तका दिल खट्टा होजाय एसी बात कहे ४२ फायदेका वखत आवे उस वखत आलस करे ४३ बमा धनवान होकर लमाइ दंगा करे ४४ जोतषीकी जुवानपर भरोसा रखके राज्य मिलणेकी इच्छा करे ४५ मूर्खके संग सल्लाह करणेका आदर रक्के ४६ गरीब अनाथ लोकोकूं तकलीप देणेमें सूरवीरता जाहिर करे ४७ जिसकी एबजा हिरा देखणेमे आवे एसी अंरत परप्रीति राखे ४७ गुणके सीखणेमें क्षणमात्र प्रीति राखे ४९ डुसरोंका जमा कीया हुवा धन उमावे ५० अहंकार रखकर राजा जेसा बणाव करे ५१ लोकोके सामने राजा वगेरोकी जाहिर निंदा करे ५२ डुख आणेसें दीनपणां प्रगट करे ५३ सुख होणेसें आगे होणेवाली खोटी गतिकूं भूल जावे ५४ थोमे बचावकेवास्ते ज्यादे खर्चे करे ५५ परिक्षा करणेकूं जहर खावे ५६ किमियागरीमें धन होमे ५७ खयरोग होगयेवाद फेर रसायण खावे५७

आप अपणे बमाईका अभिमांन रक्खे ५९ गुस्सेमें आकर आत्मघात करणेकूं तयार होय ६० नित्त विगरकारण इधर उधर भटकता रहे ६१ शस्त्रोंके प्रहार लगेबाद फेरभी युद्ध देखे ६२ बमोके साथ विरोध करके नुकशानीमें जा पमे ६३ थोमा तो धन होय उर आमंबर बमा रक्खे ६४ में पंमित हूं एसा समजके बहोत बकवाद करे ६५ अपणी सूरवीरता समज किसीका मर नही रक्खे ६६ बहोत व्याख्यान करके अगले अदमीकूं त्रास उपजावे ६७ हासी करता हुवा मर्मकी जुवान कहे ६८ दलभीके हाथमें अपणा घर सोंपे ५९ पैदास तो होय नहि उर धन खर्च करे ७० अपणे हक्कमे खरच करणेकूं कंजूसपणा करे ७१ तकदीरके भरोसे रहकर उद्यम नहि करे ७२ आप दलभी होकर बात बणाणेमें वखत गमावे ७३ व्यसनकी उलफतमें गिरके जीमणाभी भूलजाय ७४ आप निर्गुणी होकर अपणे कुलकी बहोत तारीफ कीया करे ७५ वररा उर करमा स्वर होय उर गाणा गावे ७६ उरतसें मर कर याचककूं दांन नही देवे ७७ कृपणपणा करके डुर्दशा भोगे ७८ जिस अदमीके प्रगट अवगुण दिखते

होय एसे अदमीकी तारीफ करे ७७ सज्जाका कांम पूरा हुवे नही ओर पहली ऊठजावे सो ७० दूतयाने हलकारेका काम करे ओर संदेसा जूल जावे ७१ खासीका रोग होय ओर चोरी करणेकूं जावे ७२ डुनियामें नामवरी ओर यशकी इच्छाके चाहसे जोजनका खरच बहोत रख्के ७३ लोक मेरी तारीफ करेगा इस जरोसे आहार थोमा करे ७४ जो चीज थोमी होय वो चीज बहोत खाणेकी इच्छा करे ७५ कपटी ओर मीठे वचनोके बोलणेवालेके जालमें जाफसे ७६ कसवणके जारके संग लमाइ करे ७७ दोजणे कोइ गुप्त सल्ला करते होय उसके बीचमें तीसरा आप जावे ७८ राजाकी महरबानी हमेसां बणी रहेगी एसा दिलमें जरोसा रख्के ७९ अन्यायके रस्ते चले ओर आपणी बढोतरीकी आसा रख्के ७० धन तो पासमे होय नही ओर धनसें होणेवाले कांम करे ७१ छानेकी बात लोकोमें जाहिर करे ७२ यशकेवास्ते अजाण अदमीका जाम न होय ७३ हितवचन कहणेवालेके संग वैर करे ७४ सब जगे जरोसा रख्के ७५ लोक व्यवहार नही जाणे ७६ याचक जीख मंगा होकर गरम जोजन करणे-

की टेंम रक्खे ए७ मुनिराज होकर क्रिया पा-
लणेमें शिथलतता रक्खे ए८ कुकर्म करता हुवा
सरमावे नही एए जेर बोलता हुवा वहोत हसे
१०० इसतरेसें सो मूर्ख जांणना जिस बा-
तोसें अपयश होय एसे सब काम छोमणा इस
तरेसें विवेक विलासमें जिन दत्त सूरजीने
लिखाहे सन्नामें बगासी हिचकी म्कार हासी
वगेरे करणा पमे तो मुख ढांककर करणा सन्ना-
में नाक कुचरणा नही जेर हाथ मरोमणा नही
पालखथी मारणी नही पगलंबा नही करणा
निद्रा विकथा वगेरे खराब चेष्टा नही करणी
उत्तम पुरपोका हसणा होठ फुरकाणे मात्र
होताहे ज्यादे हसणा अनुचितहे बगल नहि
बजाणी अंग बजाणा तिणखा तोमणा हाथसें
जमीन खोतरणा नखसें नख अथवा दांतोका
घसणा ये बातों नही करणी चारण नाट ब्रा-
ह्मण वगेरोके मुखसें अपणी तारीफ सुणके
मनमे अहंकार नही लाणा जेर समजवार अ-
दमी अपणी तारीफ करे तो मनमें समजणाकी
इतना गुण तो मेरेमेहे लेकिन् अन्निमांन नही
करणा डुसरे अदमीके कहे मुजब वचनके अ-
न्निप्राय दिलमें धरणा नीच अदमी अपणेकुं

हलकी जुवान कहे तो पीछा उत्तर हलकी जुवानसें नहि देणा जो बात वीतगइ या आगे होणेवाली या वर्त्तमानकालमें भरोसा रखणे योग्य नही होय एसी बातमें एसा नही कहणा की ये तो सच्च हे उर एसेंहीहे एसा प्रगट अपणा अभिप्राय नही जाहिर करणा कोइ काम किसीके पाससें कराणा विचारया होय तो उसके सांमने किसी दृष्टांतसें अथवा विशेष वचनोसें पहली जताणा चाहीये अपणा विचारया हुवा कामके अनुकूल कोइ वचन कहे तो जरूर मांन लेणा चाहीये जिसका कांम अपणेसें नही बणसके उसकूं पहलेहीसे नहिं कहदेणा झूठी दिलासा देकर धक्का नही खिलाणा चतुर पुरषोकूं चाहीये सो अपने दुस्मनकोंभी करुवी जुवान नही कहे अगर किसी मोंकेपर सुणाणा पडे तो मिसालकरके दुसरेके वहानेसें सुणाणा जो अदमी माता पिता रोगी आचार्य प्राहुणा भाइ तपस्वी बुढ्ढा बालक दुर्बल गरीब आदमी वैद्य अपणी उलाद भायोके कुटंब चाकर बहेन इणोके संग लडाइ नही करें वो अदमी तीन जगतकूं वस करे एक टकी लगाकर सूर्यके सा-

मने नही देखणा तेसें चंद्र सूर्यका ग्रहण लगे त
कूवेका पाणी उंर संझ्या कीसमें आकास दे
नही देखणा स्त्रीपुरषका संन्नोग सिकार जवा
नीमे नरपूर नंगी स्त्री जांनवरोका मेथुन क्रीम
उंर कंन्याकी योनि तेलमें जलमें हथियारमें
मूतमें तेसें खूनमें अपणी पम्छिांई नहि देखणी
एसें करणेसें आयु घटतीहे अच्छे वमे उंर सु-
सील आदमीयोकी वातकूं काटणा गइ चीजका
फिकर करणा किसीकी निद्रा नंग करणा इ-
त्यादिक वातें कन्नी नहि करणा बहुतोंके साथ
वैर विरोध नहि करणा बहुतोकी मत जिधर
होय उधरही मति देणी जिस कांममें स्वाद
नहि एसान्नी कांम समुदायके संग करणा
समजवारोकों चाहीये सब शुन्न क्रियामें आ-
गेवांन होणा जो अदमी कपटसेंन्नी निलोंन्नी-
पणा दिखलावे तो उसमेंन्नी गुण हासिल हो-
ताहे किसी अदमीका नुकसांन करणेसें कोइ
कांम सिद्ध होता होय तो एसा कांम बणे ज-
हांतक नही करणा सुपात्र अदमीकी इर्ष्या
नहि करणी अपणी जातिपर संकट आपमे तो
जाति नही छोमणी बहोत आदरसें जातिमें
संप होय एसा काम करणा एसा नही करे तो

मान्य पुरषोका मांनखंडन ओर अपयश होताहे अपणी जातिकों छोड पराइ जातिमें जो आसक्त होताहे उसकी कुकर्दम राजाकी तरे दुर्दसा होतीहे जातिमें कलह करणेसें अदमी भ्रष्ट मिलजाताहे ओर संपमे रहे तो कमलमें कमलणीकी तरे बढताहे अपणा दोस्त साधर्मी ओर जातिमें आगेवान बडा पुत्र जिसके नही होय एसी बहिन इतनोका जरूर पोषण करणा जो पुरष मनमें बडपन रखवा चाहे वो सारथीका कांम पराइ चीज खरीदणी ओर वेचणी अपने कुलके अनुचित कांम नही करणा महाभारत ग्रंथमे लिखाहे मनुष्यकूं ब्रह्म मुहुर्त्तमें उठणा धर्म अर्थका विचार करणा सूर्यकूं उदय होते अस्त होते ओर किसी वखतभी देखणा नही दिनकूं उत्तरकी तरफ रातकूं दक्षिणकी तरफ मूं करके दिसा जंगल जाणा अगर कुछ हरकत होय तो चाहे जिधर मुखकरके जंगल जाणा आचमनादि करके देवपूजा कर गुरुकूं वंदना करके साधू सुपात्रोकों दान देकर भोजन करणा जो भोजन घरमें होय वो पहली देव जिनराजके सांमने धरणा फेर भूख लगणेसें भोजन करणा कारण भोजनका कोइ वखत शास्त्रकारोनें

नहि लिखाहे इतना तो जरूरहे एकवार जी
मकर पहरज्ञरमें डुसरा खाणा नहीजर दोपह
लांघणा नही अर्थात् पांच घंटा आगले ज्ञोज
नकूं हो चुके तव डुसरा खाणा ये मर्यादा क्रि
नकीहे रातकूं ज्ञोजन सर्वथा मनाहे इसवास्त
दिनके पहले पहरमें ज्ञोजन करणा नहीं दोपह
वीताणा नही सुपात्रोकों दान देणेकी विधि
इस मुजबहे सुपात्रकूं निमंत्रकर ज्ञोजनकी व
खत घरपर लाणा अथवा आते मुनिराजकूं देख
उनोके सांमने जाणा वंदना करणा फेर क्षेत्र
संवेगका ज्ञावितहे या अज्ञावितहे काल सुभिक्ष
हे या डुर्भिक्षहे दांन देणेकी वस्तु सुलज्ञहे य
डुर्लज्ञहे तेसेंइ पात्र आचार्यहे या उपाध्याय
गीतार्थ तपस्वी बाल वृद्ध रोगी समर्थहे या
असमर्थहे एसा दिलमें विचार करणा जर ह-
रीफाई बमाइ इर्ष्या प्रीति लज्जा जर चतुराइ
डुसरे लोक दांन देतेहे इसवास्ते मुजेज्ञी वे-
साही करणा एसी इच्छा उपगारका बदला उ-
तारणेकी इच्छा कपट विलंब अनादर कमवा बो-
लणा देकर पिछताणा इत्यादिक दांनके दोषणहे
फकत अपणा जीवका ज्ञला चाहता हुवा दोष-
रहित अन्नपान वस्त्र वगेरे वस्तुं अपणी अपणे

हाथसें अथवा आप खमा रहके स्त्री वगेरोके पाससें दिलावे जैनमुनिके आहार संबंधी ब-यालीस दोषण टालणेके पिंम विशुद्धि वगेरे ग्रंथोसें जांणना दांन दीयां पीछे मुनिराजकूं वंदन करके उनोंकों दरवाजेतक पोहचाणे जा-णा मुनिराजका योग नहि होय तो बहुल वि-गर वृष्टिमाफक साधूउंके आणेकी राह देखणी शुद्ध श्रावक साधूकुं दांन दिये विगर कोइनी चीज नहि खातेहे मुनिराजका निर्वाह डुसरी रीतसें होता होय तो अशुद्ध आहार लेणे उंर देणेवालेकूं हितकारी नही उंर कुसमयमें जो निर्वाह नही होवे तो आतुरके दृष्टांतसें अशुद्ध आहार दोनोंकों हितकारीहे नगवती सूत्रके लिखे मुजब रस्ते चलणेसें थके हुये रोगी लोच करे हुये एसे आगम शूद्ध वस्तुका लेणेवाला साधूकूं उत्तर पारणेके विषे दांन दीया होय तो उस दांनसें बहोत फल मिलताहे सुपात्र दांनसें देवके तथा मनुष्यादिकोका सुख तथा समृद्धि होतीहे चक्रवर्त्ति आदि पद मि-लताहे अंतमें थोमे समयमें निर्वाण सुख मि-लताहे अजय दांन १ उंर सुपात्र दांन २ अ-नुकंपादान ३ उचितदांन ४ कीर्त्तिदांन ५ पहृ-

जीमाणा साधर्मीभी पात्र कहलाताहे साधर्मी वात्सल्यका बडा लाभ शास्त्रोमें तीर्थंकर महाराजने बयान कीयाहे तेसें दुसरे भिक्षारी लोकोकूं दांन देणा निरासकर पीछा निकालणा नही कर्मबंध तेसें धर्मकी हीलणा नहि कराणी अपणा मन निर्दय नहि करणा जीमणाके वखत दरवाजा बंध करणा ये गृहस्थ सत्पुरषोका लक्षण नही धनवानकूं तो निश्चेही अन्नभंडार होणा क्योंके अपणा पेट कोण नही भरताहे लेकिन् बहोत जीवोंकी प्रतिपाल करे पुरष वोही गिणे जाताहे इसतरे दीन दुखियोंको अनुकंपा दांन देकर पीछे जीमणा जिनेश्वरदेव श्रावककूं अनुकंपा दांन मना कीया नहीं भगवतीमे श्रावकके वर्णनमें अवंगु अदुवारा लिखाहे भवसमुद्रमे डूबते हुये जीवोके समुदायकूं दुखसें हेरान हुयेकूं न्यातकी जातकी तथा धर्मकी तफावत दिलमें नहि रखकर द्रव्यसें तो अन्नादिक भावसें सद्धर्मके रस्ते लगाकर यथाशक्ति अनुकंपा करणी तीर्थंकर महाराज संशारसे विरक्त भावना लाये बाद दीन दुखीयोके उद्धार करणेकूं संवत्सरी दांन देतेहें एक वर्षतक फेर संजम लेलेहे प्रदेसी

लीके दो दानोसें मुक्ति ओर सुखसंपदा मिल
तीहे ओर तीन दानोसें फकत सुखसंपदा मि-
लतीहे सुपात्रका लक्षण इस तरेसेहें उत्तम
पात्र साधू जोकी सर्व संगका त्यागी शुद्ध उप-
देशक मध्यम पात्र श्रावक साधर्मी ओर जघ-
न्यपात्र अविरति सम्यक्दृष्टी सास्त्रांतरोमें लि-
खाहे हजारो मिथ्या दृष्टीसें एक थोमी श्रद्धा-
वाला सम्यक् दृष्टी अच्छाहे ओर हजारो संक्षे-
प श्रद्धावंतसें एकवारे व्रतधारी श्रावक श्रेष्टहे
हजारवारे व्रतधारीसें एक मुनिराज श्रेष्ठहे ओर
हजार मुनिराजोसें एक तत्वज्ञानी श्रेष्टहे त-
त्वज्ञानी जेसा पात्र हुया न होगा सत्पात्र बमी
श्रद्धा योग्य काल उचित एसी देणेकी वस्तु
एसें धर्म साधनकी सामग्री बमे पुन्यसें प्राप्ति
होतीहे ओंचढाणी १ नजर करमी करणी २
अंतर्वृत्ति रखणी ३ मूं फेर लेणा ४ मोन क-
रणा ५ देणेमें देरी करणी ६ ये बाते नाकारा
करणेका चिन्हहे आंखमें आनंदके आंसू १ रू-
वमे होणा २ बहुमांन ३ प्रियवचन ४ अनुमो-
दन ५ ए पांच दानका नूपण कहलाताहे इत्या-
देक संक्षेपसें दानविधी कही तेसेंइ ओजनकी
त साधर्मी आवे तो उसकूंनी यथाशक्ति

जीमाणा साधर्मीजी पात्र कहलाताहे साधर्मी वात्सल्यका बमा लाभ शास्त्रोमें तीर्थंकर महाराजने बयान कीयाहे तेसें डुसरे भिक्षारी लोकोकूं दांन देणा निरासकर पीछा निकालणा नही कर्मबंध तेसें धर्मकी हीलणा नहि कराणी अपणा मन निर्दय नहि करणा जीमणके वखत दरवाजा बंध करणा ये गृहस्थ सत्पुरषोका लक्षण नही धनवानकूं तो निश्चेही अन्नगद्धार होणा क्योंके अपणा पेट कोण नही भरताहे लेकिन् बहोत जीवोंकी प्रतिपाल करे पुरष वोही गिणे जाताहे इसतरे दीन डुखियोंकों अनुकंपा दांन देकर पीछे जीमणा जिनेश्वरदेव श्रावककूं अनुकंपा दांन मना कीया नहीं भगवतीमे श्रावकके वर्णनमें अवंगु अडुवारा लिखाहे भवसमुद्रमे डूबते हुये जीवोके समुदायकूं डुखसें हेरान हुयेकूं न्यातकी जातकी तथा धर्मकी तफावत दिलमें नहि रखकर द्रव्यसें तो अन्नादिक भावसें सद्धर्मके रस्ते लगाकर यथाशक्ति अनुकंपा करणी तीर्थंकर महाराज संशारसे विरक्त भावना लाये वाद दीन डुखीयोके उद्धार करणेकूं संवत्सरी दांन देतेहें एक वर्षतक फेर संजम लेतेहे भदेसी

राजा केसी कुमारके उपदेससे नास्तिक मत त्याग जैनधर्मका उत्कृष्ट श्रावक बणेवाद दांन साला दीन हीन पंथी श्रमण माहणोके वास्ते केशी गण धरके उपदेससें कराइ ये अधिकार राजप्रष्णी सूत्रमेंहे विक्रमराजा लोकोका ऋण उतारकर संवत चलाया एसेंही शालिवाहन जैनधर्मरूपी सक चलाया लोकोकी आपदा काटणेसें बमी फलप्राप्ति होतीहे चेलोकी परिक्षा विनयउपरसें मालम पमतीहे सुनटोकी परिक्षा होणेसें मित्रकी परिक्षा आपदाका प्रसं-ग आणेसें उंर दानेश्वरीकी परीक्षा काल पम-णेपर मालम देतीहे हमारे विद्यमांनमें बीकानेर मारवामें डुकाल पमा सं० १९-५६का जिसमे नग्रसेठ चांद मलढढ्ढा वगेरे उंसवाल गोत्री तेसेंइ नागा दम्माणी प्रमुख माहेश्वर गोत्रीयोने राजेंद्र गंगासिंह बहाडुरकी प्रेरणासे लाखो रुपयेका अनाज कंगालोको दांन दीया तेसें दांन बुद्धि रखणी तेसें माता पिता नाइ बहेन लमका लमकी उंरत नोकर रोगी केदी लोक गाय वगेरे जांनवरोकूं यथायोग्य नोजन कराके पंचपरमेष्टीका ध्यांनकर पच्चखाणका उपयोग रखकर आपकी तासीरकूं माने एसा नोजन

करणा आहार पाणी वगेरे वस्तु स्वभावसेंही दुष्ट ओर खराब होय तोभी किसी २ कूं माफगत आताहे उसकूं साम्य कहतेहे जन्मसें लेकर जहर खाणेकी टेंम पटकी होय तो उस अदमीकूं जहरभी अमृत होजाताहे ओर अमृतभी अगर कभी नहि खाया होय तो वो जहर माफक होताहे इसवास्ते पथ्य चीज नही सदे तोभी खाणा चहीये कुपथ्य चीज सदे तोभी नही खाणा ताकतवर अदमीकूं सब चीज हितकारी होतीहे एसा समझके कालकूट जहर नहि खाणा जहर शास्त्रका जांणकारभी कोइ वखत जहर खाणेसें मरजाताहे जेसें के तेरूकी रांभ होतीहे गलेके नीचे उतरे सो सब असन कहलाताहे इसवास्ते क्षणभरके सुखकेवास्ते जीभका लालची नहि होणा इसवास्ते अभक्ष्य अनंतकाय ओर बहुत पापकारी बहु बीजवस्तुका खाणा छोडणा क्योंके रोगका मूल रसहे भावप्रकाशमें लिखाहे बहुत सागपात रोगकारीहे अभक्ष अनंत कायका विचार जैन तत्वादर्श भाषाग्रंथसे जांण लेणा पापका मूल लोभहे दुखका मूल स्नेहहे रोगका मूल रसहे इन तीनोका छोडणेवाला सुखी होताहे.

अपणी अग्नि बलमाफक प्रमांणसर भोजन करणा बहोत भोजन करणेसें उलटी दस्त हेजा वगेरे रोग होताहे जीमकर सो कदम टहलणा अध कच्चा अन्न नहि खाणा जीमकर अन्न पचणेकूं मावी करवट पावघंटा सोणा अध घंटा चित्ता सोणा ताकत वधणेकूं निद्रा लेणा नही दिनकूं कभी हमेस फिरणे घिरणेकी मेहनत करणेवाला देरी नहि रखतां मलमूत्रका त्याग करणेवाला उंरतोसें वचके रहणेवाला एसे पुरषोके रोग नहि होताहे बिलकुल प्रभातसमें सदन त्रिकाल संझ्याकी वखत अथवा रातकूं तथा रस्ता चलते भोजन नही करणा भोजन करती वखत अन्नकी निंदा नहि करणी मावे पगपर हाथ नहि रखणा एक हाथमे खाणेकी चीज लेकर डुसरे हाथसें नही खाणा उघामी जगेमें धूपमें अंधारेमे दरखतके नीचे भोजन नहीकरणा भोजन करती वखत तर्जनी अंगूठेके पास वाली टालनी नहि वस्त्र उंर पग धोया बना नंगा होकर मेला वस्त्र पहरकर एक धोती पहरकर भीगा वस्त्र लपेटकर अपवित्र शरीरसें अतिशय जीभकी लोलपता इत्यादिक प्रकारसें भोजन नही करणा पगोमें जूता पहरा

हुवा चित्त ठिकाणे रखे विगर केवल जमीनपर अथवा पिलंगपर बेठकर खूणेमे बेठके दक्षिण दिसामे मूं करके तेसें पतले आसनपर बेठके इत्यादिक प्रकारसें भोजन नहि करणा आसनपर पग रखकर कुत्तेकी चंमालकी उंर नीच अदमीकी जहां नजर पम्ती होय एसी जगे भोजन नही करणा फूटे वरतणमें मलीन पात्रमें अपवित्र वस्तुसें उत्पन्न गर्नहत्या करणेवालाका स्पर्शा हुवा गाय कुत्ता पक्षीयोका सूंघा हुवा जिंस चीजकी खबर नही के ये कहांसें आई हे जिस चीजकूं आप पहचाणे नही एक वेर रांधे हुवेकुं उवारा गरम कीया होय ए इत्यादिक वस्तुका भोजन नहि करणा जीमते वखत वच २ शब्द वांकातिरछा मूं नही करता अपणे इष्टदेवका नांम लेणा उत्तम हाथोसें जीव जयणासें बणाया गया जीमणा स्वर वहते हुये मौन करके भोजन करणा शरीर वांका तिरछा नहि रखणा खाणेकी सब चीज सूंघके फेर खाणी जिस्सें नजर दोष टलताहे बहोत खारा बहोत खट्टा बहोत गरमागरम बहोत ठंमा अन्न नही खाणा शाक बहोत नही खाणा बहोत मीठी चीजभी नहि खाणी अत्यंत रु-

चिकारीनी चीज नहि खाणी ज्यादा गरम रस ताकतका नास करेहे वहोत खट्टा इंद्रियोंकी शक्ति तथा वीर्यकूं हीन करताहे अतिसय खारा आंखोंकों विकार करेहे वहोत चिकणा गृहणी आंत ढठी कला हाजमा बिगारेहे कफकूं करुवा उर तीखे रससें जीतणा पित्तकूं मीठे खट्टा मंदरससे जीतणा वायूकूं चिकणा उर गरम रससें जीतणा अजीर्णादि सन्निपातादि बाकी रोगोंकूं उपवाससें जीतणा घीके संग करनी वस्तु पहली खावे मीठा रस वगेरे दूध वगेरे वलिष्ट वस्तु नित्य खावे दाहकारी वस्तु नही खावे बहोत जल नही पीवे खाया हुवा पचे वाद भोजन करे पहली मीठा बीचमे तीखा अंतमे करुवा रस खावे जलदी नहि करता हुवा मीठा उर चीकणा रस खावे बीचमे पतला खट्टा उर खारा खावे अंतमे करुवा तीखा रस खावे भोजनकी सरूआतमे जल पीवे तो अग्नि मंद होवे बीचमे पीवे तो रसायण मुजब अंतमे पीवे तो विष माफक नुकशांन करे जीमे बाद एक कुरला मूं साफ करणेकूं जरूर पीणा दटके जीमणा नही भोजन करके भीजा हाथ नेत्र रोगी टालके आंख गालके वाये हाथके नही

लगाणा कल्याणकेवास्ते दोनों गोडोके स्पर्श करणा भोजन करके दो घंटेतक स्त्री संग नहि करणा दोडणा वगेरे खेचल नहि करणा शरीर मर्दन पगचंपी करवाणा नही भार उठाणा बेसणा अथवा स्नान भोजन करके नहि करणा भोजनकर बेठणा नहि बेठे तो मेदवृद्धिसें पेट चूतडभारी होजाताहे सुश्रावक निर्वद्य निर्जीव उंर परित्त मिश्र इससें अपणा निर्वाह करतेहे जीमते बूंद या अनाजका दाणा नही गिरावे मन वचन कायाकी गुप्ती रखके भोजन करे विवेकी देव गुरु नगरका मालक तथा स्वजनमे शंकट पडे तो छती शक्ति भोजन नहि करे सूर्यचंद्रका गृहण लगे तब भोजन करणा नही अजीर्ण नेत्ररोगमें भोजन नहि करणा तावकी सरूआतमे लंघन शक्ति माफक करणा वायूसें थकेलेसें क्रोधसें शोकसें कामसें जो ज्वर चढे अथवा चोटसे उसमे लंघण नहि करणा तीर्थ वंदनमें आठम चोदसकूं बडे पर्वके दिन भोजन नही करणा तपस्यासें अनेक कार्य सिद्ध होताहे चक्रवर्त्ति नारायणभी तपस्यासें देव आराधतेहे भोजनकर दांत साफ कर नवकारस मरणकर उठे तथा गुरुकूं तथा देवकूं चैत्य बं-

दनविधिसें वांदे गीतार्थसे मुनिसे अथवा सिध
पुत्रसें अथवा गीतार्थ श्रावकसे वांचे पूछे पढ्या
हुवा याद करे धर्मकथा सुणे अथवा कहे मनमे
सूत्रार्थ विचारे ये पांच प्रकारका स्वाध्याय करे
शास्त्रोका रहस्य विचारणा सांजकुं पापका आ
लोचनारूप प्रतिक्रमण सामायक संयुक्त करे
फेर जिन मंदिर जाकर आरती धूपादिक करके
परमात्मा श्री तीर्थकरोका गुण गावे रात्रीकूं
च्यारोंही सरण लेकर सब जीवोंकों खमायकर
सागारी अणसण लेकर देवगुरुका समरण करे
जतनके साथ शयन करे श्रावकके तीन मनो-
रथहे सो करे अनित्यादिक बारे भावना भावे
पिछली रात्रिका जब नींद उघजाय तब अना-
दिकालकी अभ्यासरूप दुर्जय काम रागकूं
जीतणेकूं स्त्रीके शरीरका अशुचि गलीचपणा
विचारे जेसें थूलभद्रस्वामी जंबूस्वामी सुदर्शन
सेठ वगेरोने जेसें दुष्कर शील पाला उर मन
वस कीया क्रोधादिक कषाय जीतणेकूं जो जो
उपाय कीया शंसारअसार बडा विषम एसें
मनोरथ करणा स्त्रीका शरीर अपवित्र निंद
नीक चामडी हाड मींजी आंतरचा चरबी खून
मांस पेसाब विष्टा वगेरे गलीच वस्तुसें भरा

हुवा इसकूं तूं क्या अच्छा समझताहे अरे जीव विष्टा वगेरे गलीच चीजकूं देखके, जेसें तूं थू थू करताहे ओर नाक चढाताहे तो फिर हे मूर्ख एसे स्त्रीकी सरीरकी क्या इच्छा करताहे विष्टाकी थेली कीडोकी नरी कपटपण चपलाइ ओर जूठसें जो पुरषोकूं ठगतीहे एसी स्त्रीका हावनाव ओर बहारकी सफाइ देख जो मनुष्य मोहके वस ओरतकूं नोगतेहें उसकरके नरकप्राप्ती होतीहे जरूर काम देव जगत लोककूं जीतणे-वालाहे तथापि मनकूं संकल्पसें वर्जे तो सह-जमें काम जीतणेमें आताहे जो जीव जगतमें पूज्य होगये वेनी अपणे जेसेही आदमी थे लेकिन् क्रोध मांन माया लोनकूं त्यागणेका उद्यम कीया तब थोडेही कालमे ईश्वर सिद्ध होगये वाकी सत्पुरष पैदा होणेका कोइ अला-यदा क्षेत्र नहीहे इंद्रियां वगेरे वस्तु तो मनुष्य-के स्वनाव करके प्राप्तहे तेसें साधूपणा मिलणा सहजसें नही लेकिन् गुणोकों धारण करणे-वाला साधू कहलाताहे उद्यम करणेसें गुणोकी प्राप्ति होतीहे कोरा उत्तम जातिवाला हुवा तो क्या हुवा रोहीडेके पुष्पकी तरे देखणे मात्र हो-ताहे वनमें पेदा हुये खसबोदार पुष्पकों लोक

वृहत्गच्छखरतरविटप मुनिश्रावकपतफूल ॥
नट्टारकयुगवरप्रवर ॥ कीर्तिसूरिजिनमूल ॥ ५ ॥
शाखाकीर्तिक्षेमकी अतिपसरीनरपूर ॥
अगणितजपसफलगुणी प्रगटेपुन्यपमूर ॥ ६ ॥
धर्मशीलगुरुमिष्टरस पल्लवकुशलनिधान ॥
रसनातारसकरप्रगट कितलगकरेवखान ॥ ७ ॥
गुरुगुणसरससुधानिधी ॥ पानकरणजलचाय ॥
शुरसममोमनपीनअति नयोविचक्षणराय ॥ ८ ॥
परउपगारविचारकर निजआतमअविकार ॥
पाठकपदधारकरुचिर विरचतगणिःऋद्धिसार॥९॥

इति श्रीश्रावगव्यवहारालंकारग्रंथउपाध्याय
श्रीरामलालजीयुक्तिवारिधिःकृतसंपूर्ण ॥

॥ अथ भावश्रावकके लक्षण लिख्यते ॥

सतरे लक्षणवाला भावश्रावक होताहे सो संक्षेपसें लिखताहूं १ अनर्थकूं पेदा करणेवाली चंचल चित्तवाली दुर्गुणगारी नरक जाणेके रस्ते जेसी स्त्रीकूं जाणके अपणे जीवका भला चाहता हुवा उसके वशमें नही रहे २ इंद्रीयांरूप चंचल घोडे हमेसां दुर्गतिके रस्ते दोडतेहे इसवास्ते शंसारका यथार्थ स्वरूप जांणणेवाला श्रावक सम्यक् ज्ञानकी लगामसें इंद्रियोकूं खोटे रस्ते नही जाणे देणा ३ सब अनर्थका तथा प्रयासका क्लेसका कारण उर असार एसा धनकूं जाणकर बुद्धिमांन पुरष थोडाही धनका लोभ नहि करे ४ संसार आप दुखरूप दुखका फल देणेवाला परिणाम याने आगेभी दुखदाई विटंबनारूप एसा जांण उसमें प्रीति रखके मुरझाणा नही ५ जहर जेसा विषय क्षणमात्र सुख देणेवाला एसा विचार हमेसां करणेवाला संसार प्रपंचसे डरणेवाला सर्वज्ञ कथित तत्वका जांणकार उन विषयोकी इच्छा नहि करे ६ तीव्र आरंभ छोडे निर्वाह नहि होता दीखे तोभी सर्व जीवपर दया रखता हुवा गुजरान माफक थोडा आरंभ करे उर

बिलकुल आरंभसे रहित एसें मुनिजनोकी स्तवना करता रहे ७ गृहस्थावासकूं बेमी जंर फास समान गिणता दिलके ऊपर कर डुरक करके रहे जंर चारित्र मोहनी कर्म खपाणेके उद्यममें रहे ८ बुद्धिमांन पुरष मनमें गुरुभक्ति जंर धर्मकी श्रद्धा रखकर धर्मकी प्रभावणा प्रशंसा इत्यादिक करता हुवा निर्मल सम्यक्त पाले ए विवेकसें चलणेवाला धीर पुरप साधारण मनुष्योंकूं अण समजपणेकर गामरी प्रवाह चलणेवाला समजे ज्ञानशुन्य किसी भाग्यवानकूं कोइ धर्मादि कर्त्तव्य करता देखे उस मुजब तत्वज्ञानरहित हीया शून्यपणे करतेहे एसा समज बुद्धिवंत लोक संज्ञाका त्याग करे १० एक जिनागम स्यादवाद् न्याय टाल डुसरा यथार्थ नही जंर डुसरे शास्त्र मोक्षका रास्ता नही एसा जांणकर सर्वक्रिया अनुष्ठांन जिनागमके अनुसार करे ११ अपणे जीवकी शक्तिकूं नही छिपाता हुवा जेसें संसारके बहोतसे कामकाज करताहे तेसेंइ अपणी हिम्मत नहि हारता हुवा दानशील तपभावना प्रमुख च्यार प्रकारके धर्मकूं जेसें आत्माकूं पीमा नही होय एसी तरे आदरे १२ चिंतामणी रत्नकी तरे डुर्लभ एसी

हितकारी उंर निरवद्य धर्मक्रिया पायकर अच्छी तरे आचरणा करता हुवा एसा आपणेकूं करते हुवेकूं देखके अज्ञानी लोक अपणेकूं हसे तोभी उनोके हसणेसें मनमें लज्या लाणी नहीं १३ देह स्थिति रक्षाका मूलकारण धन स्वजन आहार उंर घर इत्यादिक शंशारगत चीजोके ऊपर रागद्वेप नहि रखता हुवा संसारमें रहे १४ अपणाँ हित चाहता हुवा मध्यस्थपणेमें रहकर नित्य मनमें समताका विचार रखता हुवा रागद्वेषके वस नहि होणा कदा ग्रहकूं सर्वथा छोरुदे १५ हमेसां दिलमें सब चीजोकी क्षणभंगुरताका विचारकर धनवान होकरकेभी धर्मकृत्यमें हरकत होय एसा उनोका संबंध नहि रखवे १६ संसारसें विरक्त हुवा श्रावक भोग उपभोगकी चीजोसें तृप्ति होती नही एसा विचार करता हुवा भरतके आग्रहसें कांम भोगसेवें जेसें ज्वरके पीडामें कुटकी चिरायता आदि खारा द्रव्य दिलमें नहि रुचे तथापि रोग मिटाणेकूं प्राणी खाताहै तेसें काम रोगकी शांति करे १७ वेस्या जो कसबण उसकी तरे आशंसा रहित श्रावक आज अथवा कल छोरुदूंगा एसा विचार करता पराई चीजके माफक

ढूखे परणामोसें घरवास पाले एसे ये सतरे गुणोकरके जो युक्त सो जिनागममें भाव श्रावक कहताहे एसा परिणामोवाला भाव श्रावक शुभ-कर्मके योगसें जलदी भाव साधूपणा पाताहे इसतरे धर्म रत्नशास्त्रमें लिखाहे ॥

इति श्री श्रावकव्यवहारालंकारग्रंथे भावश्रा-वकलक्षणसंपूर्ण ॥ जैनधर्ममें मूं वंधोके पंथवाले कहतेहे दो हजार वर्षका भस्मग्रह वीरप्रभूके जन्मराशिपर बेठाथा सो दो हजार वर्षतक जैन धर्मका उदय पूजा सत्कार नही भया वह ग्रह उतरा उर हम प्रगटे सो जैनका उद्योत भया उत्तर भस्मगृह भगवानके रासिपर आ-याथा सो उनोके शंतानोका उदय पूजा सत्का-र कम पमा था जब वह उतरा तब भगवानके शंतान जती साधूउंकी पूजा सत्कार उर धर्मो-द्योत भया खरतर गच्छी श्री जिन चंद्रसूरिः तपाहीरविजयसूरिः ज्ञांनविमलसूरिः विजयदां-नसूरि सं १६ से विक्रमके क्रिया उद्धार करा जिनोने अकब्बरसें उपदेस कर जैन तीर्थकी रक्षा करी अमारि उदघोपणा हिंन्दमे फिरवाइ इसवास्ते जिसकूं रोग होताहे रोगकी मुदत पोहचणेसें वोही आराम होताहे सो भया

नगवांनने कहाथा मेरे चेलोंका उदय पूजा सत्कार दो सहस्र वर्षतक नही होगा लेकिन एसा नही कहा के एक गुरु विगरका लूंपक पंथ ढूंढक होंगे उनोकी पूजा होगी तीनसे तेतीस वर्षका फेर जन्मरासिपर धूम्रकेतु ग्रह वेठा उसके प्रताप जैनधर्मकूं मलीन करणेकूं मूर्तिनिंदक शास्त्रोत्थापक महानिन्हववाईसगोष्ठि व्यवंगचूलियासूत्रमें लिखा सो तुम नये ॥ ॥

नीचे लीखे हुवे पुस्तक हमारे याहां मिलते हैं.

हिंदुस्थानी भाषाके ग्रंथ.

नाम.	किंमत.
१ करुणा बत्तिसी, दादासाहेबपूजा	०–४
२ सोळे चाणक्य, शकुनावली स्वरोदय	१–०
३ मूर्तिमंडनका सिद्धमूर्ति विवेकविलास	०–८
४ पूजामहोदधि–गायनरूप ३७ पूजा	४–०
५ श्रावक व्यवहारालंकार	१–८

ग्रंथ छपते हैं.

१ श्रीपालचरित्र	१–८
२ धर्म्मरत्नसमुच्चय—जिस्में पंचप्रति क्रमणसूत्र विधि समेत, थुई चैत्य वंदन, बडे स्तवन, सिज्झाय, छोटे स्तवन, पूजा सर्व तपस्या विधि, श्रावकके नित्य कर्तव्य इत्यादिक अनेक संग्रहों समेत फेर जीव विचार, नवतत्व, दंडक अर्थ समेत छपताहै	५–०

नीचे लीखे हुवे पुस्तक हमारे याहां मिलते हैं.

हिंदुस्थानी भाषाके ग्रंथ.

नाम.	किंमत.
१ करुणा बत्तिसी, दादासाहेबपूजा	०–४
२ सोळे चाणक्य, शकुनावली स्वरोदय	१–०
३ मूर्तिमंडनका सिद्धमूर्ति विवेकविलास	०–८
४ पूजामहोदधि–गायनरूप ३७ पूजा	४–०
५ श्रावक व्यवहारालंकार	१–८

ग्रंथ छपते हैं.

१ श्रीपालचरित्र	१–८
२ धर्म्मरत्नसमुच्चय—जिस्में पंचप्रति क्रमणसूत्र विधि समेत, थुई चैत्य वंदन, बडे स्तवन, सिज्झाय, छोटे स्तवन, पूजा सर्व तपस्या विधि, श्रावकके नित्य कर्तव्य इत्यादिक अनेक संग्रहों समेत फेर जीव विचार, नवतत्व, दंडक अर्थ समेत छपताहै	५–०